तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 3, फरवरी 2021, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020

उज्ज्वल भविष्य का स्वर्णिम द्वार

वसंत पंचमी (16 फरवरी) पर विशेष

मात-शारदे ज्ञान दीजिए...

माँ-वाणी का दिन है आया।
कुदरत ने भी रास रचाया।
सरसों झूम रही खेतों में,
वासंती यह न्यारी माया।।

विद्या-देवी को हम ध्याएँ।
आगे-आगे बढ़ते जाएँ।
शब्द-सुरों की करें साधना,
माँ-वाणी को शीश नवाएँ।।

हे माँ! सबको पार उतारो।
कला हमारी आप निखारो।
मात-शारदे ज्ञान दीजिए,
शब्द-साधना आप सँवारो।।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी, रेवाड़ी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

फरवरी 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
नितिन कुमार यादव
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s VIBA Press (P) Ltd. at its printing press C-66/3, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> समस्या यह नहीं है कि सभी मतभेदों को कैसे मिटाया जाए, बल्कि यह है कि सभी मतभेदों के रहते हुए एकजुट कैसे हुआ जाए।
>
> -रवीन्द्रनाथ टैगोर

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वॉट टु थिंक नहीं, हाउ टु थिंक पर बल : प्रधानमंत्री 5
- नीति के मूल में दिख रहा है अन्त्योदय दर्शन 7
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक 15
- नई शिक्षा नीति से सँवरेगी पूर्व प्राथमिक शिक्षा 18
- खुलने लगे स्कूल, हो न जाये भूल 20
- कीर्तिमान रचता सौंगल विद्यालय 22
- चित्रभाषा: स्मार्ट शिक्षण कला 24
- जुड़वाँ भाइयों ने हासिल की चित्रकला में महारत 25
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- शिक्षिका की डायरी का एक पन्ना 30
- नव वर्ष में नव संकल्प 31
- Food Wastage in Indian Weddings .. 32
- Improving the Vocational Awareness among... 34
- Compendium of Academic Courses After +2 39
- Homeward Bound 44
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

वैश्विक परिदृश्य आधारित शिक्षा नीति

काल कोई भी रहा हो, ज्ञान का महत्त्व सदैव रहा है। वर्तमान शताब्दी तो ज्ञान की शताब्दी है। आज वही सफल है जो अपने ज्ञान का लोहा मनवाने में सफल है। ऐसे लोग ही किसी देश के असली संसाधन हैं। यह स्वयं सिद्ध है कि किसी देश का विकास वहाँ की शिक्षा-व्यवस्था पर निर्भर करता है। अतएव तेज़ी से बदलते वैश्विक स्तर के अनुरूप शिक्षा-नीति में बदलाव लाना भी वक्त की माँग बन गया था।

देश की शिक्षा नीति में परिवर्तन को 35 वर्षों के उपरांत स्वीकृति मिली है। यह परिवर्तन प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में किया गया है। इस नीति के आने से देश और समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावना को देखा जा रहा है। पाठ्यक्रम से आगे जाकर विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक सोच को विकसित करने पर बल दिया गया है। विशेष संकाय चुनने के दबाव को समाप्त किया गया है। आरंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को वोकेशनल एक्सपोजर देने से युवा ज़िंदगी के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो सकेंगे। साथ ही देश में ही मनपसंद रोज़गार पाने में सक्षम बनेंगे।

प्रदेश ने इस दिशा में तैयारियाँ आरंभ कर दी हैं। इसके लिए गठित विभिन्न कमेटियाँ तेज़ी से अपना कार्य कर रही हैं। नई शिक्षा नीति व प्रदेश की तैयारियों की विशद जानकारी प्रस्तुत अंक के माध्यम से दी जा रही है। आइये पूरे मन से इस नीति का स्वागत करें।

'शिक्षा सारथी' आपकी शिक्षण यात्रा में सदैव आपके साथ है। आपके विचारों, नवाचारों व प्रतिक्रियाओं की हमेशा हमें प्रतीक्षा रहती है।

-संपादक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वॉट टु थिंक नहीं, हाउ टु थिंक पर बल : प्रधानमंत्री

डॉ. प्रदीप राठौर

अब तक की शिक्षा नीति 'वॉट टु थिंक' पर आधारित थी, लेकिन नई शिक्षा नीति में 'हाउ टु थिंक' पर बल दिया जाएगा। 21वीं सदी के भारत से पूरी दुनिया को बहुत अपेक्षाएँ हैं। भारत में सामर्थ्य है कि वो टैलेंट और टेक्नोलॉजी का समाधान पूरी दुनिया को दे सकता है। नई शिक्षा नीति इस जिम्मेदारी को भी प्रतिपादित करती है।' प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षा मंत्रालय द्वारा बीते दिनों आयोजित कॉन्क्लेव के उद्घाटन भाषण में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर बोलते हुए यह कहा। कॉन्क्लेव में वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये पीएम मोदी ने संबोधित करते हुए आगे कहा कि यह शिक्षा नीति 21वीं सदी के नए भारत की नींव तैयार करने वाली है। इसमें भेड़चाल के लिए कोई जगह नहीं होगी।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति आने के बाद देश के किसी भी क्षेत्र से, किसी भी वर्ग से यह बात नहीं उठी कि इसमें किसी तरह का पक्षपात हुआ है या यह नीति किसी एक ओर झुकी हुई है। हर देश अपनी शिक्षा व्यवस्था को अपने राष्ट्रीय मूल्यों के साथ जोड़ते हुए, अपने राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुसार सुधार करता है। जिसका उद्देश्य होता है देश की बेहतरीन शिक्षा व्यवस्था द्वारा वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को भविष्य के लिए तैयार करना।

प्रधानमंत्री के भाषण के मुख्य बिंदु-

1. प्रधानमंत्री ने कहा- जड़ से जग तक, मनुज से मानवता तक, अतीत से आधुनिकता तक इन सभी बिन्दुओं का समावेश करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वरूप तैयार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति सिर्फ सर्कुलर जारी करके, नोटिफाई करके लागू नहीं होगी। इसके लिए मन बनाना होगा, आप सभी को दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी। भारत के वर्तमान और भविष्य को बनाने के लिए आपके लिए यह कार्य एक महायज्ञ की तरह है।

2. बीते अनेक वर्षों से हमारी शिक्षा व्यवस्था में बड़े बदलाव नहीं हुए थे। परिणाम यह हुआ कि हमारे समाज में जिज्ञासा और कल्पना के महत्त्व को आगे बढ़ाने की बजाय भेड़चाल को प्रोत्साहन मिलने लगा था। गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर कहते थे- उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती, बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के साथ सद्भाव में लाती है। निश्चित तौर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति का वृहद लक्ष्य इसी से जुड़ा है। प्रधानमंत्री ने विभिन्न बिंदुओं को अपने वक्तव्य में समाहित किया।

3. इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि बच्चों के घर की बोली और स्कूल में पढ़ाई की भाषा एक ही होने से उनके सीखने की गति बेहतर होती है। यह एक बहुत बड़ी वजह है जिसकी वजह से जहाँ तक संभव हो बच्चों को उनकी मातृभाषा में ही पढ़ाने पर सहमति दी गई है। वर्तमान में हम जिस दौर में हैं, वहाँ इन्फॉर्मेशन और कंटेट की कोई कमी नहीं है। अब कोशिश यह है कि बच्चों को सीखने के लिए इन्क्वायरी बेस्ड, डिस्कवरी बेस्ड, डिस्कशन बेस्ड और एनालिसिस बेस्ड तरीकों पर जोर दिया जाए। इससे बच्चों में सीखने की ललक बढ़ेगी और उनकी कक्षा में भागीदारी भी बढ़ेगी।

4. हर विद्यार्थी को यह अवसर मिलना ही चाहिए कि वह अपने लक्ष्य को फॉलो करे। अपनी सुविधा और जरूरत के हिसाब से किसी डिग्री या कोर्स को कर सके और अगर उसका मन करे, तो छोड़ भी सके। कोई कोर्स करने के बाद स्टूडेंट जब जॉब के लिए जाता है तो उसे पता चलता है कि वो जॉब की रिक्वायरमेंट पूरी नहीं करता है। कई स्टूडेंट्स को अलग-अलग वजहों से बीच में कोर्स छोड़कर जॉब करनी पड़ती है। ऐसी सभी स्थितियों का ख्याल रखते हुए मल्टीपल एंट्री और एग्जिट का विकल्प भी दिया गया है।

5. जब गाँवों में जाएँगे,

किसानों, श्रमिकों, मज़दूरों को काम करते देखेंगे, तभी तो उनके बारे में जान पाएँगे, उन्हें समझ पाएँगे, उनके श्रम का सम्मान करना सीख पाएँगे। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में छात्र शिक्षा और श्रम की गरिमा पर बहुत बल दिया गया है। देश को अच्छे छात्र, अच्छे प्रोफेशनल्स और उत्तम नागरिक देने का बहुत बड़ा माध्यम अध्यापक और प्रोफेसर्स ही हैं। इसलिए नई शिक्षा नीति में शिक्षकों की गरिमा का भी विशेष ध्यान रखा गया है।

6.राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे देश में शिक्षा और शोध के बीच अंतर को खत्म करने में अहम भूमिका निभाने वाली है। जब संस्थानों और इंफ्रास्ट्रक्चर में भी ये बदलाव दिखेंगे तभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अधिक प्रभावी और त्वरित गति से लागू किया जा सकेगा।

7. एक प्रयास यह भी है कि भारत का जो टैलेंट है, वो भारत में ही रहकर आने वाली पीढ़ियों का विकास करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों की ट्रेनिंग पर बहुत जोर है, वो अपने कौशल को लगातार अपडेट करते रहें, इस पर बहुत जोर है। तकनीक ने हमें बहुत तेजी से, बहुत अच्छी तरह से, बहुत कम खर्च में, समाज के आखिरी छोर पर खड़े विद्यार्थी तक पहुँचने का माध्यम दिया है। हमें इसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना है।

कार्यान्वयन के लिए मैपिंग जरूरी-

पीएम ने कहा कि अब इस नीति के कार्यान्वयन पर जोर देने की जरूरत है। उन्होंने कहा राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर लगातार डिस्कशन कीजिए, वेबिनार कीजिए, रणनीति बनाइए, मैपिंग कीजिए, रिसोर्स तय कीजिए। यह एक सर्कुलर नहीं है, यह नीति सर्कुलर जारी करके, नॉटिफाई करके लागू नहीं होगी हम सबको काम करना होगा। दृढ़शक्ति दिखानी होगी। उन्होंने कहा- यह नीति 21वीं सदी में बड़ा बदलाव लाने का एक बड़ा अवसर है। प्रत्येक का योगदान आवश्यक है।मेरा विश्वास है कि साथ मिलकर काम करने से नीति को प्रभावी रूप से लागू करने के अवसर बनेंगे।

शिक्षा मंत्रालय ने आयोजित किया सम्मेलन-

सम्मेलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों पर जोर दिया गया। सम्मेलन में बताया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हो रहे बदलावों के बाद युवाओं को क्या लाभ होगा। इस सम्मेलन का आयोजन मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा किया गया।

केंद्रीय शिक्षामंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने बताया कि नई शिक्षा नीति के लिए सलाह की प्रक्रिया जनवरी 2015 से शुरू की गई थी। चिह्नित किए गए 33 विषयों पर बहुआयामी परामर्श प्रक्रिया में ग्राम से राज्य स्तर तक जमीनी स्तर पर परामर्श हासिल किए गए। लगभग 25 लाख ग्राम पंचायतों, 6600 ब्लॉक, 6000 शहरी स्थानीय निकायों, 676 जिलों और 36 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में एक व्यापक, समयबद्ध परामर्श प्रक्रिया अपनाई गई।

drpradeeprathore@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लाएगी क्रांतिकारी बदलाव

नीति के मूल में दिख रहा है अन्त्योदय दर्शन

प्रमोद कुमार

सभी के लिए शिक्षा का सिद्धांत राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यापक रूप से शामिल किया गया है। लाभ से वंचित वर्ग जिसमें दलित, पिछड़े, बालिकाएँ, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, ग्रामीण, टपरीवास, आदिवासी, ट्रांसजेंडर को अंडर रिप्रेजेंटिड ग्रुप यानी यूआरजी के नाम से सम्बोधित किया गया है। उनके दाखिले, ठहराव तथा अवस्थांतर पर पूरा ध्यान दिया जाएगा। दाखिले के उपरान्त ड्रॉप आउट रेट को शून्य पर लाना और उच्चतर शिक्षा में दाखिला सुनिश्चित करना अनिवार्य बनाने पर बल दिया जाएगा। आउट ऑफ स्कूल और नॉन स्टार्टर की संख्या शून्य हो, इसलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रस्ताव दिया गया है। स्कूल पहुँचने तक निःशुल्क यातायात, साइकिल व्यवस्था तथा सुरक्षा उपलब्ध करवाई जाएगी। भारत सरकार के स्तर पर Gender Inclusion Fund बनाया जाएगा जो राज्यों में बालिका शिक्षा के लिए खर्च किया जाएगा। यूआरजी के बच्चों की शिक्षा आधारित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अध्यापकों, स्कूल मुखिया, परामर्शदाताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

यदि दीनदयाल उपाध्याय जी के अन्तिम व्यक्ति यानि अन्त्योदय की बात करें तो यही वह समूह है जिसे 2019 के ड्राफ्ट में अंडर रिप्रेजेंटिड ग्रुप कहा गया है तथा वर्तमान पॉलिसी में जिसे सामाजिक आर्थिक लाभ से वंचित समूह कहा गया है। सामाजिक आर्थिक रूप से अलाभप्रद समूह के लिए अब न केवल विशेष प्रावधान किए गए हैं अपितु वित्त प्रबन्धन के लिए Gender Inclusion Fund की बात की गई है, स्पेशल एजुकेशन ज़ोन की बात कही गई है। अनुसूचित जाति के, गरीबी रेखा से नीचे के, विधवा के बच्चे, मज़दूर टपरीवास के बच्चे, प्रवासी मज़दूर के बच्चे, दूर दराज़ दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे, अनाथ बच्चे, गम्भीर बीमारियों से ग्रसित बच्चे अक्सर शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं, कई बार शिक्षा समय पर आरम्भ नहीं कर पाते, नॉन स्टार्टर रहते हैं और समय से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं, ड्रॉपआउट हो जाते हैं, स्कूल त्याग कर चले जाते हैं। इनके लिए पॉलिसी में

असमानता की खाई को मिटाएगी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति : राज्यपाल

मुझे विश्वास है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत अनुसंधान, अन्वेषण तथा जीविकोपार्जन से सम्बन्धित अध्ययन कार्य को गति देने के लिए धन की कमी आड़े नहीं आएगी। नई शिक्षा नीति में पहले से ही सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत हिस्सा शिक्षा क्षेत्र के लिए तय किया गया है। ऐसा देश में पहली बार हुआ है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सामाजिक रूप से दबे-कुचले लोगों की शिक्षा के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। इन प्रावधानों को पूरी तरह अमल में लाना हम सब के लिए चुनौती होगी। इसके लिए हमें निजी संस्थानों के साथ बेहतर सामंजस्य करने की जरूरत है। नई शिक्षा नीति के मानदण्डों को अपनाते हुए यदि हम गरीब लोगों के लिए शिक्षा के सामान अवसर जुटा पाएँ तो यह देश के लिए गौरव की बात होगी।

शिक्षातंत्र में शहरी व ग्रामीण शिक्षा की खाई को मिटाना होगा जिससे सभी को शिक्षा के समान अवसर मिलेंगे। देश में समान शिक्षा होगी तो वर्णविहीन समाज होगा और नव भारत का निर्माण होगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कौशल, रोजगार, तकनीकी ज्ञान और विशेषज्ञता को प्राथमिकता दी गई है। इन्हीं सब पैमानों पर खरा उतरने के लिए विश्वविद्यालयों को उद्योगों से जुडना होगा ताकि दोनों संस्था आपस में ताल-मेल कर डिप्लोमा, डिग्री, व्यवसायी कोर्स करवाकर युवाओं को रोचक विषयों व कार्यों में पारंगत कर सकें।

सत्यदेव नारायण आर्य
राज्यपाल, हरियाणा

समुचित प्रबन्ध किए गए हैं।

उच्चतर शिक्षा की बात करें तो वहाँ पर ग्रॉस एनरोलमैंट रेशो यानी जीईआर की स्थिति पहले ही कम है। फिनलैंड की तुलना में एक चौथाई है और यदि यह विद्यार्थी कॉलेज में दाखिला लेता भी है तो सामाजिक आर्थिक कारणों से अधर में शिक्षा छोड़ देता है। आज हमारे चारों ओर कितने ऐसे लोग हैं जिन्होंने स्नातक से पहले ही शिक्षा छोड़ दी।

ड्रॉपआउट कम करना तथा स्कूल उपलब्ध करवाना-

इसके सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट उल्लेख है कि कक्षा पहली में दाखिल होने वाला प्रत्येक विद्यार्थी अनिवार्य शिक्षा पूरी करे, बच्चे स्कूल बीच में न छोड़ें। आज पहली कक्षा में दाखिल बच्चों का 51 प्रतिशत ही कक्षा बारहवीं तक पहुँचता है और अगर बीए पास होने के स्तर को देखा जाए जो हरियाणा जैसे प्रगतिशील राज्य में भी 28 प्रतिशत के आसपास है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पंडित दीनदयाल उपाध्याय के इस अन्तिम व्यक्ति को पुनः शिक्षा से जोड़ने का, अधूरी शिक्षा पूरी करने का अवसर देती है, यही 'अन्त्योदय' है। धनाढ्य वर्ग सक्षम वर्ग का विद्यार्थी अपना स्कूल 3 वर्ष की आयु से आरम्भ करता था और लाभ से वंचित वर्ग का विद्यार्थी 5 से 6 वर्ष में तथा यहीं से एक खाई का जन्म होता था जो आगे चलकर और गहरी हो जाती थी। अब इस पॉलिसी में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान करके दीनदयाल उपाध्याय जी के अन्त्योदय के सपने को साकार करने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक बच्चा पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करे।

विद्यार्थी को इस पूरी प्रक्रिया में शामिल रखना अति आवश्यक समझा गया है क्योंकि पूरी शिक्षा व्यवस्था उन्हीं के लिए बनाई गई है। विद्यार्थियों की सुरक्षा, उनके अधिकार, उनके किशोरावस्था के पेचीदा मामले का बेहतर समाधान करना, लड़कियों के साथ किसी प्रकार के भेदभाव के मामले बिना देरी के समुचित समाधान तक पहुँचाने अनिवार्य हैं। पूरी शिक्षा व्यवस्था भयमुक्त, बाल केन्द्रित, बाल मित्रवत, रुचिकर, सरल, गतिविधि आधारित हो जो केवल अक्षर ज्ञान देने तक सीमित न हो अपितु राष्ट्र के लिए सच्चे, ईमानदार, मेहनती नागरिक तैयार करे तथा जो मानव मूल्यों को गम्भीरता से समझें और संवेदनशीलता से उनकी रक्षा करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में नये पाठ्य का निर्माण उन विद्यार्थियों की मदद करेगा जो स्वरोजगार की ओर जाना चाहते हैं। इसमें कौशलों को समुचित स्थान मिलेगा। इसमें दस्तकार, वास्तुकार, शिल्पकार, रंगरेज, बुनकर, मैकेनिक, राज मिस्त्री, कृषक, बागवान, नाविक, मछली पालक भी अपने कौशलों को स्कूल में आकर बच्चों को देंगे। इसमें श्रम के प्रति सम्मान बढ़ेगा, बच्चों को छोटे काम और बड़े काम की सही व्याख्या समझ आएगी, हीन भावना दूर होगी तथा सीधे-सीधे स्नातक बनने की दौड़ में लगा युवा कौशलों की शिक्षा लेकर रोज़गार से जुड़ेगा, कृषि से जुड़ेगा, लघु कुटीर उद्योग से आंत्रपरन्योर बनेगा

हरियाणा राज्य के 18 से 23 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की संख्या तथा कॉलेज में दाखिल विद्यार्थी

	सभी श्रेणियों से				अनुसूचित जाति		
हरियाणा	कॉलेज में पढ़ रहे युवाओं की संख्या	पुरुष	महिला	जोड़	पुरुष	महिला	जोड़
		57289	471604	928893	67317	67451	134768
	युवाओं की जनसंख्या	1728772	1454774	3183546	367927	306516	674443
भारत में युवाओं की संख्या		19209888	19209888	19209888	18189500	37399388	2835663

और यही तो दीनदयाल उपाध्याय जी की विचारधारा है, यहीं से तो अन्त्योदय का अंकुर फूटेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसी सिद्धांत पर तो बनी है। यहीं से व्यक्ति और कौशल आधारित अर्थव्यवस्था की नींव रखी जाएगी, यहीं से हर हाथ को काम का विचार साकार होगा। बोर्ड परीक्षाओं और मूल्यांकन पद्धति में सुधार होने से विद्यार्थी तोता रटंत से बाहर निकलेगा, तर्क शक्ति, विश्लेषण, मंथन, खोज, आकलन, अनुमान, अवधारणा को बढ़ावा मिलेगा तथा 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर बल दिया जाएगा। विद्यार्थी अंकों की अंधी दौड़ की अपेक्षा गुण ग्रहण की ओर अग्रसर होगा और इसमें वह विद्यार्थी जो आज पिछड़ जाता है उसे अब अवसर मिलेंगे। यहीं से अन्त्योदय का आरम्भ होगा, यही दीनदयाल उपाध्याय जी की विचारधारा कहती है। प्रत्येक व्यक्ति समाज का अंग है, उसमें बूढ़े व्यक्ति, अपाहिज, अनाथ, गरीब, बच्चे सबके लिए प्रावधान होना चाहिए। कोई भी लाभ से वंचित न रहे, हाशियाग्रस्त न रहे, कमजोर न हो, समता और समानता दोनों का संतुलन हो, जबकि अर्थ व्यवस्था का सिद्धांत इन सब बिन्दुओं पर केन्द्रित नहीं होता वहाँ पर लाभ कमाना प्राथमिकता है। दीन दयाल जी कहते हैं कि सबसे पहले उस तक पहुँचा जाए जिसे सबसे ज्यादा जरूरत है, जिस तक लाभ की कोई किरण नहीं पहुँची, जिसे कभी भी सुना नहीं गया, अपनाया नहीं गया, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में जिसे अंडर रिप्रिजेंटेटिव ग्रुप कहा गया है। यही वे लोग हैं, जिनके उदय की बात अन्त्योदय की बात दीनदयाल जी का दर्शन शास्त्र करता है।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बाद में 1992 के बदलाव वाली नीति का अध्ययन किया जाए तो इसने स्कूल स्तर से उच्चतर शिक्षा तक अमीर-गरीब के मध्य कितनी बड़ी खाई पैदा करती है। इसने तीन प्रकार के स्कूल बना दिए हैं- सरकारी स्कूल जिन्हें पूरी दुनिया में पब्लिक स्कूल के नाम से जाना जाता है, केवल भारत में ही इसे सरकारी स्कूल कहा जाता है। यह मान लिया गया है कि दीन दयाल उपाध्याय जी जिस गरीब, दलित, पिछड़े, दबे-कुचले, हाशियाग्रस्त, अलाभप्रद के उत्थान की बात करते हैं, यह उनका स्कूल बनकर रह गया है। दूसरी श्रेणी में बजट स्कूल आते हैं जो प्राइवेट स्कूल हैं जिसमें ऐसे वर्ग के लोग अपने बच्चों को पढ़ाते हैं जो अमीर नहीं हैं। कुछ दशकों से गरीब और अमीर के मध्य एक नया शब्द आ गया है, वह है मिडिल क्लास, जो गरीब नहीं है पर अमीर भी नहीं है। तीसरे प्रकार के स्कूल हैं अमीर स्कूल अर्थात फाइव स्टार स्कूल जो उन वर्गों के बच्चों के लिए हैं जिनके पास शिक्षा के नाम पर खूब खर्च करने की इच्छा और क्षमता है। जब शिक्षा केन्द्र ही तीन प्रकार के है तो समाज में समता और समरसता का वातावरण कैसे बनेगा। स्कूल स्तर से ही जब सब अलग-अलग चल रहे हैं तो एक साथ मिलकर कैसे राष्ट्र का निर्माण करेंगे। जब समन्वय ही नहीं होगा तो एक साथ लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जाएगा। फाइव स्टार स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी उन परिवारों से हैं जो आज देश चला रहे हैं। जैसे- बड़े

राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भूमिका : मुख्यमंत्री

बदलते वैश्विक परिदृश्य के मद्देनज़र नई नीति स्कूली व व्यावसायिक शिक्षा में कारगर सिद्ध होगी। पिछले 5 वर्षों से शिक्षा नीति तैयार करने के लिए अभूतपूर्व सहयोगात्मक, समावेशी और अत्यधिक भागीदारी वाली परामर्श प्रक्रिया की शुरुआत की गई थी। नई शिक्षा नीति की खास बात यह है कि यह आननफानन में लागू नहीं की गई है, बल्कि इसके लिए बड़े स्तर पर रायशुमारी की गई थी। पहली बार शिक्षा नीति तैयार करने से पहले पंचायती राज संस्थाओं, जन प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों से लिखित सुझाव लिए गए। लाखों सुझावों को इसमें शामिल किया गया, जो इस बात को दर्शाता है कि लोग वर्षों से चली आ रही शिक्षा व्यवस्था में बदलाव चाहते थे। जो इस नीति में देखने को मिला है। देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों, शहरी स्थानीय निकायों व जिलों से प्राप्त दो लाख से अधिक सुझावों को इस नीति में शामिल किया गया। 35 साल के बाद शिक्षा नीति में बदलाव किया गया है जो कि भारत के शैक्षणिक परिदृश्य में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी तथा नवाचारयुक्त सुधारों का मार्ग प्रशस्त करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं सदी के नए भारत की नींव तैयार करने वाली है तथा इस नीति में युवाओं को जिस तरह की शिक्षा व कौशल चाहिए उस पर फोकस किया गया है। इसके तहत अब प्रत्येक विद्यार्थी वैज्ञानिक तरीके से पढ़कर राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभा सकेगा।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रति हरियाणा सरकार सजगः कँवरपाल

नई नीति 21वीं सदी के नए भारत की नींव तैयार करने वाली है। इसलिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ-साथ शिक्षाविदों व विद्यार्थियों के अभिभावकों को आगे आकर इस नीति के क्रियान्वयन को एक महायज्ञ समझकर आहुति डालनी होगी।

नई नीति रोज़गारोन्मुखी और कौशल को सँवारने वाली होगी। इससे सभी विद्यार्थी भविष्य में लाभान्वित होंगे। हरियाणा ने देश में सबसे पहले इस नीति के क्रियान्वयन की पहल की है। इस नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत पाँचवीं कक्षा तक सभी बच्चों को अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करनी होगी, जिससे उनकी शिक्षा का आधार मजबूत होगा। शिक्षा नीति में जो खास बातें कही गई हैं उनमें से कुछ तो हरियाणा में पहले से ही अमल में लाई जा रही हैं। हमारी सरकार शिक्षा के प्रति सजग है। कुशल नीति और प्रबंधन में आए दिन इस दिशा में हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं कि प्रदेश के विद्यार्थी आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में अपना व अपने प्रदेश का नाम रोशन करें। सरकार इस दिशा में भी प्रयासशील है कि किसी भी बच्चे को पढ़ाई के लिए दूर तक नहीं जाना पड़े। चूंकि शिक्षा सफल जीवन निर्माण का आधार होता है, इसलिए इस दिशा में प्रदेश सरकार पहले से चौकस है।

कँवर पाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

	सभी श्रेणियों से			अनुसूचित जाति		
	पुरुष	महिला	जोड़	पुरुष	महिला	जोड़
हरियाणा	26.5	32.4	29.2	18.3	22.0	20.0
भारत	26.3	26.4	26.3	22.7	23.3	3 .0

नेट एनरोलमैंट रेशो एंड ग्रॉस एनरोलमैंट रेशो इन हरियाणा	एनईआर	स्तर	जीईआर
	99.4	प्राथमिक स्तर	99.5
	86.2	माध्यमिक स्तर	97.8
	63.6	उच्चतर माध्यमिक स्तर	-

सर्वांगीण विकास करेगी नई शिक्षा नीति

शिक्षा का अर्थ कुछ डिग्रियाँ प्रदान करना नहीं है। शिक्षा वह है जो किसी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करते हुए उसमें सहानुभूति, साहस, लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन, रचनात्मक सोच और अन्य जीवन मूल्यों में आस्था जगाते हुए अपने पैरों पर खड़ा होने की क्षमता प्रदान करके उसे समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाए। इसमें दोराय नहीं कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उसके विकास हेतु प्रयास किए गए हैं। बहुविषयक और समग्र शिक्षा का विकास, रटंत पद्धति को छोड़ कर अवधारणात्मक और तार्किक सोच, बहुभाषिकता को प्रोत्साहन, जीवन कौशलों पर बल, सीखने के सतत मूल्यांकन पर जोर देना आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। नीति में परिकल्पित है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षाविधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों, देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करे। ऐसा होने पर इसके माध्यम से एक क्रांतिकारी बदलाव समाज में आने की प्रबल संभावना दिखाई दे रही है।

डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

प्रोफेशनल और स्किल शिक्षा पर विशेष बल

नई शिक्षा नीति में ज्ञान व कौशल का स्वस्थ मिश्रण दिखाई दे रहा है। नीति में अनेक ऐसे सुधार हैं जिनकी चिरकाल से प्रतीक्षा थी। यह विभिन्न संकाय और विषयों के संयोग का मार्ग प्रशस्त करेगी एवं उच्चशिक्षा के आयामों को बढ़ेगी।

इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें शिक्षा को व्यापक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस प्रकार से शीघ्र ही स्कूल शिक्षा के ढाँचे में बड़ा बदलाव आएगा। 10 + 2 प्रणाली की बजाए 5 + 3 + 3 + 4 की संरचना एक सराहनीय कदम है। इसकी एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। अब व्यावसायिक क्षमताओं का विकास शैक्षणिक क्षमताओं के साथ-साथ होगा। अब छठी कक्षा से ही विद्यार्थियों को प्रोफेशनल और स्किल शिक्षा दी जाएगी, जिससे निश्चित तौर पर विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा।

डॉ. जे.गणेशन
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा हरियाणा

उद्योगपति, राजनेता, उच्च अधिकारी और बड़े शिक्षाविद नीति निर्माता आदि तथा यही लोग अपने माता-पिता का स्थान लेते हैं, अर्थात एक वर्ग हमेशा अमीर बना रहता है या और अमीर बन रहा है, नीतियों में बदलाव कर रहा है जबकि दूसरा और गरीब हो रहा है तथा यह वर्ग जो उच्च है नीति बना रहा है उसे गरीब की स्थिति का पता नहीं है, उसे सहानुभूति ही नहीं है तो समता आएगी कैसे। जब गरीब का दर्द ही नहीं पता तो समरसता वाले समाज का निर्माण करने के लिए नीतियों में बदलाव कौन करेगा। हालांकि शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की धारा 12 (1) (C) में यह व्यवस्था की गई जिसमें इन उच्च प्रकार के प्राइवेट स्कूलों में 25 प्रतिशत सीटें लाभ से वंचित तथा कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए आरक्षित होंगी तथा इन्हें भी अच्छे स्कूलों में पढ़ने का अवसर मिलेगा ताकि सक्षम वर्ग के बच्चे अपने आरंभिक जीवन में अपने गरीब सहपाठी के साथ बैठकर उसकी समस्या गरीबी को समझें अर्थात कृष्ण और सुदामा एक साथ पढ़ें, परन्तु आज 11 वर्ष बीत जाने के बाद सबको मालूम है कि आरटीई की इस पूरी धारा 12 (1) (C) की क्या हालत है।

पाठ्यचर्या निर्माण में राज्यों को स्वतन्त्रता देकर 'एकात्म' को बढ़ावा दिया गया है ताकि सबकी सुनकर, सबकी जरूरत समझकर राज्य अपने लोगों के, क्षेत्र के, भाषा के, भूगोल के, वातावरण के तथा जनसंख्या घनत्व के महत्त्व अनुसार अपनी पाठ्यचर्या बनायें। बच्चों की तदानुसार समझ विकसित कर सकें, जैसे हरियाणा के विद्यार्थियों को समृद्ध और उससे जुड़ी बात पढ़ाने का उतना लाभ नहीं है जितना तटीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों को हैं। उसी प्रकार मरुस्थल के बारे में पढ़ाने से राजस्थान के बच्चे लाभान्वित होंगे, अगर यही गोवा और कोंकण के बच्चों को पढ़ाया जाए तो लाभ नहीं होगा, क्योंकि उनके परिवेश में मरुस्थल नहीं है। यह बात भी अन्त्योदय में सहायक सिद्ध होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षण की बजाय अधिगम को महत्त्व देती है, सीखने पर बल देती है। यह पाठ्यचर्या की अपेक्षा तार्किक सोच बनाने पर बल देती है। यह प्रक्रिया से ज्यादा प्रदर्शन पर बल देती है। यह दीनदयाल उपाध्याय जी के उस हर अन्तिम व्यक्ति के उत्थान की बात करती है जो लाभ से वंचित रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा के मार्ग खोलकर, विदेशी विश्वविद्यालयों को अपने केन्द्र भारत में खोलने की अनुमति देने वाली यह नीति दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय के विचार को साकार बनाएगी। वे सभी विद्यार्थी जो धन के अभाव में भारत और विदेश के उच्च शिक्षा केन्द्रों में नहीं पहुँच पाते थे अब यह संभव बनेगा। दीनदयाल उपाध्याय जी का 'हर हाथ को काम' का नारा अब साकार होगा, क्योंकि कक्षा छठी से ही व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना आरम्भ होगा। इससे भारत की रोजगार में हिस्सेदारी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ेगी। जब हम कुशल कारीगर जैसे आज आईटी के क्षेत्र में उपलब्ध करवाते हैं, कल हम अन्य क्षेत्रों में भी उपलब्ध करवा पाएँगे। भारत को कुशल कारीगरों की और नोलेज की इकोनामी बनाने में मददगार होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विभिन्न बैठकों में प्रधानमन्त्री महोदय सही कहते हैं -'माइंड इज़ नेवर ए प्राब्लम, माइंडसेट इज़' का इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में पूरा ध्यान रखा गया है। इसी में आगे कहते हैं कि यह नीति आईटी +आईटी = आईटी की बात कहती है जिसमें Indian Talent + Information Technology = India Tomorrow का सपना साकार होगा क्योंकि इस देश का निर्माण राजनेताओं, राजाओं और सरकारों द्वारा नहीं किया गया है। यह देश किसान,

मज़दूर और इस देश के युवाओं द्वारा बनाया गया है। इसमें इनके उत्थान तथा विकास के लिए समुचित व्यवस्था की गई है।

नई शिक्षा नीति बच्चे (विद्यार्थी) को बैग और बोर्ड के भार से मुक्त करती है। नींव के स्तर पर ही जब विद्यार्थी अपनी भाषा, परम्परा, संस्कार, रीति-रिवाज से जुड़कर अपना पठन-पाठन करेगा तो उसे एक जुड़ाव की अनुभूति होगी। यह नीति बिना दबाव, बिना प्रभाव, बिना अभाव के सीखने का ढाँचा तैयार करती है ताकि अभावग्रस्त बच्चे, प्रवासी विस्थापित, दिव्यांग, परलैंगिक, अल्पसंख्यक, आदिवासी, दलित, पिछड़े, ग्रामीण जो अन्तिम पंक्ति में हैं, जिन तक आज भी लाभ की किरण नहीं पहुँची है, क्योंकि वे शिक्षा की मुख्यधारा से नहीं जुड़ सके, उनके लिए नये द्वार खोलती है। 21वीं सदी ज्ञान की सदी है, यह भारत की सदी है। यदि इस सदी में गरीबी को समाप्त किया जाना है तो पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के अन्त्योदय के विचार को साकार करना होगा जोकि केवल शिक्षा से ही संभव है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इसकी समुचित व्यवस्था की गई है। 'रीड टू लर्न' के लिए 'लर्न टू रीड' का कौशल देना जरूरी है क्योंकि ग्रामीण अभावग्रस्त परिवारों के विद्यार्थी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में पिछड़ जाते थे।

बुनियादी साक्षरता प्रत्येक बच्चे के पास हो, वह दक्ष हो, मातृभाषा में पढ़ने-लिखने, बोलने-सुनने में, व्यावहारिक गणित, सामान्य अंक गणित जिसमें जोड़-घटाव, गुणा-भाग, नाप तोल, पैसे का लेन-देन, लाभ-हानि, लम्बाई-चौड़ाई, क्षेत्रफल, परिमाप आदि का ज्ञान वर्ष 2025 तक हर पाँचवीं पास विद्यार्थी के पास होना जरूरी है। आज अनेक रिपोर्ट्स यह बताती हैं कि पाँचवीं पास बच्चे के पास दूसरी कक्षा की दक्षता नहीं है। आठवीं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा उठाये गए कदम

1. मुख्य मन्त्री तथा मन्त्री मण्डल की बैठक- दिनांक 5 अगस्त 2020 को माननीय मुख्य मन्त्री जी की अध्यक्षता में शिक्षा मन्त्री महोदय द्वारा मन्त्री मण्डल के सदस्यों, विधानसभा के अध्यक्ष के साथ विधायकगण की बैठक का आयोजन करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की हिन्दी की प्रतियाँ उपलब्ध करवाते हुए इस विषय पर जानकारी प्रदान की गई।
2. शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार तथा माननीय शिक्षा मंत्री जी से अनुमति लेकर विभिन्न कमेटियों का गठन कर दिया गया है।
3. माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय की अध्यक्षता में 4 नवंबर 2020 को सभी कमेटी के अध्यक्ष एवं सचिवों के साथ बैठक का आयोजन कर लिया गया है।
4. माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय द्वारा राज्य एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त सेवारत और सेवानिवृत्त अध्यापकों से बैठक कर ली गई है।
5. सभी हितधारकों की सुविधा के मध्येनज़र एनईपी का हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का मुद्रण करवाकर कमेटी सदस्यों को उपलब्ध करवा दिया गया है। पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन का हिन्दी भाषा में अनुवाद कर लिया गया है।
6. राज्य स्तरीय कमेटी का गठन माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय की अध्यक्षता में कर दिया गया है।
7. कमेटियों के सदस्यों को सूचना दे दी गई है तथा अपनी सिफारिशों को राज्य कमेटी को प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित कर दिया गया है तथा बैठकों का दौर जारी है।
8. ईसीसीई (पूर्व प्राथमिक शिक्षा) को लेकर महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ साँझी योजना पर कार्य आरम्भ कर दिया गया है तथा डब्ल्यूसीडी और स्कूल शिक्षा विभाग अपना कार्य कर रहे हैं।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर ग्राम पंचायत, स्थानीय निकाय, ब्लॉक समिति, जिला परिषद स्तर तक चर्चा करवाने के लिए योजना बनाकर प्रशिक्षकों का समूह तैयार करके 25 सितम्बर को राज्य के प्रत्येक विद्यालय में एसएमसी तथा पंचायत की साँझी बैठकों के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर समुचित चर्चा कर ली गई है।
10. राज्य स्तरीय कमेटियों द्वारा सभी सदस्यों के साथ बैठकें आरम्भ कर दी गई हैं, जिसमें एसीईआरटी, एचएसएसपीपी तथा विभाग द्वारा कार्य किया जा रहा है।
11. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा बनाये गए ट्रैकर पर सभी सूचना उपलब्ध करवा दी गई हैं।
12. विभिन्न हितधारकों के सुझाव आमन्त्रित किए जा रहे हैं। इसके लिए समुचित व्यवस्था कर ली गई है, विशेषकर विभागीय कमेटियाँ अध्यापक संगठनों के सुझावों पर विशेष ध्यान दे रही हैं।
13. सभी कमेटी अध्यक्षों के द्वारा दो चरणों की बैठकों का आयोजन सम्पन्न हो गया है।
14. शीघ्र ही सभी कमेटियों द्वारा क्रियान्वयन, योजना का प्रथम ड्राफ्ट माननीय शिक्षा मंत्री महोदय जी की कमेटी को प्रस्तुत किये जाने की तैयारी है।

विद्यालयों की भी होगी रैंकिंग

राज्य के राजकीय तथा निजी विद्यालयों के लिए मानक-निर्धारण का कार्य किया जाएगा जिसमें प्रत्येक विद्यालय को उसकी ढाँचागत उपलब्धता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बाल केंद्रित शिक्षा, गतिविधि आधारित पाठ्यक्रम तथा नवाचार प्रयासों का आकलन करके रैंकिंग दी जाएगी। नई शिक्षा नीति-2020 में यह कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। जैसे हस्पतालों की रैंकिंग है, विश्वविद्यालयों की रैंकिंग है, वैसे ही अब विद्यालयों की भी रैंकिंग होगी। हमारी कमेटी द्वारा इस पर विभिन्न राष्ट्रीय विशेषज्ञ संस्थाओं के साथ मिलकर प्रस्ताव बनाया है जो सरकार को प्रस्तुत करने की तैयारी है।

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

शिक्षाविदों की नज़र में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी नीति

नई शिक्षा नीति में जो फेरबदल किया गया है या बहुत-सी चीजों को नया जोड़ा गया है वह पहले से ज्यादा उपयोगी और सार्थक है। इसमें कोई संदेह नहीं, बच्चों को रटने की आदत से छुटकारा मिलेगा जो लंबे समय से चला आ रहा है। नई शिक्षा नीति ज्ञान की अभिव्यक्ति का एक खज़ाना होगी और रट कर सीखने की संस्कृति से दूर वास्तविक समाज की ओर ले जाएगी। विद्यार्थियों का एक सफल, हर परिस्थिति का सामना करने में सक्षम और उत्पादक व्यक्तित्व के रूप में विकास करेगी और चरित्र और संज्ञानात्मक कौशल समेत 21 वीं शताब्दी के प्रमुख कौशल से लैस सर्वांगीण विकास वाले व्यक्तित्व का निर्माण करेगी। नई शिक्षा नीति अन्य बातों के अलावा सांस्कृतिक जागरूक, सहानुभूति, दृढ़ता, धैर्य, टीमवर्क, नेतृत्व संवाद सहित ज्ञान संबंधी सामाजिक और व्यावहारिक कौशल विकसित करेगी। नई शिक्षा नीति ज्यादा रोज़गारपरक होगी और बच्चों को कला, संस्कृति व प्रकृति से जोड़ने में सक्षम होगी, ऐसी उम्मीद की जा सकती हैं।

दयानंद सिहाग
जिला शिक्षा अधिकारी, फतेहाबाद, हरियाणा

मील का पत्थर साबित होगी

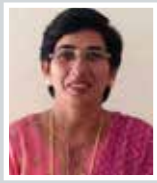

शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिससे किसी भी व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को ताकतवर बनाया जा सकता है और जब वह शिक्षा अपनी जड़ों से जुडी हुई हो या अपनी संस्कृति से जुड़ी हुई हो तो, वह चहुँमुखी विकास करती है तथा रोज़गार के नए अवसरों को पैदा करती है। शिक्षा व्यक्ति व समाज को विनम्र, सहनशील, सभ्य और शिष्ट बनाती हैं। नई शिक्षा नीति इन सभी मापदंड़ों में खरी उतरती हैं जो भविष्य में छात्रों को एक नई दिशा प्रदान करेगी। यह शिक्षा नीति भारत की प्रतिभाओं को और निखारने व तराशने का काम करेगी। भारत की यह नई शिक्षा व्यवस्था भविष्य में मील का पत्थर साबित होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

संगीत बिश्नोई, प्राचार्या
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मताना
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर विशेष बल

नई शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा निश्चय ही एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है जो बच्चों की सुरक्षा, भोजन, स्वास्थ्य देखभाल जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगा और उन परिवारों के बच्चों को भी समायोजित कर सकेगा जो आर्थिक रूप से कमज़ोर हैं और अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिलवा पा रहे हैं। यह उन परिवारों के लिए बहुत फायदेमंद होने वाला है जहाँ माता-पिता कार्य करते है और छोटे बच्चों को अपने साथ ही कार्यस्थल पर ले जाते है। आरंभिक बाल्यावस्था के शुरुआती चरण में किया गया कार्य अवश्य ही हमें सकारात्मक और दीर्घकालिक लाभ देगा। इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि जल्द ही इस दिशा में ठोस और सहयोगात्मक कदम उठाए जाएँगे और पाठ्यक्रम आधारित एवं क्षेत्रीय स्तर पर पुस्तकों का निर्माण और शिक्षकों की भर्ती या आँगनवाड़ी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दे जल्द ही तैयार किया जाएगा और हमारा शिक्षा का आँगन जल्द ही 3-6 वर्ष के बच्चों की किलकारियों से महक उठेगा।

अनिल कुमार दलाल
प्रधानाचार्य
रामासवमा विद्यालय, मोरनी हिल्स, पंचकूला, हरियाणा

पास विद्यार्थी पाँचवीं कक्षा की दक्षता से दूर हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह बिन्दु सचमुच अन्त्योदय के सिद्धांत पर बनाया गया है। यह हर उस अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाना जरूरी है जो दीन दयाल उपाध्याय जी के सिद्धांतों और उनके दर्शन, विचार को साकार करने के लिए बना है। यहीं से सबके साथ और सबके विकास की नींव रखी जा सकती है।

भारत के विकास के लिए ग्रामीण विकास और लघु उद्योग को बढ़ावा देना चाहिए, इस बात पर उनका दृढ़ विश्वास था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मूलमन्त्र भी यही है। 'सबका साथ सबका विकास' आधुनिक नारा जो अन्त्योदय के विकास की अवधारणा पर ही आधारित है जिसको राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से धरातल पर लाने का प्रयास है। दीनदयाल जी ने एक शब्द पर बल दिया 'लोकमत परिष्कार' जिसमें हर भेदभाव, धर्म, जाति, क्षेत्र, अर्थ, भाषा पर आधारित मनमुटाव न हो। हमारी आर्थिक नीतियाँ ऐसी हों, जहाँ असमानता न हो, अमीर-गरीब का अन्तर न हो। समता, समानता, समरसता का वातावरण बने, हम अच्छे समाज का निर्माण करें। अच्छा समाज होगा तो अच्छी राजनीति होगी और अच्छी राजनीति से ही अच्छी सरकारें बनेंगी और अच्छी सरकारें ही अच्छे राष्ट्र का निर्माण संभव कर सकती हैं। यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में साधने का प्रयास किया गया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी चिकित्सा और शिक्षा के सरकारीकरण के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि शिक्षा देने का काम सरकारों के हाथों में नहीं दिया जाना चाहिए, यह काम समाज पर छोड़ना चाहिए। समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार व्यवस्था करे जैसे गुरुकुलों के माध्यम से होती थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी सरकार की शक्तियों के विकेन्द्रीयकरण की बात करती है। इसमें मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस के मंत्र को साधने का प्रयास किया गया है। इसमें समाज को, संस्थाओं को, शिक्षा के केन्द्र चलाने के लिए आगे आने वाली बाधाओं, लालफीता शाही को समाप्त करने पर बल दिया गया है। इन सबको लेकर दीनदयाल उपाध्याय जी हमेशा कहते थे कि भारतीय अर्थ नीति विकास की दशा, शासन का उद्देश्य, अन्त्योदय की परिकल्पना के अनुरूप होना चाहिए। उनका मानना था कि शासन को व्यापार नहीं करना चाहिए और व्यापारी के हाथ में शासन नहीं आना चाहिए। राष्ट्र प्रथम, राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को सुख, समृद्धि शिक्षा और संस्कार मिलें, इसके लिए ही सरकार की शासन की नीति होनी चाहिए और समाज तथा सरकार दोनों के परस्पर सहयोग के साथ राष्ट्र के उत्थान और वैभव के लिए काम करना चाहिए। भारत को चलाने के लिए भारतीय दर्शन, भारतीय भाषा ही सबसे उपयुक्त हो सकती है।

दीनदयाल उपाध्याय जी हमेशा कौशल विकास की बात करते थे तथा स्वरोजगार के सबसे बड़े पक्षकार थे। उनका मानना था कि आर्थिक लोकतन्त्र को दबाने वाली अर्थ व्यवस्था गलत है, उनका मानना था कि देश में एक

पंचवर्षीय योजना ऐसी बनाई जाए जो सबके लिए शिक्षा और सबके लिए रोजगार के अवसर प्रदान करे। सरकार और कानून जनता के लिए सहयोगी के रूप में होने चाहिएं। अतः सरकार अपनी आर्थिक नीतियाँ इस प्रकार बनाये जो आर्थिक लोकतन्त्र को बढ़ावा दें। जहाँ प्रत्येक हाथ कौशल ग्रहण करे, स्वरोजगार की ओर जाए, कोई बेरोज़गार न हो, कोई आश्रित न हो और आज भी यह बात सत्य है कि भारत के निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान असंगठित क्षेत्र का है, रोज़गार मे सबसे ज्यादा स्थान इसी का है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इस सब पहलुओं को शामिल करके बनाई गई है।

दीनदयाल जी ने ऐसे लोक कल्याण की बात कही है जिसका अर्थ है पूरे विश्व में न केवल मानव का अपितु जल, वायु, वनस्पति, जीव जन्तु, समुद्र, धरती, सबका कल्याण। जिसको आधुनिक अन्तरराष्ट्रीय समाज ससटेनेबल डिवेल्पमैंट गोल- 2030 के नाम से साधने का प्रयास कर रहा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने इन सभी विचारधाराओं के विकल्प के रूप में जिस चिन्तन को एकात्म मानव दर्शन के रूप में सामने रखा वह केवल आर्थिक चिन्तन नहीं, वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सब प्रकार के उन्नयन की राह हमें दिखाता है, यही सब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में देखने को मिलता है जो केवल साक्षर करने की बात नहीं करती अपितु कौशल देकर स्वावलंबी बनाने और मानव निर्माण की बात करती है जो पूरी प्रकृति और मानवता के प्रति कृतज्ञ हो।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा एक यज्ञ चक्र हमें दिया गया है जो भारतीय चिन्तन धारा के आधार पर व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टी इन चारों का समन्वय है और हम इस समन्वय से आगे बढ़ते हैं तो वह सबके हित में होती है। इसलिए मनुष्य समाज, सृष्टि और परमेष्टि के संतुलन को साधते हुए ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 कर निर्माण किया गया है। दीनदयाल उपाध्याय जी भले ही भारतीय परम्पराओं के पोषक थे लेकिन वे हमेशा कहा करते थे कि पश्चिमी देशों का सब कुछ त्याज्य नहीं है। पश्चिम का विचार को जो आधुनिक रूप में प्रस्तुत होता है उसे युगानुकूल बनाओ और जो युगानुकूल है उसे देशानुकूल बनाओ। हमें वह सब जो वहाँ अच्छा है उसे ले लेना है और अपने राष्ट्र के अनुकूल बनाकर अपनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में विभिन्न देशों के अच्छे प्रयासों को स्थान दिया गया है। विदेशी विश्वविद्यालयों के केन्द्र भारत में खोलने की बात को शामिल कर इस विचार पर मोहर लगाई गई है।

दीनदयाल जी ने जिस अन्तिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का लाभ से वंचित वर्ग में उल्लेख किया है जिसे भारत में दरिद्र नारायण भी कहा जाता है जब उसको देखकर व्यवस्था बनेगी तभी सबका कल्याण होगा। यह दर्शन पूरी दुनिया में कहीं नहीं है। गरीबी हटाओ की बात होती है, मजदूर के भले की बात होती है लेकिन अन्त्योदय नहीं हो पाया। जयप्रकाश नारायण जी ने ये नारा दिया था कि हमें एक समग्र क्रान्ति करनी है, हमें व्यवस्था परिवर्तन

देश को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी नई शिक्षा नीति

भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत की सतत ऊँचाइयों की ओर बढ़ने की दृष्टि से अति आवश्यक है। नई शिक्षा नीति इसके लिए लाभकारी होगी। नई शिक्षा नीति की पूर्व प्राथमिक शिक्षा में मुख्य रूप से लचीली बहुआयामी बहु स्तरीय खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। जैसे- अक्षर, भाषा, संख्या गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, दृश्य कला शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

गुणात्मक सुधार की पक्षधर व पोषक

35 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद एक बेहतरीन शिक्षा नीति प्रारूप आया है, जिसमें कही गई अधिकांश बातें शिक्षा में गुणात्मक सुधार की पक्षधर, पोषक व सजग प्रहरी हैं, किंतु इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इसका क्रियान्वयन कितने व्यावहारिक एवं संजीदा ढंग से किया जाता है। 10 + 2 प्रणाली की बजाए 5 + 3 + 3 + 4 का नया प्रारूप सबसे महत्त्वपूर्ण बुनियादी शिक्षा पक्ष है। दूसरा, शिक्षकों से गैर शैक्षणिक कार्य न लेने, उन्हें नवाचार व तकनीक से जुड़े प्रशिक्षण प्रदान करना, सभी रिक्त पदों को भरना, कॉन्प्लेक्स स्कूलों की नई अवधारणा, चार वर्षीय एकीकृत बीएड पाठ्यक्रम, बाल कौशल को बढ़ावा देना, शिक्षा अधिकार अधिनियम को मजबूती प्रदान करना, आउटस्टैंडिंग परफॉर्मेंस देने वाले शिक्षकों तथा मुखिया को विशेष प्रोत्साहन देना, पारंपरिक कला, शिल्प, कृषि, उद्यमिता मातृभाषा का संरक्षण व संवर्धन करना, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण को प्रभावी बनाना जैसे कदम बेहद सराहनीय हैं, किंतु उच्च शिक्षा को आम आदमी की पहुंच में रखना तथा किसी भी स्तर पर शिक्षा का निजीकरण न होने देने की प्रतिबद्धता को भी व्यावहारिकता से लागू करना होगा।

सत्यवीर यादव
रसायनशास्त्र प्राध्यापक
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी, रेवाड़ी, हरियाणा

कौशल विकास पर विशेष बल

नई शिक्षा नीति राष्ट्र निर्माण के मार्गदर्शक के रूप में सामने आई है। त्रिभाषाई सूत्र से राष्ट्रभाषा के साथ क्षेत्रीय भाषाओं के सहयोग से विषयों को समझने में मदद मिलेगी। नई शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास के लिए उठाए गए कदमों से विद्यार्थियों को भविष्य निर्धारण में सहायता मिलेगी। विद्यार्थियों के सतत मूल्यांकन से अध्यापक जान सकेंगे कि विद्यार्थी को किस विषय में क्या क्या समस्याएँ आ रही हैं और उनका निदान किस शिक्षण विधि से किया जा सकता है। उच्चतर शिक्षण संस्थानों को ज्यादा स्वायत्ता देने पर विचार किया जा रहा है। इस से वे संस्थान को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने स्तर पर संसाधन जुटा पाएँगे। अगर सकारात्मक ऊर्जा के साथ नीतियाँ सुचारू रूप से लागू हो पाई तो हम ऐसे नागरिकों का निर्माण कर पायेंगे जो स्वयं के साथ देश के उत्थान में अपनी भागीदारी के लिए उत्सुक रहें। जयतु भारत।

संदीप आर्य
संस्कृत अध्यापक, रावमावि खरिण्डवा, कुरुक्षेत्र

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को मिलेगा बढ़ावा

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए मील का पत्थर साबित होगी। पाठ्यक्रम में समयानुकूल परिवर्तन, व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षकों की गैर-शिक्षण कार्यों से मुक्ति, शिक्षक चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता, शिक्षण-प्रशिक्षण पर बल आदि इसके शानदार उपबन्ध हैं। लेकिन यह भी कहना होगा कि इस नीति की सफलता इसके क्रियान्वयन और सतत पर्यवेक्षण पर निर्भर करेगी। सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत शिक्षा में निवेश, संयोगवश इस क्षेत्र में आ रहे लोगों पर अवरोध, व्यावसायिक शिक्षा के लिए अनुदेशकों की व्यवस्था, अच्छे स्तर के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षक तैयार करना तथा शिक्षा की सब तक पहुँच जैसे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए टीम-वर्क की आवश्यकता होगी।

रोहताश कुमार
कार्यवाहक प्राचार्य राकवमा विद्यालय मोहम्मदपुर
फतेहाबाद, हरियाणा

करना है ताकि हम अन्त्योदय का लक्ष्य पूरा कर सकें। लेकिन 1977 के बाद भी आज 43 वर्ष बीत गए पर सब संभव नहीं हुआ पिछले 60 वर्षों में चली शिक्षा व्यवस्था जो समग्र नहीं है, सतत नहीं है, जो चिन्ता उत्पन्न करती है, जो महँगी है, जिसका लाभ एक वर्ग ले रहा है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने लिखा है कि शिक्षा समाज का दायित्व है, क्योंकि बच्चों को अच्छी शिक्षा समाज के अपने भले के लिए है। उनके अन्त्योदय का विचार बहुत ही प्रासंगिक है। इस शिक्षा व्यवस्था के कारण ही वर्तमान में चल रहे उदारीकरण और वैश्विकीकरण के द्वारा हमें क्या मिला? व्यक्तिवादी और उपभोक्तावादी सोच को बढ़ावा मिला जिससे अमीर और गरीब के बीच की खाई और गहरी हो गई। उनकी विचारधारा तो 'सबका साथ, सबका विकास' पर बल देती है जिसमें राज्य और समाज, सरकार और अधिकारी पूर्ण दायित्व का निर्वहन करते हुए समाज के सबसे नीचे के पायदान पर बैठे, सबसे वंचित व्यक्तियों का उत्थान करें। दीन दयाल जी कहते हैं कि 'हर खेत को पानी और हर हाथ को काम' मिले यह विचार कितना सार्थक है। एक ऐसे देश में जो कृषि प्रधान है, जहाँ एक तिहाई लोग कृषि को रोज़गार के रूप में अपनाकर अपना जीवन यापन करते हैं वहाँ वर्तमान में चल रही शिक्षा नीति ने सबसे बड़ी हानि की है तो यह कि उसने दो वर्ग पैदा किए जिसे आज कहते हैं 'वाइट कालर जॉब, ब्लू कॉलर जॉब'। इससे हमारे परंपरागत काम जो गाँव में ही रोज़गार के अवसर देते थे, जिन्हें हम कौशल विकास करके लघु कुटीर उद्योग से सँभाल सकते थे, उन्हें समाप्त किया है। प्रत्येक बीए पास करने वाले युवा के अन्दर ऐसी भावना भरी जिसके कारण वह हाथ से किए जाने वाले कार्यों को छोटा समझने लगा और पलायन करके शहर आने लगा, जहाँ उसे क्या मिला? एक ऐसी नौकरी जिससे वह अपना घर भी नहीं चला सकता और उधर गाँव में खेती-बाड़ी अलाभप्रद होती चली गई। सम्पूर्ण भण्डारण, विपणन न होने के कारण किसान मजदूर में बदलता चला गया। अब यदि हर हाथ को काम और हर खेत को पानी देने की समुचित व्यवस्था होती तो इतना दबाव न पड़ता। कोविड-19 की त्रासदी के कारण हमने लाखों मजदूरों का पलायन देखा है। यदि गाँवों में लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, दस्तकारी कौशल, लोक कला, हस्त शिल्प, स्वरोजगार को बढ़ावा देने वाली शिक्षा दी जाती जो यह स्थिति न होती। यह सब अगर हो सकता है तो केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। अन्त्योदय एक योजना अथवा विषय अथवा पंचवर्षीय योजना नहीं है, यह पंडित जी द्वारा दी गई एक विचारधारा है और यह एक दो या पाँच वर्ष में संभव नहीं है। इसके लिए देश को समय की आवश्यकता है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 2030 से 2040 तक का समय लेकर इस अन्त्योदय को साकार करने धरातल पर लाने का प्रयास किया गया है।

दीनदयाल जी का सारा चिंतन भारतीय संस्कृति से संबंधित है तथा यह संस्कृति सामंजस्य की संस्कृति है। एकात्म मानववाद का सार अगर देखें तो दीनदयाल जी ने कहा है कि खुद कमाना और खाना यह मनुष्य की प्रकृति है लेकिन दूसरे के कमाये हुए को छीनकर खाना यह विकृति है, जबकि भारत की जीवन दृष्टि है खुद कमाना और दूसरे को भी खिलाना। तो दूसरे की चिन्ता जिस दर्शन में, जिस विचार में, व्यवस्था में, आचरण में, धर्म में होगी तभी अन्त्योदय भी सफल होगा। अन्तिम पायदान पर खड़े प्राणी का चिन्तन कौन करेगा? पश्चिम की 'सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट' की धारणा जो यह कहती है कि जो ताकतवर है वही ज़िंदा रहेगा। वह अन्तिम व्यक्ति की चिंता नहीं करेगी। वह तो केवल ताकतवर की ही चिन्ता करेगी। इसकी चिन्ता तो एकात्म मानववाद करेगा और इसी से अन्त्योदय होगा, इसी से उसकी खुशहाली संभव है तथा पूरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का यही मूलमंत्र है। पूरी नीति सकारात्मकता के सिद्धांत पर बनाई गई है और आज विश्व जिस नकारात्मकता में फँसा हुआ है, कोविड-19 की त्रासदी के कारण जो भय, उदासी एवं अवसाद का वातावरण है, विनाश और टकराव की स्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इस दौर से कोई अगर विश्व को बचा सकता है तो वह भारत का दर्शन ही बचा सकता है।

पिछले तीन दशकों में विशेषकर 1991 में खाड़ी युद्ध के बाद से विश्व में हमने अनेक मॉडल फेल होते देखे हैं। उनके दुष्परिणाम हम देख रहे हैं। चाहे हिंसा की बात हो, गरीबी की बात हो, धार्मिक कट्टरवाद की बात हो, जिसमें तुर्की से लेकर इराक, सीरिया, इरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, लेबनान जहाँ पर आईएसआईएस तालिबान आदि के कारण करोड़ों लोग शरणार्थी बने हुए हैं। यूरोप में बढ़ता आतंकवाद, नस्लवाद आदि समस्याओं के हल के लिए हमें भारत में तथा पूरी दुनिया में दीनदयाल उपाध्याय जी के अन्त्योदय के विचार को अंगीकार करने की आवश्यकता है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इसको पूरा महत्त्व दिया गया है क्योंकि एकात्म मानववाद और अन्त्योदय ही है जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है। विश्व शांति, विश्व कल्याण की बात करता है। भारत के हजारों साल पुराने सिद्धांतों पर खरी उतरने वाली यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इसे सफल बनाएगी।

दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्र की आत्मा से लेकर आज के सस्टेनेबल डिवेल्पमेंट गोल- 2030 जिसके अधिकतर बिन्दुओं पर, जिसमें जैविक खाद व व्यापार तक पर चिन्तन करते हैं। महोदय के मनन चिन्तन का क्षेत्र बहुत ही समग्र और व्यापक था। उनके अनुसार अर्थव्यवस्था सदैव राष्ट्र जीवन के अनुकूल हो जिसमें पालन-पोषण, जीवन की उन्नति और विकास, राष्ट्र की धारणा व भलाई के लिए जिन मूल संसाधनों की आवश्यकता होती है, उनका उत्पादन अर्थव्यवस्था का उद्देश्य और लक्ष्य होना चाहिए। एसडीजी में स्पष्ट किया गया है कि प्रकृति का अंधाधुंध दोहन नहीं होना चाहिए, यही तो दीन दयाल उपाध्याय जी कहते हैं। पश्चिमी देशों का चिंतन इच्छाओं को बढ़ाने और आवश्यकताओं की पूर्ति को अच्छा समझता है। इसमें मर्यादा का कोई महत्व नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य ऐसी अर्थनीति है जो उत्पादन के लिए बाजार ढूँढ़े या पैदा करे। पूरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति एसडीजी 2030 के लक्ष्य को पाने पर बल देती है, वहीं दीन दयाल उपाध्याय जी कहते हैं कि कमाने वाला खिलाएगा, जो जन्मा है वो खाएगा। अतः अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो सबके लिए भोजन के अधिकार की रक्षा और व्यवस्था करे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का एकात्मवाद यही कहता है। अन्त्योदय यही है कि गाँव आधारित, कृषि आधारित, हस्तकला, शिल्प आधारित, शिक्षा और कौशल को बढ़ावा दिया जाए, यही व्यवस्था अब होने वाली है। पूरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, नींव मजबूत करने की बात कहती है, एक आमूलचूल परिवर्तन की बात कहती है, सबका साथ सबका विकास की बात कहती है।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक

डॉ. योगेश वासिष्ठ

भारतीय स्वाधीनता के समय देश में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की कोई स्वीकृत योजना नहीं थी। शिक्षा के राष्ट्रीय ढाँचे और सभी चरणों की शिक्षा के सभी पहलुओं पर विचार कर नीति निर्धारण के लिए दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1964-66) आई तो भारत सरकार ने इसे राज्य सरकारों व विश्वविद्यालयों के पास विचारार्थ भेजा। देश के लगभग सभी भागों में विविध प्रकार के समूहों ने इस पर व्यापक चर्चा की। संसदीय समिति के द्वारा इस रिपोर्ट पर विचार विमर्श उपरान्त संसद के दोनों सदनों में भी विस्तृत चर्चा हुई। तदुपरान्त भारत सरकार ने 1968 में स्वतन्त्र भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रस्ताव दिया, पर इसे मई 1986 में जाकर लागू किया जा सका। उसके बाद अब दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रमुख अन्तरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में तैयार होकर भारत सरकार द्वारा जुलाई 2020 में पारित हुई है।

हम जानते हैं कि शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान को प्रभावित करने वाले सभी तत्त्वों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षक ही हैं। उनका निजी व्यक्तित्व, समस्त योग्यताएँ व व्यावसायिक क्षमताएँ शिक्षा क्षेत्र में किए गए सभी प्रयत्नों की सफलता के लिए उत्तरदायी हैं। सशक्त व प्रेरक शिक्षक ही छात्रों व राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम भविष्य सुनिश्चित करने में समर्थ हैं। इसी कारण भारतीय समाज में प्रारम्भ से ही शिक्षक का विशेष सम्मान रहा है और शिक्षा नीति भी इसका प्रबल समर्थन करती आई है। वर्तमान शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षण व्यवसाय में बेहतर लोगों को शामिल करने की प्रेरणा देते हुए शिक्षकों के प्रति आदर और सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करने की आकांक्षी है।

बेहतर शिक्षक तैयार करने की दृष्टि से चार वर्षीय एकीकृत बीएड कार्यक्रम में उत्कृष्ट छात्रों को ही प्रवेश दिए जाने, उनके लिए मेरिट आधारित छात्रवृत्ति शुरू करने, ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों को उनके स्थानीय इलाके में ही रोज़गार सुनिश्चित करने की सोच है तो ग्रामीण स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों के प्रोत्साहन स्वरूप स्कूल परिसर में या आसपास स्थानीय आवास का प्रावधान अथवा आवासीय भत्ते में वृद्धि का प्रस्ताव है। साथ ही शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों का समुदाय से बेहतर सम्बन्ध बनाने, उनमें छात्रों के प्रति अपनेपन की भावना विकसित करने सहित उन्हें विद्यार्थियों के रोल मॉडल रूप में प्रस्तुत करने हेतु अत्यधिक शिक्षक स्थानान्तरण की हानिकारक प्रैक्टिस को रोकने की बात हुई है। विशेष परिस्थितियों में ही मात्र ऑनलाइन सॉफ्टवेयर आधारित पारदर्शी स्थानान्तरण व्यवस्था स्थापित करने का सुझाव दिया गया है।

अच्छे शिक्षकों की भर्ती के लिए अनिवार्य टीईटी.

व शिक्षाशास्त्र की बेहतर परीक्षण सामग्री तैयार करने, उनकी नियुक्ति में शिक्षण के प्रति जोश और उत्साह जाँचने सहित कक्षा में पढ़ाने के प्रदर्शन आकलन की व्यवस्था बनाने पर बल है। छात्र की घरेलू भाषा में बातचीत करने की दृष्टि से स्थानीय भाषा के शिक्षक को महत्त्व दिया गया है। शिक्षकों की पर्याप्त संख्या सुनिश्चित करने के लिए विशेषतः कला, व्यावसायिक शिक्षा व भाषा शिक्षकों का कॉम्प्लेक्स स्कूल में साझा प्रयोग करने का प्रारूप सुझाया गया है। स्थानीय ज्ञान और विशेषज्ञता को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों/विशेषज्ञों को विशेष प्रशिक्षक (स्थानीय कला, व्यावसायिक शिल्प, उद्यमिता, कृषि आदि) बनाने को प्रोत्साहन दिया गया है। भविष्य में शिक्षकों की होने वाली रिक्तियों के दृष्टिगत तकनीक आधारित ऐसी व्यवस्था स्थापित करने का स्वप्न देखा गया है, जिससे सर्वत्र समान रूप से पर्याप्त शिक्षकों की उपलब्धता सम्भव हो सके।

स्कूली संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन करने, वहाँ पढ़ाई के अनुरूप वातावरण निर्मित करने के लिए शिक्षकों की क्षमता उस स्तर तक बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी बच्चे सीख रहे हैं। इस दृष्टि से सभी स्कूलों में पर्याप्त भौतिक संसाधन उपलब्धता सहित शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण में स्कूलों में कार्यस्थल पर सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर जागरूकता उत्पन्न की जाएगी, जिससे सभी शिक्षकों का इन आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना और वहाँ सभ्य व सुखद कार्य स्थिति बनना सुनिश्चित हो सके। शिक्षक अलग-थलग न रहकर अपने सर्वोत्तम व्यवहारों को साझा कर सकेंगे। उनका अभिभावकों व अन्य प्रमुख स्थानीय हितधारकों के साथ स्कूल प्रबन्धन समिति के माध्यम से सहयोग बढ़ेगा। शिक्षकों के गैर शिक्षण गतिविधियों में व्यतीत होने वाले समय पर चिन्ता करते हुए उन्हें इनसे रोकने सहित उनके शिक्षण अधिगम कार्यों पर ही ध्यान देने की भावना व्यक्त हुई है। शिक्षक व प्रधानाचार्य अपने स्कूलों में प्रभावी अधिगम और सभी हितधारकों के लाभार्थ एक संवेदनशील व समावेशी संस्कृति का निर्माण करें। शिक्षकों को अपनी कक्षाओं व छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए सर्वाधिक प्रभावी विधियों के चयन की स्वतन्त्रता हो, जिससे वे उनके सामाजिक व भावनात्मक पक्षों पर भी ध्यान दे सकें। अपने विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफल में वृद्धि करने वाली शिक्षण विधियों के लिए शिक्षक सम्मानित हों।

शिक्षक को निरन्तर सुधार करने, नवाचार करने और व्यावसायिक विकास के लिए विभिन्न स्तरों पर अवसर प्रदान किए जाने सहित उनसे प्रतिवर्ष 50 घंटे सीपीडी (सतत व्यावसायिक विकास) कार्यक्रम की अपेक्षा की गई है। उनके विचारों व सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफार्म तैयार किए जाएँगे। उन्हें बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के नवीनतम शिक्षणशास्त्र, अधिगम परिणामों के रचनात्मक और अनुकूल आकलन, योग्यता आधारित अधिगम और सम्बन्धित शिक्षणशास्त्र जैसे अनुभवात्मक शिक्षण, कला समेकित, खेल एकीकृत और कहानी आधारित दृष्टिकोण से युक्त किया जाएगा। शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए स्वयम्/दीक्षा जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि कम समय के भीतर अधिकाधिक शिक्षकों को मानकीकृत शिक्षण करवाना सम्भव हो सके। प्रधानाचार्यों के लिए भी नेतृत्व विकास के कार्यक्रम आयोजित होंगे। उनके सीपीडी कार्यक्रम में नेतृत्व और प्रबन्धन सहित विषयवस्तु और शिक्षण शास्त्र सम्बन्धी कार्यक्रम शामिल रहेंगे।

एनसीटीई विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से 2022 तक शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक विकास मानकों का मार्गदर्शक सेट तैयार करेगी, जिसमें विभिन्न स्तरों पर शिक्षक की भूमिका, आवश्यक दक्षताओं की अपेक्षाओं को शामिल किया जाएगा। इनके आधार पर राज्य सरकारें सहकर्मियों द्वारा की गई समीक्षा, उपस्थिति, समर्पण आदि बिन्दुओं पर आधारित बहु आयामी पैमाने तैयार करेंगी। वरिष्ठता की बजाय इन कसौटियों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों की पहचान कर, उन्हें पदोन्नति और वेतन वृद्धि दी जाएगी। नेतृत्व व प्रबन्धन के कौशलों को प्रदर्शित करने वाले शिक्षकों को योग्यता आधार पर बीआरसी, डाइट के साथ-साथ विभाग और मंत्रालय में अकादमिक नेतृत्व के अवसर भी सुलभ कराए जाएँगे। स्कूली शिक्षा के सभी चरणों में उच्चतम गुणवत्ता वाले शिक्षकों की आवश्यकता है, इसलिए किसी चरण को किसी अन्य की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं समझा जाएगा। यहाँ प्रत्येक दस वर्षों में इस परिवर्तित व्यवस्था की गुणवत्ता का आनुभविक विश्लेषण करने की महत्त्वपूर्ण बात भी कही गई है।

दिव्यांग बच्चों के शिक्षण हेतु सेवापूर्व शिक्षा में अथवा सेवाकाल के शुरुआती वर्षों में ऐसे छात्रों की विशेष आवश्यकताओं को समझने के लिए उपयुक्त कौशल सिखाने की दृष्टि से द्वितीयक विशेषज्ञता वाले पूर्णकालिक या अंशकालिक पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाए जाएँगे। महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों को बहुविषयक बनाकर 2030 तक उन्हें शिक्षक शिक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है, जिससे वे न केवल बीएड, एमएड और पीएचडी की उपाधि प्रदान करें अपितु उच्चतर गुणवत्ता की सामग्री के साथ-साथ शिक्षकों को शिक्षणशास्त्र में प्रशिक्षण भी दे सकें। इनमें शिक्षकों के लिए कुछ अन्य अल्प अवधि के सर्टिफिकेट कोर्स भी शुरू किए जा सकते हैं। स्थानीय व्यवसाय ज्ञान और कौशलों के अल्प अवधि के पाठ्यक्रम डाइट, बाइट सहित स्कूल कॉम्प्लेक्स में भी उपलब्ध करवाए जाएँगे, जिनमें प्रख्यात स्थानीय व्यक्तियों को मास्टर प्रशिक्षक रूप में नियुक्त किया जा सकेगा। शिक्षण के लिए चार वर्षीय एकीकृत बीएड अथवा सशर्त दो वर्षीय/एक वर्षीय बीएड होगी। ये कम अवधि के पाठ्यक्रम भी उन्हीं संस्थाओं के मान्य होंगे, जहाँ चार वर्षीय एकीकृत कोर्स हों। अपनी योग्यता बढ़ाने के

इच्छुक सेवारत शिक्षकों के लिए दूरस्थ शिक्षा द्वारा ऐसे संस्थान ही बीएड करवा सकेंगे। सभी बीएड कार्यक्रमों में जाँची परखी तकनीकों के साथ नवीनतम तकनीक शामिल होंगी। स्थानीय स्कूलों में जाकर व्यावहारिक प्रशिक्षण जारी रहेगा। संवैधानिक मूल्यों सहित पर्यावरण शिक्षा के प्रति संवेदनशीलता को एकीकृत किया जाएगा।

एनसीईआरटी विविध अन्तरराष्ट्रीय शिक्षण विधियों का अध्ययन, शोध, प्रलेखन व समेकन कर भारत में उपयोगी व व्यावहारिक विधियों की सिफारिश करेगी व उनका प्रशिक्षण देगी। समयानुरूप बदली आवश्यकताओं के दृष्टिगत नई शिक्षा नीति के आलोक में 2021 तक अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार होगी। जिसका बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप प्रत्येक 5-10 वर्षों में संशोधन किया जा सकेगा। अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए ऐसे अवमानक एकांगी संस्थान, जो शिक्षा के लिए गम्भीर नहीं, मात्र कमाई के लिए डिग्रियाँ बेच रहे हैं; उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही होगी, जिससे कि उच्चतर मानकों को निर्धारित किया जा सके। शिक्षक शिक्षा प्रणाली में अखण्डता, प्रभाविता और उच्चतर गुणवत्ता को बहाल करने के लिए अवमानक संस्थानों को जरूरत पड़ने पर बंद भी किया जा सकता है। वर्ष 2030 तक सभी एकल शिक्षक शिक्षा के संस्थानों को बहुविषयक संस्थानों में बदलने और केवल शैक्षिक रूप से सुदृढ़, बहुविषयक और एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम ही बनाए रखने की, इस नीति में आकांक्षा

व्यक्त हुई है; जिनमें सेवापूर्व शिक्षक पाठ्यक्रमों में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा मानक आधार पर आयोजित उपयुक्त विषय और योग्यता परीक्षणों के माध्यम से होगा। शिक्षकों के अवधारणात्मक विकास को मजबूती प्रदान करने के लिए अपने विषय से अलग विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त संकाय सदस्यों को शिक्षक शिक्षा संस्थानों में आकर्षित करने की भी कल्पना की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विद्यालयी पक्षों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सुझावों को क्रियान्वित करने के लिए विभाग द्वारा दस समितियों का गठन किया गया, जिसमें शिक्षक मामलों की समिति निदेशक एससीईआरटी की अध्यक्षता में बनी। मुझे भी इस समिति का सदस्य बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसने विभाग को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में निम्न अनुसार कुछ प्रमुख बातें कही हैं -

1. श्रेष्ठ छात्रों को शिक्षण क्षेत्र में आकर्षित करने के लिए चार साल का एकीत्र बीएड पाठ्यक्रम पास करने के बाद नौकरी का आश्वासन रहे। इसके लिए शिक्षक आवश्यकता अनुसार ही श्रेष्ठ छात्रों को एनडीए (सेना) की भाँति प्रवेश दिया जा सकता है।

2. शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में शामिल कक्षा शिक्षण की वीडियोग्राफी की जाए, जिसे अभ्यर्थियों के चयन में कदाचार को नियन्त्रित करने के लिए सार्वजनिक प्लेटफार्म पर अपलोड किया जा सकेगा; जहाँ आवेदक सहित जनता भी इसे देख सकती है।

3. सभी स्कूलों में क्लर्कों, चतुर्थ श्रेणी की सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए। संकुल स्तर पर कॉम्प्लेक्स विद्यालय में उप प्राचार्य का पद सृजित किया जाना चाहिए। खंड स्तर पर अनुभाग अधिकारी और कानूनी सलाहकार लगें। एक हजार से अधिक संख्या वाले विद्यालयों/संकुल स्तर के विद्यालयों में रख-रखाव सहायक की नियुक्ति हो, जिसकी न्यूनतम योग्यता सिविल इंजीनियरिंग डिप्लोमा रखी जाए।

4. सभी शिक्षकों को समय पर पदोन्नति, एसीपी आदि मिलें, कैशलेस चिकित्सा सुविधाएँ मिलें। शिक्षकों की भलाई के लिए 40 वर्ष की आयु के बाद सभी शिक्षकों के लिए एक नियमित (वार्षिक) स्वास्थ्य जाँच हो। शिक्षकों की विद्यालय वार्षिक योजना के लिए बैठक अवश्य हों।

5. दीक्षा की तरह एक विशेष पोर्टल विकसित किया जा सकता है, जहाँ शिक्षक समुदाय, प्रशासक अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को अपलोड करेंगे।

6. राज्य स्तरीय चयन समिति की भाँति पारदर्शी मानदंडों के साथ जिला और ब्लॉक स्तरीय समितियों का गठन कर समान पद्धति पर चयन द्वारा पुरस्कार दिया जाए। शिक्षक को पुरस्कार के लिए आत्म नामांकन की छूट रहे, लेकिन मूल्यांकन छात्रों, स्कूल प्रमुख, एसएमसी आदि द्वारा किया जा सकता है। इस निष्पक्षता के कारण अधिकतम शिक्षकों का विश्वास बढ़ेगा।

7. अध्यापक प्रशिक्षक का आवश्यक रूप से अलग कैडर बने। योग्यताधारकों को विद्यालय से कॉलेज में पदोन्नति का भी अवसर दिया जाए।

8. शिक्षकों को शिक्षा विभाग में सर्वोच्च पद पर पदोन्नत किया जाना चाहिए जैसा कि पिछली सदी के अन्तिम दशक तक प्राथमिक शिक्षा निदेशक कोई शिक्षक ही होता था (अब भी इसरो में केवल वैज्ञानिक ही सर्वोच्च पद पर पहुँचते हैं)। अतः एनसीईआरटी की तर्ज पर शिक्षाविद को ही विभागीय मुखिया का पद दिया जाए।

9. शिक्षकों का एक पूल (अतिरिक्त 10 प्रतिशत की भर्ती की जा सकती है) जिन्हें ब्लॉक/कॉम्प्लेक्स स्तर पर पोस्टिंग दी जा सकती है, जहाँ से उन्हें प्रशासनिक अधिकारी (DEO, DEEO, BEO आदि) द्वारा किसी भी स्कूल में जहाँ शिक्षकों की कमी है, प्रतिनियुक्त किया जा सकता है।

10. शिक्षकों को अनुमोदित करने के लिए जिला स्तर पर बोर्ड स्थापित किए जाएँ। इन बोर्डों में विश्वविद्यालयों, उपायुक्त, जिला शिक्षाधिकारी, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा निदेशकों सहित डाइट, निजी स्कूलों के प्रबंधन आदि के प्रतिनिधि हो सकते हैं - विस्तृत दिशानिर्देश राज्य स्तर पर बनाए जा सकते हैं। यह बोर्ड अनुमोदित शिक्षकों का एक पूल बना सकता है, जिसे शिक्षा को समर्पित सार्वजनिक पटल पर डाला जाए। निजी स्कूल सहित सरकारी विद्यालय भी इस पूल से अनुमोदित शिक्षकों की आवश्यकतानुसार नियुक्ति करने में सक्षम होने चाहिए।

11. वर्ष 2023-25 तक ब्लॉक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र (विशेष रूप से मेवात कैडर) में शिक्षक आवास का प्रावधान हो। हरियाणा के जोन 5, 6, 7 में काम करने वाले शिक्षकों को ग्रामीण क्षेत्र भत्ते (मूल वेतन का 8 प्रतिशत) का प्रावधान हो।

12. भाषा शिक्षकों को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची अनुसार अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ सीखने को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके लिए उन्हें एनसीईआरटी के क्षेत्रीय संस्थानों से एक वर्षीय डिप्लोमा करवाकर उन भाषाओं का शिक्षण कॉम्प्लेक्स स्तर पर शुरू किया जा सकता है। इन भाषाओं के सफलतापूर्वक कोर्स सम्पन्न कर विद्यालयों में इन्हें पढ़ाने के लिए ऐसे शिक्षकों को प्रोत्साहित करने हेतु एक अतिरिक्त वेतनवृद्धि का प्रावधान किया जाना चाहिए।

13. शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा व्यापार पर पूर्णतः रोक लगे और सरकारी व शिक्षा को मिशन मानने वाली संस्थाओं में ही छात्र शिक्षकों का प्रवेश सम्भव हो पाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप उक्त अनुसार नीति क्रियान्वयन किए जाने से न केवल शिक्षक का सामर्थ्य बढ़ेगा अपितु विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था भी मज़बूत होगी। राष्ट्रीय और सामाजिक पुनर्संरचना के लिए प्रतिबद्ध ऐसे शिक्षक सन्तुष्ट भाव से देश के भावी नागरिकों के जीवन और चरित्र को निर्मित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे। हमारा देश अपने शिक्षकों के दम पर फिर से विश्वगुरु बन सकेगा।

अध्यापक शिक्षा विभाग
एससीईआरटी, हरियाणा, गुरुग्राम

नई शिक्षा नीति से सँवरेगी पूर्व प्राथमिक शिक्षा

दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

'एनईपी-2020' देश की शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की नई इबारत है, ऐसा कहा जा रहा हैं। इसमें शैक्षिक ढाँचे को नए सिरे से इक्कीसवीं सदी की जरूरत के लिहाज से विकसित किया गया है। इसमें एक बात जो खास तौर से ध्यान खींचती है, वह है शिक्षा की मुख्य धारा में पूर्व प्राथमिक शिक्षा का समायोजन। इससें नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति को एक जमीनी आधार मिलता दिख रहा है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक प्राचीन अवधारणा है। ईसा पूर्व चौथी सदी के दार्शनिक प्लेटो की 'शिक्षा योजना' में छह वर्ष की आयु सीमा को बच्चों के शारीरिक विकास, देशप्रेम व नैतिक मूल्यों की स्थापना, कल्पनाशक्ति के विकास तथा संगीत साधना के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है। सत्रहवीं सदी के शिक्षाशास्त्री को मेनियस के अनुसार, जन्म से छह वर्ष की आयु के मध्य सभी कलाओं की जड़ें आरम्भ होती हैं।

फ्रेंच पादरी जोहान फ्रेंड्रेरिक ओवरलिन (सन् 1740-1826) वह पहला व्यक्ति था, जिसने अपनी सहायिका लुई शेलपा के साथ मिलकर पहली पूर्व बुनियादी शिशुशाला फ्रांस के 'अलसेस' नामक स्थान पर खोली थी। यह छह वर्ष से कम आयु के बच्चों की खेल और आनन्द पर आधारित संस्था थी। आगे चलकर 'किण्डरगार्डन पद्धति' के जन्मदाता, जर्मन शिक्षाशास्त्री फ्रोबेल ने सन् 1838 मे जर्मनी के 'ब्लेकेनवर्ग' नामक स्थान पर एक शिशु उद्यान कायम किया यह छोटे बच्चों (2 से 5 वर्ष) के सामूहिक क्रिया-कलाप और खेल कूद पर आधारित शिक्षा की शाला थी।

समाज सुधारक और उद्योगपति रॉबर्ट ओवन ने (सन् 1771-1848) में इग्लैंड में ऐसी शालाओं की शुरुआत की। उसका मोटो था- 'बच्चे पुस्तकों से तंग किए जाने के लिए नहीं होते। उन्हें आसपास की वस्तुओं के गुणों के विषय में भी सिखाया जाना चाहिए।' बाद में मार्गरिट मैकमिलन और रेचेल मैकमिलन नामक दो बहनों नें रोबर्ट ओवन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया. उन्होंने लंदन की मलिन बस्तियों के शिशुओं के लिए स्वयं तो नर्सरी शालाएँ खोली ही, ऐसे बच्चों के लिए खुली और स्वच्छ वायु में नर्सरी स्कूल के लिए आन्दोलन भी चलाया। प्रबल जनाकांक्षा के फलस्वरूप सन् 1918 में इग्लैंड में 'फिसर एक्ट' पास हुआ, जिसके तहत 2 से 5 वर्ष के बच्चों के लिए नर्सरी शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। इटैलियन शिक्षाशास्त्री मारिया माण्टेसरी (सन् 1870-19-52) को इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय दिया जाता है।

अपने देश में सन् 1885 में ईसाई मिशनरी संगठनों ने पूना और लखनऊ के आसपास कुछेक नर्सरी स्कूलों की स्थापना किया था। सन् 1920 से 30 के मध्य थियोसोफिकल सोसाइटी द्वारा दक्षिण भारत में इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ था। इस मामले में एक महत्त्वपूर्ण नाम गिजुभाई बधेका का है। उन्होंने सन् 1926 में भावनगर (गुजरात) में मांटेसरी शिक्षा पद्धति से प्रेरणा लेकर प्रकृति के अवलोकन पर आधारित कुछ शिशुशालाओं की स्थापना की थी।

भारत सरकार द्वारा नियुक्त 'सार्जेंट कमेटी' की रिपोर्ट सन् 1944 में आयी थी। इसका आधुनिक भारत के शिक्षा के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। इसमे पिछड़े क्षेत्र के बच्चों के लिए प्री-प्राइमरी शिक्षा पर जोर दिया गया था। एक साल बाद सन् 1945 में गांधी जी ने 'समग्र जीवन शिक्षा योजना' प्रस्तुत किया था, इसमें पूर्व प्राथमिक शिक्षा भी एक घटक है। इसकी महता को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने कहा था- 'यह (गर्भकाल से 6 वर्ष) मनुष्य की सारी शिक्षा की नींव है। इसी के द्वारा बच्चे के चरित्र के स्थायी संस्कार पड़ते हैं।

'समग्र जीवन शिक्षा योजना' में बच्चे की शिशुशाला में ठहराव की आयु (2 से 6 वर्ष) हैं। इस आयु वर्ग की आरम्भिक अवस्था में शिशुओं का पेशीय नियंत्रण और अंगों का आपसी समन्वय पूर्ण नहीं होता। इनको समूह में रखकर छोटी-छोटी गतिविधियों और खेलों द्वारा अंगों का समन्वय, भाषा विकास, रचनात्मकता, पेशीय नियंत्रण और समाज स्वीकृत व्यवहार के विकास के सहज अवसर उपलब्ध कराए जायें तो उनके अन्दर छिपी सृजनात्मकता को गति और दिशा तो मिलती ही हैं, उनमें सामंजस्य और दायित्व बोध का भी प्रस्फुटन होने लगता हैं। गाँधी जी की शिशुशाला में बच्चों के लिए स्थानीय खेल, व्यायाम, नृत्य, सामूहिक गान आदि सामाजिक व मानवीय गुण विकसित करने करने के क्रिया कलाप निर्धारित थे। अनुशासन और सामूहिकता के विकास पर विशेष बल था। इन्द्रिय प्रशिक्षण के लिए विविध सस्ते देशी सामान- कागज़, गोंद, रंग, गत्ता,

रूई, कंकड़, मिट्टी, खुरपा, अटेरन आदि से तमाम क्रियात्मक कार्यों का प्रावधान था।

उन दिनों गाँधी जी के प्रयास से बिहार, बंगाल, राजस्थान, गुजरात, वर्धा आदि प्रान्त में शिशु शालाएँ खुलीं, लेकिन स्वतंत्रता संघर्ष के तत्कालीन उथल-पुथल भरे माहौल में यह कार्य आन्दोलन का स्वरूप नहीं ग्रहण कर पाया था। आज़ादी के बाद प्रथम पंचवर्षीय योजना (सन् 1951-56) में सुदूर और अति पिछड़े क्षेत्रों में कुछेक बालबाड़ियों का गठन किया गया था। सन् 1960 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित 'चिल्ड्रन मॉनिटरिंग कमेटी की रिपोर्ट में 'पूर्व प्राथमिक शाला' की ढेरों इकाइयों की स्थापना का मुद्दा जोर-शोर से उठाया गया था। बहुचर्चित 'कोठारी शिक्षा आयोग' (सन् 1964-66) के अध्यक्ष डीएस कोठारी ने भी पूर्व बुनियादी शिक्षा को एक खास जरूरत के रूप में रेखांकित किया था। इस आयोग की रिपोर्ट में बाल सेविकाओं के प्रशिक्षण की रूपरेखा पर भी महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये गए थे।

अभी भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत 'समन्वित बाल विकास परियोजना' के स्तर पर 'आँगनबाड़ी केन्द्र' के रूप में बुनियादी शालाएँ चलाई जाती हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा का यह क्षेत्र बहुत ही नाज़ुक है। इसकी शिक्षिका/ बालसेविका के लिए फ्रोबेल, मैकमिलन बहनें, गाँधी जी, मारिया माण्टेसरी सभी ने कुछ मानक निर्धारित किये हैं। संक्षेप में कहा जाये तो पूर्व प्राथमिक शाला की शिक्षिका में माँ सदृश्य ममता व स्नेह, सामाजिक कार्य में अभिरुचि, नम्रता, कठोर श्रम करने की आदत, राष्ट्रीयता की भावना, उत्तम चरित्र, कल्पनाशीलता व सृजनात्मकता होनी चाहिए, मगर इस दृष्टि से इन केन्द्रों की कार्यकत्री और सहायिका का न चयन होता है, न प्रशिक्षण! इसके अलावा इन पर अन्य कई तरह के दायित्व होते हैं।

सम्पन्न परिवार के बच्चों के लिए प्ले वे मेथड स्कूल और अंग्रेजी माध्यम के नर्सरी की भरमार है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्र और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लाखों बच्चे इस शैक्षिक प्रकल्प से वंचित हैं। आँगनबाड़ी केन्द्रों का कोई पुरसा हाल नहीं है। 'सर्व शिक्षा अभियान' में प्रत्येक न्याय-पंचायत में सिर्फ एक विद्यालय 'स्कूल रेडीनेस प्रोग्राम' के अंतर्गत ढाई से पाँच साल तक के बच्चों के लिए विकसित किया गया है। कुल मिलाकर एक लंबे समय तक 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा' मुख्यधारा की शिक्षा में स्वीकृति और मान्यता के लिए प्रतीक्षा सूची में पड़ी धक्के खाती रही। अब जाकर 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' में इसकी खोज-खबर ली गई है। शिक्षा निश्चित रूप से मूल्यपरक, समय सापेक्ष, गुणवत्तापूर्ण और उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए। मगर यह शून्य में नहीं हो सकता। इसके लिए बौद्धिक और मानवीय संसाधन का दूरगामी लक्ष्य के अनुकूल समुचित प्रबन्धन जरूरी होता है।

आज का जो दौर है, उसमें उसमें अपसंस्कृति के झोकों से परिवार सदाचार और नैतिकता के दावे खोखले हो चुके हैं। बच्चों को देने के लिए उनके पास क्या है? बच्चा एक उजाड़ में पल रहा है, जहाँ अश्लीलता, हिंसा और अमर्यादित जीवन का नंगा नाच है। ऐसी स्थिति में सरकारी शिक्षातंत्र ने बचपन को स्वस्थ माहौल देकर मासूम बौद्धिक सम्पदा के संवर्द्धन और संरक्षण का जो दायित्व लिया है, वह देर से उठाया गया, पर समय सापेक्ष और माकूल कदम है। इसका हर स्तर पर स्वागत किया जाना चाहिए, साथ ही यह कामना भी कि 'एनईपी-20' के इस प्रावधान का क्रियान्वयन ठीक से और शीघ्र हो जाए।

ग्राम व पोस्ट-जासापारा
वाया-गोसाईगंज-228119
सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

हर्षोल्लास से मनाई नेता जी की 125वीं जयंती

शहीद सिपाही पृथ्वी सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रत्तेवाली में नेता जी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती प्रथम पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई। सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. अनु गोयल, प्रधानाचार्य साधना व इतिहास की प्रवक्ता प्रिया बेनीवाल ने पुष्प अर्पित करके नेता जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। वहीं विद्यार्थियों ने कविता व लेख पढ़कर उनके जीवन से शिक्षा लेने की प्रेरणा ली।

इस अवसर पर डॉ. अनु गोयल ने कहा कि पराक्रम का अर्थ है- वीरता व सामर्थ्य। भाव यही है कि हम जो भी कार्य कर रहे हैं अगर पूरी निष्ठा व सामर्थ्य से करेंगे तो इससे हमारा देश प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करेगा। उन्होंने बताया कि नेता जी को भारत माता से बहुत लगाव था। उन्होंने अपनी मंजिल अपने पुरुषार्थ से हासिल की।

प्रधानाचार्या ने कहा कि नेता जी सुभाष चन्द्र बोस एक ऐसे युवा रहे जो अपनी भुजाओं की ताकत से जमीन को चीरने का माद्दा रखते थे। उड़ीसा के कटक में नेता जी का जन्म हुआ। बंगाल के कलकत्ता में कॉलेज में पढ़ाई की और ब्रिटेन में आईसीएस अफसर बनकर अपनी काबलियत का लोहा मनवाया।

प्रिया बेनीवाल ने बताया कि नेता जी को असफलताएँ बार-बार मिलीं, मगर उन्होंने इन असफलताओं को अपने संघर्ष की विजय-गाथा में परिवर्तित कर दिया।

इस अवसर पर ग्यारहवीं की छात्रा शिखा ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला, छात्रा आरजू ने कविता पाठ किया। नौवीं कक्षा के छात्र हर्षदीप, तानिया, पलक, चाँदनी व मीनाक्षी ने उनका चित्र बनाया व स्लोगन लिखे।

-सुमन शर्मा
प्राध्यापिका अर्थशास्त्र, रावमा विद्यालय रत्तेवाली
जिला- पंचकूला, हरियाणा

खुलने लगे स्कूल, हो न जाये भूल

प्रियंका सौरभ

बिना परीक्षा कॉलेजों और स्कूलों की बड़ी कक्षाओं के छात्रों को 'कोरोना सर्टिफिकेट' देना कोई बेहतर कदम नहीं है। कोरोना काल में वर्चुअल कक्षाओं ने इंटरनेट को भी शिक्षा की महत्त्वपूर्ण कड़ी बना दिया है लेकिन हमने ये भी जाना कि देश में एक बड़े वर्ग के पास न तो स्मार्ट फोन है और न ही कम्प्यूटर और न ही इंटरनेट की सुविधा। जिस से हमें ये पता चला कि संकट की घड़ी में ऑनलाइन शिक्षा सही है, लेकिन इसे परम्परागत ज्ञान की कक्षाओं का विकल्प नहीं बनाया जा सकता।

1 जनवरी से केरल, कर्नाटक और असम के स्कूलों को दोबारा से खोला गया है। बिहार सरकार के आदेशानुसार 4 जनवरी 2021 से राज्य भर के सभी सरकारी स्कूलों और कोचिंग सेंटरों को खोल दिया गया। महाराष्ट्र में 9वीं से 12 वीं कक्षा के छात्रों के लिए 4 जनवरी से स्कूलों को खोला गया। इनमें कोविड-19 दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करने की बात कही। उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, झारखंड और सिक्किम में पहले से ही स्कूल आंशिक रूप से खुल चुके हैं। हालाँकि कुछ राज्यों ने अभी स्कूल नहीं खोलने का फैसला लिया है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की सरकार का कहना है कि जब तक कोविड-19 वैक्सीन नहीं आ जाता, तब तक स्कूल खोलना सही नहीं है। मुंबई में कोरोना के नए स्ट्रेन को देखते हुए 15 जनवरी तक स्कूल बंद रखने का फैसला किया गया है। पश्चिम बंगाल में इस साल न तो माध्यमिक और उच्च माध्यमिक की परीक्षाएं होंगी, न ही स्कूल खुलेंगे।

अब जब धीरे धीरे स्कूल, कॉलेजों को खोला जा रहा है, तो एहतियात बरतने की ज़रूरत है। सावधानियाँ बरतनी होंगी, क्योंकि कोरोना महामारी अभी खत्म नहीं हुई है। देश भर के विश्वविद्यालयों और स्कूलों को मार्च के मध्य में बंद कर दिया गया था, जब केंद्र सरकार ने कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने से रोकने के उपायों के तहत देशभर में शिक्षण संस्थान बंद करने की घोषणा की थी। उसके बाद, 25 मार्च को देशव्यापी लॉकडाउन लागू किया गया। सरकार ने 8 जून से अनलॉक के तहत धीरे-धीरे प्रतिबंधों को कम करना शुरू कर दिया। महामारी के बीच शिक्षण संस्थाओं को खोलने को लेकर देश भर में कुछ विरोध भी है जबकि कई लोगों का विचार

है कि सुरक्षा कदमों के साथ विद्यालयों और कॉलेजों का खोला जाना खास तौर पर ग्रामीण इलाकों में जरूरी हो गया है क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा ज्यादातर नदारद है जिससे उनके मज़दूरी करने के मामले भी सामने आए हैं।

कोविड-19 के प्रसार पर अंकुश लगाने के लिए दुनिया भर में स्कूलों को बंद करने से कई स्वास्थ्य जोखिमों का पता चला है, जिसमें सबसे अधिक बच्चों पर प्रभाव है। बच्चे स्कूल के भोजन से चूक गए। उन पर मानसिक स्वास्थ्य के नकारात्मक प्रभाव देखे गए। नेशनल काउंसिल फॉर डिसीज कंट्रोल के डैशबोर्ड पर इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) के आंकड़ों के अनुसार, भारत में कोविड- 19 के 11.89% मामले 20 से कम उम्र के हैं। भारत में स्कूल क्लोजर ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में नामांकित 247 मिलियन बच्चों और 28 मिलियन बच्चों को प्रभावित किया है जो आंगनवाड़ी केंद्रों में प्री-स्कूल शिक्षा में भाग ले रहे थे। कोविड- 19 ने नवजात मृत्यु दर (एनएमआर) और शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) में भारत द्वारा किए गए प्रयास के लिए गंभीर खतरा पैदा किया है, जिसने हाल के वर्षों में सुधार देखा। देश भर के सरकारी स्कूलों ने पानी की गुणवत्ता, स्वच्छता और स्वच्छता सुविधाओं तक बेहतर पहुँच की की पहले से ही कमी है, वे बंद हैं और सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

अब जब छात्र और शिक्षक स्कूल लौटते हैं तो उनकी अधूरी शिक्षा के साथ स्कूल समुदायों के स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान देने के लिए तैयार होना होगा। ये एक अलग तरह की चुनौती होगी। साफ़-सफाई के साथ उनके लर्निंग गैप को रोटेशन के साथ पूरा करना बहुत बड़ी चुनौती होगी। छात्रों के पास चार माह का समय है। इस वर्ष बदले पैटर्न में परीक्षाएँ होंगी, क्योंकि दसवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए 30 फीसदी सिलेबस कम किया गया है। घटाए गए सिलेबस पर ही बोर्ड की परीक्षाएँ ली जाएँगी। अभिभावकों की चिंता यह भी है कि इन परीक्षाओं से पहले अलग-अलग शिक्षा बोर्डों से जुड़े स्कूल प्री बोर्ड परीक्षाएँ लेने की तैयारी कर रहे हैं। प्री बोर्ड परीक्षाएँ ऑनलाइन ली जाएँगी।

अभिभावकों को इस समय बच्चों को केवल स्कूली परीक्षा के लिए तैयारी करने में भरपूर सहयोग तो देना ही चाहिए, साथ ही जीवन की चुनौतियों का सामना करने की सीख भी देनी चाहिए। दसवीं और बारहवीं की परीक्षाएँ जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ होती हैं। ये परीक्षाएँ छात्रों का भविष्य तय करती हैं। किसी ने क्षेत्र में आगे बढ़ना है, ये परीक्षाएँ ही तय करती हैं। बिना परीक्षा के छात्रों को पास करना उनके भविष्य से खिलवाड़ होगा। हमें स्कूलों को आखिर खोलना ही होगा वरना पहले से ही चल रही शिक्षा असमानता की खाई और बढ़ जाएगी।

दुनिया भर के आँकड़े देखें तो बच्चों और किशोरों में 9 में से 1 में कोविड -19 संक्रमण की सूचना है। यह संख्या इस मिथक को तोड़ती है कि बच्चे इस बीमारी से बमुश्किल प्रभावित होते हैं, जोकि महामारी के रूप में प्रचलित है। लेकिन प्रमुख सेवाओं में रुकावट और गरीबी की दर बढ़ जाना बच्चों के लिए सबसे बड़ा खतरा है और संकट लंबे समय तक बना रहता है तो इसका गहरा असर बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और भलाई पर पड़ता है। इस दौरान बच्चों की कमजोरियाँ बढ़ गईं, क्योंकि स्वास्थ्य सेवाएँ बाधित हुईं और स्कूल बंद रहे, जिससे वंचित बच्चों के लिए स्कूलों में बच्चों को मुफ्त मिड-डे मील दिया जाता है। बच्चों को स्कूल के अंदर अच्छा वातावरण मिले जिससे ये कोरोना के प्रभाव से बच सकें और पढ़ाई भी कर सके। फिर भी हमें पूरी एहतियात रखनी होगी ताकि स्कूल खुलने के साथ-साथ हम कोई बड़ी भूल न कर बैठें।

रिसर्च स्कॉलर, कवयित्री
स्वतंत्र पत्रकार एवं स्वतंत्र स्तंभकार

रहना ज़रा संभल के

कोविड के बाद बच्चो,
रहना ज़रा संभल के।
दो गज की रखना दूरी,
चलना थोड़ा-सा बचके।
अब स्कूल खुल रहे हैं,
चेहरे भी खिल रहे हैं।
साथी सखा सहपाठी,
एक दूजे से मिल रहे हैं।
खेलो न प्यारे बच्चो,
आपस में घुल मिल के। कोविड के....
मुँह से न मास्क हटाना,
संग-संग नहीं है खाना।
हाथों में सेनेटाइजर,
तुम बार-बार लगाना।
अपनी किताबें पढ़ना,
न कॉपी अदल-बदल के। कोविड के....
कुछ दिन की सावधानी,
मत कर बैठना नादानी।
यह दौर बड़ा कठिन है,
कोरोना की शैतानी।
गुरुजन यही सिखाते,
चलना नहीं मचल के। कोविड के....

नरेंद्र सिंह नीहार,
ए-67-बी, दुर्गा विहार
नियर खानपुर, नई दिल्ली-110080

कीर्तिमान रचता सौंगल विद्यालय

राणा संजय

मशहूर शिक्षाविद् क्रो एण्ड क्रो के अनुसार कोई समुदाय व्यर्थ में किसी बात की आशा नहीं कर सकता। यदि वह चाहता है कि उसके तरुण व्यक्ति अपने समुदाय की भली भांति सेवा करें तो उसे उन सब शैक्षिक संसाधनों को जुटाना चाहिए जो तरुण व्यक्तियों के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से आवश्यक हैं। कुछ ऐसी ही सोच को लेकर हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग दिन-रात प्रयत्नशील है। सभी स्कूल अधिकारी व योग्य अध्यापक गण अपनी सामर्थ्य अनुसार इस ज्ञान यज्ञ में आहुति डाल रहे हैं। परंतु इससे भी एक कदम आगे बढ़कर कुछ विद्यालय और अध्यापकगण अपनी मेहनत और दूरदर्शिता से दूसरों के लिए एक नजीर बन जाते हैं। ऐसा ही एक विद्यालय है- राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सौंगल।

हरियाणा राज्य के कैथल जिले के गाँव सौंगल में स्थापित यह विद्यालय आज कथित बड़े-बड़े निजी स्कूलों को सीधे टक्कर दे रहा है, जबरदस्त ख्याति प्राप्त कर चुका है। शिक्षा के इस वट वृक्ष का अंकुरण वर्ष 1945 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में हुआ। वर्ष 1966 में उच्च विद्यालय के रूप में विकसित होकर और वर्ष 2004 में इसने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के रूप में वर्तमान रूप में विकास प्राप्त किया। सुंदर भवन, हरा-भरा साफ-स्वच्छ

और पावन वातावरण में ये विद्यालय निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। पहले पूर्व प्रभारी प्रधानाचार्य श्री रघुवीर सिंह ने विद्यालय में सुधार का सपना देखा और इस दिशा में अपने प्रयास शुरू किए, उनके बाद प्रभारी बने कृष्ण शर्मा माजरा नंदकरण ने इन प्रयासों को और गति दी और वर्तमान प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार कैंदल जी ने सुधार के सपने को साकार करने के लिए अपनी पूरी सामर्थ्य लगा दी।

सबसे पहले भौतिक सुविधाओं और सौन्दर्यकरण की तरफ ध्यान दिया गया। एक बड़ी समस्या यह थी कि जमीन के थोड़ा ही नीचे कंकड़ों की एक सख्त परत थी जो पेड़-पौधों को होने नहीं देती थी। इसके लिए सभी अध्यापकों ने अपनी जेब से ट्रैक्टर से पेड़ों के लिए खड्डे तैयार करवाए। नर्सरी से बोतल पाम, अशोक और फूलों के पौधे खरीदे गए। सभी अध्यापकों और बच्चों ने मिलजुल कर इन पेड़-पौधों को लगाया। स्कूल का प्रार्थना सभा स्थल कच्चा था। जरा सी बारिश हुई नहीं कि हर तरफ कीचड़ ही कीचड़। प्रार्थना करवाने की कोई जगह ही नहीं बचती थी। ऐसे में सरपंच श्री राजेश शर्मा जी और उनके भाई सतीश शर्मा जी से मदद लेने का निर्णय लिया गया। सरपंच महोदय और पंचायत सदस्यों से मिल कर समस्या उनके सामने रखी गई। मामला लाखों के खर्च का था तो कई-कई बार निवेदन किया गया और आखिरकार सफलता हाथ लगी। सरपंच साहब द्वारा प्रार्थना सभा स्थल को रंगबिरंगी ब्लॉक से पक्का कर दिया गया। स्कूल से धूल-मिट्टी और कीचड़ का सफाया हो गया। बाद में एक ब्लॉक समिति सदस्य और सरपंच महोदय से स्कूल का सारा रास्ता भी ब्लॉकों से पक्का करवा लिया गया।

अध्यापकगण और बच्चों द्वारा ही स्कूल में दो पार्कों का निर्माण भी किया गया। जब ये सभी कार्य चल रहे होते थे तो स्कूल में सभी में जबरदस्त उत्साह देखने को मिलता था। एक उत्सव जैसा माहौल रहता था। प्राध्यापक संजय राणा, कृष्ण कुमार माजरा व बलबीर सिंह ने अनुशासन और अतिरिक्त कक्षाओं के माध्यम से शैक्षिक माहौल को बदल कर रख दिया।

अनुकरणीय

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सौंगल दूसरे स्कूलों के लिए आदर्श प्रस्तुत कर रहा है। खेल हों या सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्कूल का प्रदर्शन हमेशा बेहतर रहा है। बोर्ड कक्षाओं के बेहतरीन परीक्षा परिणाम इस विद्यालय की विशेषता है। पहले स्कूल की छात्रा अन्नू सुपुत्री रामफल का हरियाणा के सभी स्कूलों में प्रथम स्थान प्राप्त करना और अब बारहवीं कक्षा में स्कूल का पूरे हरियाणा में प्रथम आना वास्तव में ही अनुकरणीय बात है। आज के समय में जब गिरती हुई छात्र संख्या सरकारी स्कूलों की बड़ी समस्या है, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सौंगल एक आशा की किरण है, जहाँ प्रधानाचार्य और अध्यापकों की मेहनत से हर वर्ष छात्र संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। प्रधानाचार्य और सभी अध्यापकगणों को साधुवाद।

दलीप सिंह
जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी
कैथल, हरियाणा

अध्यापकों की ओर से एक विशेष प्रयास और किया गया। स्कूल के बच्चों से ही गाँव के ऐसे बच्चों की लिस्ट बनवाई गई जो पढ़ाई में बेहद होशियार थे और निजी स्कूलों में पढ़ते थे। फिर अध्यापकों की टीम उन बच्चों के घरों में जाकर उनके माता-पिता को उन्हें सरकारी स्कूल में पढ़ने के लिए प्रेरित करती। अध्यापकों की तरफ से उन बच्चों की बेहतर पढ़ाई की पूरी जिम्मेवारी ली जाती, ऐसा कई-कई दिन तक लगातार किया जाता। कहीं माता-पिता इसके लिए तैयार नहीं थे तो कहीं बच्चे। खैर, नेक नियति से सारे काम सिद्ध होते हैं और यही हुआ। निजी स्कूलों के बहुत से होनहार विद्यार्थियों को विद्यालय में लाने में अध्यापक सफल रहे।

आज स्थिति ये कि प्राध्यापक राजेश शर्मा, कुलदीप सिंह, कृष्णदत्त, बलराज सिंह, मामला राम, सुशील कुमार ,सतबीर सिंह, श्रीमती सन्तोष देवी और मिडल हैड महाबीर सिंह की कड़ी मेहनत से ये विद्यालय शिक्षा के हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। अनुशासन हो, खेल-कूद हो या सांस्कृतिक कार्यक्रम या फिर बोर्ड परीक्षा परिणाम विद्यालय ने बेहतरीन परिणाम प्राप्त करके दिखाए हैं। वर्ष 2016-17 में स्कूल की छात्राओं ने लीगल लिटरेसी कार्यक्रम में, स्किट में राज्य भर में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

वर्ष 2017-18 में बारहवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में 12 मैरिट के साथ-साथ विद्यालय की एक होनहार छात्रा, गरीब मजदूर की बेटी अन्नु सपुत्री श्री रामफल ने राज्य भर के सरकारी स्कूलों में प्रथम स्थान प्राप्त किया । अगर निजी स्कूलों को शामिल किया जाए तो अन्नु का राज्य भर में तीसरा स्थान था । अन्नु को इसके लिए 51,000 रुपये और छात्रवृत्ति प्रदान की गई ।

वर्ष 2017-18 में ही स्कूल की छात्रा भतेरी ने लीगल लिटरेसी कार्यक्रम में जिला स्तर पर भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2017-18 में ही लीगल लिटरेसी कार्यक्रम में स्कूल के विद्यार्थियों ने अम्बाला मंडल में मंडल स्तर पर आयोजित स्किट प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

वर्ष 2018-19 में विद्यालय ने मुख्यमंत्री स्कूल सौन्दर्यकरण में खण्ड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2019-20, विद्यालय के लिए उपलब्धियों से भरा वर्ष साबित हुआ। बारहवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में विद्यालय ने राज्य भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के 36 विद्यार्थियों में से 28 विद्यार्थियों ने मैरिट में स्थान प्राप्त करके, छात्रवृत्ति और पुरस्कार प्राप्त किए, जिसके लिए राज्य स्तरीय कार्यक्रम में माननीय शिक्षामंत्री जी ने स्कूल और प्रधानाचार्य सुरेश कैंदल जी को सम्मानित किया। यही नहीं, दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में भी विद्यालय के छात्र प्रिंस सुपुत्र श्री रामफल ने 97 % अंकों के साथ आउटस्टैंडिंग पोजिशन प्राप्त कर छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। संजू सुपुत्र रमेश कुमार ने भी मैरिट में स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के छात्र संजय कुमार का हरियाणा सरकार की महत्वाकांक्षी योजना सुपर-100 में चयन हुआ।

हरियाणा हरिजन कल्याण निगम ने बोर्ड परीक्षा में बेहतर परिणाम प्राप्त करने वाले विद्यालय के विद्यार्थियों शगुनदीप, निशा, मनीषा, अंजलि और दिनेश को पचास-पचास हजार रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया है। खेलकूद प्रतियोगियों में भी विद्यालय के विद्यार्थी बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं । विद्यालय के विद्यार्थी संजू ने जूडो खेल की प्रतियोगिता में नैशनल स्तर पर गोल्ड मैडल प्राप्त किया। विद्यालय के बेहतरीन प्रदर्शन के लिए 26 जनवरी 2020 को गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर जिला प्रशासन कैथल द्वारा विद्यालय प्रधानाचार्य सुरेश कैंदल जी को सम्मानित किया गया है।

कहते हैं जब आप नेक नियति से कोई काम करते हैं तो उसमें परमपिता की रजा, उसकी इच्छा शामिल हो जाती है। यही कारण है कि विद्यालय की छात्र संख्या में भी हर वर्ष बढ़ोतरी हो रही है। उदाहरण के लिए विद्यालय की 6 से 12 कक्षाओं की छात्र संख्या जो पिछले वर्ष 388 हो गई थी, इस वर्ष 471 हो चुकी है। परमपिता से प्रार्थना है कि ये विद्यालय यूँ ही दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता रहे।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, खेड़ी सिम्बल वाली
जिला-कैथल, हरियाणा

चित्रभाषा: स्मार्ट शिक्षण कला

संसार की सभी वस्तुओं में चित्रभाषा की छाप है। शिक्षण के क्षेत्र में कोई भी विषय कला से अछूता नहीं है और हर विषय किसी न किसी रूप में चित्रभाषा से सम्बन्धित है। आज विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम में जीवन के सर्वाधिक निकट यदि कोई विषय है तो वह चित्रकला है। भूगोल, विज्ञान, वनस्पति-शास्त्र, भौतिक-विद्या, गणित, हिन्दी, आदि विषयों में चित्रकला का अनिवार्य रूप से सहयोग रहता है। चित्रभाषा विद्यार्थियों के लिए मात्र मनोरंजक गतिविधि या उपयोगी शौक नहीं है, बल्कि पाठ्यक्रम से सम्बधित सभी विषय वस्तुओं को रुचिकर बनाने, उनके प्रस्तुतीकरण को प्रभावित करने, विषय-वस्तुओं से सम्बधित ज्ञान के स्पष्टीकरण का एक प्रमुख स्रोत है। किसी भी विषयवस्तु का चित्रात्मक प्रत्यक्षीकरण न केवल विषयवस्तु के चाक्षुष स्वभाव को निश्चित करता है, बल्कि रंग, रूप धरातल और उभार आदि सभी चाक्षुष गुणों को निर्दिष्ट करते हुऐ नई दिशा, नए भाव और नए विचार प्रदान करता है। पाठ्यपुस्तकों में निहित चित्रों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने में विद्यार्थी को आनन्द की अनुभूति भी होती है। कक्षा-कक्ष में जितना ध्यान विषय-वस्तु की लिखित सामग्री को सीखने-सिखाने में दिया जाए उतना ही इस बात पर भी दिया जाए कि शिक्षार्थी पुनः सृजित ज्ञान से कैसे जुड़ते हैं और सीखने की प्रक्रिया क्या है। यह केवल इसलिए नहीं है कि अपने परिवेश में बच्चों का अपना अनुभव ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश का बेहतर माध्यम होता है, बल्कि इसलिए भी ज्ञान का मतलब ही दुनिया से जुड़ना है।

शिक्षार्थी जब तक अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण को पाठ्यपुस्तकों में निरूपित संदर्भों के सम्बन्ध में स्थित नहीं कर पाते और इस ज्ञान को समाज के अपने अनुभवों से जोड़ नहीं पाते, तब तक ज्ञान मात्र सूचना के ही स्तर

पर रहता है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा की बजाए अन्य भाषा पढ़ने लगते हैं तो भाषा की कठिनाई को दूर करने के लिए सम्बन्धित भावों के चित्रों के रूप में कला स्वयं ही भाषा बन जाती है। फूलों की रचना, पंखुड़ियों की बनावट वनस्पति विज्ञान का विषय है और चित्रकला की मदद से पेड़-पौधे, फूल-फल आदि के चित्र बनाकर वनस्पति के भागों का अध्ययन किया जाता है। विज्ञान जिस सत्य की व्याख्या करता है, कला उसे चाक्षुष रूप प्रदान करती है। दूसरी ओर इतिहास यदि किसी समय का शरीर है तो कला को उसकी आत्मा कह सकते हैं। सिन्धु घाटी की सभ्यता की कला, अजन्ता, एलोरा की गुफाओं से उस समय की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है, जिन्हें चित्रों के माध्यम से स्पष्ट करके ज्ञान को स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है। भूगोल जैसे विषय में विषय-सामग्री को छात्रों को समझाने के लिए चित्रों, मानचित्रों का सहारा लिया जाता है। रेखागणित प्रावैधिक कला का विकसित रूप है।

चित्रभाषा और गणित का समानुपातिक सम्बन्ध है। गणित के शिक्षण का उद्देश्य नेत्रों की निरीक्षण शक्ति के आधार पर शुद्धता की आदत पैदा करना होता है। आत्म-निर्णय, सत्यापन, शुद्धता के सहारे तक शक्ति का विकास करना कला का कार्य है। अतः विद्यार्थियों के लिए अपने विचारों को अभिव्यक्त करने व विषय-वस्तुओं के ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने हेतु मौखिक व लिखित भाषा के साथ-साथ चित्रभाषा के ज्ञान की भी अनिवार्यता है।

डॉ. शिवा अग्रवाल
राजकीय आदर्श संस्कृति वमा विद्यालय समलेहड़ी
जिला-अंबाला, हरियाणा

जुड़वाँ भाइयों ने हासिल की चित्रकला में महारत

अध्यापक राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। कहते हैं कि किसी भी बच्चे को नेक व सफल इंसान बनाने में गुरु का बड़ा हाथ होता है। गुरु ही एक मात्र ऐसा माध्यम है जिससे छात्र अपनी क़ाबिलियत को दिशा प्रदान करते हैं। अपने गुरु के सान्निध्य व मार्गदर्शन में छात्र बड़ा होकर एक कामयाब इंसान बनता है। कुछ ऐसा ही जोड़ बना हुआ है इसराना स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सातवीं कक्षा के छात्र व जुड़वाँ भाई दक्ष व वंश के साथ उनके कला अध्यापक प्रदीप मलिक का। दोनों ही भाइयों ने अपने गुरु कला अध्यापक प्रदीप मलिक से चित्रकला की बारीकियों को सीखा है। बता दें कि अपने हमउम्र बच्चों में अपनी चित्रकला के बलबूते दक्ष व वंश ने विशिष्ट पहचान बनाई हुई है। पिछले वर्ष राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इसराना में दाख़िला लेकर जब दोनों भाई कला कक्ष में आए तो वहाँ लगे हुए चित्रों से प्रभावित हुए। अपने कला अध्यापक प्रदीप मलिक से विशेष लगाव व जुड़ाव पाकर उन्होंने चित्रकला अभ्यास करना शुरू किया। देखते ही देखते दोनों भाई स्केचिंग तक करने लगे। सामाजिक संदेश देती हुई इनकी पेंटिंग को जो कोई देखता है वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। विद्यालय में आयोजित विभिन्न चित्रकला प्रतियोगिताओं में अपनी कला से कई बार पुरस्कार जीत चुके हैं।

मुझे अपने दोनों बाल कलाकारों पर गर्व है- कला अध्यापक प्रदीप मलिक

दोनों ही बाल कलाकारों को उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देने वाले कला अध्यापक प्रदीप मलिक ने बताया कि कला एक ऐसा विषय है जिसमें रुचि होना बहुत ज़रूरी होता है। जब तक मन नहीं होगा तब तक सुंदर रचना की कल्पना संभव नहीं होगी। मलिक ने बताया- मुझे दोनों ही छात्रों दक्ष व वंश पर गर्व है। इनकी चित्रकला के प्रति रुचि व अभ्यास का ही सुखद परिणाम है कि ये दोनों आज बाल-कलाकार के रूप में पहचान बना चुके हैं। प्रदीप मलिक ने बताया कि दोनों ही भाई आज्ञाकारी व होनहार छात्र हैं। कोविड के दौरान लॉकडाउन में भी मात्र फ़ोन पर मिले कार्य को समय पर पूर्ण कर मेरे पास वाट्सएप पर भेजते हैं। दोनों के जुड़वाँ होने पर उनके आपसी सहयोग व प्रेम के सब क़ायल हैं।

अपने गुरु प्रदीप मलिक की बदौलत चित्रकला में रुचि बनी - दक्ष व वंश

दक्ष व वंश का कहना है कि हमारे चित्रकला के अध्यापक प्रदीप मलिक के आशीर्वाद से ही हमारी रुचि बनी है। उन्होंने हमें समय-समय पर न केवल मार्गदर्शन दिया है अपितु विशेष स्नेह व प्रोत्साहन की बदौलत हमें आगे बढ़ने का मौक़ा मिला। उन्होंने बताया कि वास्तव में हमें कला जैसे विषय में पारंगत बनाने में हमारे गुरु का हाथ है। प्रथम बार जब पेंटिंग की तो शाबाशी मिली, जिसने हमारी कला में रुचि को बढ़ाया।

दीपा रानी
कला अध्यापिका, राजकीय उच्च विद्यालय
संधीर, ज़िला करनाल, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

जब तक यह अंक आप तक पहुँचेगा, तब तक आपके विद्यालय खुल चुके होंगे। सूने पड़े विद्यालयों में रौनक लौट आएगी। हम सब जानते हैं कि यह सत्र काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा है। अपने साथियों व अध्यापकों से आपका मेलजोल उस तरह से बिल्कुल नहीं हो पाया, जैसा सामान्य समय में होता था। मिड-डे मील का सूखा राशन तो आपके घरों तक पहुँचा, लेकिन उसे प्राप्त करके अवश्य ही आपको वह प्रसन्नता न मिली होगी, जो अपने संगी-साथियों के साथ विद्यालय में बैठ कर खाने में थी। विद्यालय खुल रहे हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि स्थितियाँ पूरी तरह से सामान्य हो गई हैं। अभी भी खतरा पूरी तरह से टला नहीं है। अभी विद्यालयों में आपको मिड-डे मील नहीं मिलेगा। अपने घर से आप जो टिफिन लाते हो, उसे भी अपने साथियों के साथ शेयर नहीं करना है। अध्यापकों के निर्देशों का आपको पूरी तरह से पालन करना है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूंगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

पहेलियाँ

1. गुज़र सके प्रत्येक वस्तु से, पर नज़रों से गुम।
   कहो कौन सी किरणें हैं वे, जल्दी बूझो तुम।।
2. एक मशीन इलेक्ट्रॉनिक हूँ, बिजली से चलता।
   चित्र खींचता, खेल खिलाता, गणनाएँ करता।।
3. चाहे हों वे दाएँ-बाएँ, अथवा ऊपर-नीचे।
   लोहे की सारी चीज़ों को, झटपट वह तो खींचे।।
4. वर्षा के थमते ही नभ में, आता है मुस्कान लुटाता।
   इसको प्यारा, उसको प्यारा, सात रंग से रखता नाता।।
5. आदि काल से जब से दुनिया, बादल की है बनी सहेली।
   जिस पर गिरे तबाही ला दे, कड़कदार है नार नवेली।।

उत्तर 1.एक्स-रे 2.कम्प्यूटर 3.चुंबक 4.इन्द्रधनुष 5.बिजली

रमेश कुमार सीड़ा,
अंग्रेजी प्रवक्ता,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा,
संप्रति प्रतिनियुक्ति पर चंडीगढ़ में

आश्चर्यजनक परंतु सत्य

- सोडियम एक ऐसा पदार्थ है जो पानी में भी जलता है।
- डायनासोर का रंग क्या था यह वैज्ञानिक आज तक नहीं पता लगा पाए हैं।
- दुनिया का सबसे कठोर पदार्थ हीरा है।
- घड़ी के अंदर रात को चमकने वाला पदार्थ रेडियम होता है।
- सौर मंडल में मौजूद सभी ग्रह बृहस्पति में समा सकते हैं ।
- भूंकप की तीव्रता को मापने के लिए रिक्टर पैमाना का इस्तेमाल किया जाता है।
- संसार में सबसे अधिक मात्रा में पाया जाने वाला तत्व हाइड्रोजन है।

सामान्य ज्ञान

1. तेलगु किस राज्य की राजभाषा है?
उत्तर - आंध्रप्रदेश की
2. हॉकी खेल में प्रत्येक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं?
उत्तर - 11
3. बांग्लादेश की मुद्रा है?
उत्तर - टका
4. नील नदी के किनारे कौन सी सभ्यता का विकास हुआ था?
उत्तर - मिस्र सभ्यता
5. किस स्थान पर महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था?
उत्तर - गया
6. प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् की रचना किसने की?
उत्तर - महाकवि कालिदास
7.ज्वार सबसे ऊँचा कब होता है?
उत्तर - जब सूर्य और चन्द्रमा पृथ्वी के एक ही ओर होते हैं।

खुल गये स्कूल

टन टना टन बज गयी घंटी,
खुल गये फिर सारे स्कूल।
दौड़ लगाते भागे बच्चे,
उड़ चली पैरों से धूल।

बंटी दौड़ा, बबली दौड़ा,
दौड़ पड़ी, सीता-गीता।
मत पूछो इनसे कोई अब,
वक्त बुरा कैसे बीता।

झाड़ पौंछ कर बस्ते अपने,
फिर लटकाए कंधों पर।
फिर लटकायी वाटर बोटल,
निकल पड़े हैं वही डगर।

रौनक लौटी फिर शाला में,
गूँज उठेगी किलकारी।
ज्ञान भरे गुलशन की अब तो,
महक उठेगी हर क्यारी।

मास्क लगाना हाथ धोना,
नहीं जाना कोई भूल।
दो गज की दूरी रखना सब,
खुल गये फिर सारे स्कूल।

गोविन्द भारद्वाज
प्रधानाचार्य
पितृकृपा,4/254, बी-ब्लॉक
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पंचशील
अजमेर, राजस्थान

सूरज पंछी

सुबह सवेरे उठकर बच्चो,
अपने पथ पर चलता।
धरती, अंबर सबके ऊपर,
उसका प्रकाश फलता।
गर्मी सहता, सर्दी सहता,
वर्षा में भी हँसता।
कभी न थकता, कभी न रुकता,
चलता लम्बा रस्ता।
धूप बनाता, छाँव बनाता,
लपटों में भी जलता।
अंबर का यह पक्षी ऐसा,
पंख बिना उड़ जाता।
एक घोंसले में से उड़कर,
दूजे में छिप जाता।
बिन बाधा के रोजाना ही,
ढलता और निकलता।

हर प्रसाद रोशन
हल्द्वानी, उत्तराखंड

चाय का पेपर कप क्यों नहीं गलता?

प्यारे बच्चो! आप होमवर्क करते हुए कई बार घर में खाते-पीते भी रहते हैं। इस कारण कई बार दूध, पानी या चाय आपकी कॉपी पर भी गिर है। तब आपकी कॉपी खराब हो जाती है। पेज गल जाने के कारण कई बार उसे फाड़ना भी पड़ता है। लेकिन जब हम पेपर कप में चाय पीते हैं तो वह क्यों नहीं गलता। अगर आपको नहीं मालूम तो आइये आपको बताते हैं-

इन कपों पर बहुत ही महीन हाइड्रोफोबिक पदार्थ की कोटिंग की जाती है। हाइड्रोफोबिक वह पदार्थ होते हैं जो जल विरोधी होते हैं। आजकल इसके लिए माइक्रोप्लास्टिक का उपयोग होता है। जिस कारण कप गीला हो कर खराब नहीं हो जाता। परन्तु वह पदार्थ जिसकी कोटिंग हुई होती है, हमारी सेहत जरूर खराब कर देता है। जी हाँ, आईआईटी खड़गपुर की एक रिसर्च पेपर के अनुसार ये पदार्थ जब गर्म चाय के सम्पर्क में आता है तो ये क्षीण हो जाता है तथा इसके कण चाय में आ जाते हैं। हम माइक्रोप्लास्टिक के कण वाली चाय का सेवन करते हैं। ये हमारी सेहत के लिए बहुत ही हानिकारक हैं। ये कण बहुत ही जहरीले पदार्थों के वाहक के रूप मे कार्य करते हैं। इनमे पैलेडियम, क्रोमियम और कैडमियम जैसी भारी धातुएँ हो सकती हैं। तो हमें भी चाय पीने के लिए पेपर-कप का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, बल्कि चाय या कॉफी आदि के लिए काँच के कप, धातु के गिलास या मिट्टी के कुल्हड़ का ही उपयोग करना चाहिए।

सुनील अरोरा
पीजीटी रसायन विज्ञान
रा उ विद्यालय समलहरी, जिला पंचकूला, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

सम्माननीय विज्ञान अध्यापक साथियो! उम्मीद है जब यह अंक आप तक पहुँचेगा, विद्यालय पूरी तरह खुल चुके होंगे। विद्यालयों की समस्त चहल-पहल पहले की तरह ही वापिस लौट आयी होगी। तब जरूर विद्यार्थियों को विज्ञान गतिविधियों द्वारा विज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोगों से रूबरू करवाएँ। तो आइए करके देखते हैं कुछ नई विज्ञान गतिविधियाँ जो कक्षा कक्ष में करवायी जा सकती हैं-

1. पेट्रोल की शुद्धता की जाँच करना

कक्षा-6 के बच्चे पूछते हैं कि पेट्रोल में मिलावट की जाँच कैसे कर सकते हैं? उसके लिए सबसे आसान विधि है छन्ना पत्र (फिल्टर पेपर) जाँच। व्यावहारिक ज्ञान के अंतर्गत हम नागरिकों का यह हक बनता है कि हम अपने द्वारा खरीदी गई प्रत्येक वस्तु की जाँच व मोलभाव करें। इस जागरूकता के अंतर्गत पेट्रोल की जाँच करना भी आना चाहिये। हमने इसकी जाँच करने के लिये पेट्रोल के नमूनों की व्यवस्था की। विज्ञान कक्ष से लिये एक फिल्टर पेपर पर दो बूंद पेट्रोल की डाली। पेट्रोल का वाष्पीकरण हो गया। फिल्टर पेपर पर कुछ नहीं बचा। अतः पेट्रोल का नमूना शुद्ध है। विद्यार्थियों में तो मिलावट की जाँच करने की जिज्ञासा थी इसके लिए पेट्रोल के उसी नमूने में केरोसिन ऑयल की मिलावट करके नए फिल्टर पेपर पर डाला गया। कुछ ही सेकेंड्स में पेट्रोल का तो फिर से वाष्पीकरण हो गया परन्तु फिल्टर पत्र पर एक धब्बा रह गया। जिससे कि साबित हो गया कि मिलावटी पेट्रोल छन्ना पत्र पर दाग छोड़ता है। अगर हम पेट्रोल पंप पर पेट्रोल की जाँच करना चाहें तो हम पेट्रोल पंप कर्मचारियों से छन्ना पत्र की मांग कर सकते हैं।

2. विभिन्न द्रवों के घनत्व का अंतर देखना।

विभिन्न द्रवों के घनत्व में अंतर को देखने के लिए हमें एक काँच के मापक सिलेंडर के साथ 50-100 मिलीलीटर मात्रा में पेट्रोल, डीजल, केरोसिन आयल व पानी की आवश्यकता पड़ेगी। इन सभी द्रवों की समान मात्रा को मापक सिलेंडर में एक के बाद एक डालते गये। तब हमने देखा कि सभी चारों द्रव बर्तन में अपने घनत्व के अनुसार सेटल हो गए हैं। पेट्रोल का घनत्त्व (डेंसिटी) 730 से 800 के बीच, डीजल की डेंसिटी 830 से 850 के बीच, केरोसीन का घनत्व 850 से लेकर 900 तक व पानी का घनत्व 998 के नमूने लिए गए। (सभी इकाइयाँ कक्ष ताप पर किलोग्राम प्रति घन मीटर में ली गयी हैं।)

अलग अलग रंग के होने के कारण व चारों द्रवों के मापक सिलेंडर में सेटल होने के क्रम को देख कर बच्चों की समझ मे द्रवों के घनत्व में अंतर स्पष्ट हो गया। अब वे चर्चा कर रहे थे कि कम घनत्व का द्रव अधिक घनत्व के द्रव के ऊपर तैरता है। वे घर जाकर पानी, रिफाइंड ऑयल, सरसों का तेल व नारियल के तेल के घनत्वों में अंतर जानेंगे व सहपाठियों के साथ साँझा करेंगे।

3. नाचती नेफ्थलीन गोलियाँ

इस गतिविधि का मूल सेटअप बहुत सरल है। एक ग्लास बीकर या जार को पानी से दो तिहाई भरें। मीठा सोडा (सोडियम बाइकार्बोनेट) के 1 से 2 चम्मच उस पानी में घोल लें। एसिटिक एसिड (सिरका) 1/4 कप या 50 मिलीलीटर डालने पर दोनों की रासायनिक अभिक्रिया के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनती है। अब अगर बीकर में चार-पाँच नेफ्थलीन की गोलियाँ डाल दें तो रासायनिक अभिक्रिया के कारण उत्पन्न हो रही कार्बन डाइऑक्साइड गैस के बुलबुले गोलियों की सतह पर एकत्र होने लगते हैं। जब सतह पर गोलियाँ के वज़न को उठाने के लिए पर्याप्त बुलबुले जमा होते हैं तो ये गोलियाँ ऊपर तक उठ जाती हैं। बुलबुलों के कम होने पर नीचे आने लगती हैं और नाचती हुई

प्रतीत होती हैं। इस गतिविधि में बच्चों में रासायनिक अभिक्रिया, उत्प्लावन बल आदि की समझ विकसित हुई। यह गतिविधि फिनाइल की गोलियों के अलावा किशमिश से भी किया जा सकता है।

4. कार्बन डाइऑक्साइड गैस से बुझीं मोमबत्तियाँ

स्कूल में नए अग्निशमन उपकरण (सिलेंडर) लगे तो विद्यार्थियों ने पूछा कि सर इनसे आग कैसे बुझती है। तब उन्हें बताया गया कि यह काम कार्बन डाइऑक्साइड गैस के कारण हो पाता है। एक बीकर में तनु अम्ल व सोडियम बाइकार्बोनेट की क्रिया करवाई गई। मोमबत्तियों को एक पंक्ति में लग कर जलाया। बीकर को तिरछा करके उन जलती मोमबत्तियों के पास लाया गया। कार्बन डाइऑक्साइड गैस वायु से भारी होने के कारण बीकर के तिरछे करने से और नीचे की तरफ जाती है और मोमबत्तियाँ बुझ जाती हैं। क्योंकि कार्बन डाइऑक्साइड गैस जलती वस्तुओं की आग बुझा देती है। अब बच्चों को समझ आ चुका था कि अग्निशमन सिलेंडर में भी कुछ ऐसी ही रासायनिक अभिक्रिया होती है, जिससे आग को बुझाया जाता है।

5. पेपर स्ट्रिप्स से वायुमंडलीय दबाव को जानो

बहुत से ऐसे सवाल बच्चे अक्सर पूछते रहते हैं कि हेलीकॉप्टर कैसे उड़ता है? मंदिर का झंडा कैसे लहराता है? पतंग कैसे उड़ती है? जब बस या कार तेज़ी से गुजरती है तो कागज, पत्ते, तिनके व धूल कण के उसके पीछे क्यों उड़ते हैं? तेज आँधी आने और टीन की छतें क्यों उड़ जाती हैं? पंखे के चलने पर पेपर क्यों उड़ते हैं? रन थ्रू ट्रेन आने पर प्लेटफार्म पर खड़े यात्रियों को पीछे हटने के लिए क्यों कहा जाता है? इन सब का जवाब देने के लिए बच्चों को वायुमंडलीय दबाव के बारे में समझाया जाना आवश्यक था। कक्षा कक्ष में की जाने वाली शून्य लागत की गतिविधि के अंतर्गत बच्चों को दो पेपर स्ट्रिप्स के पास पास आने वाली गतिविधि करवाई गई। इसके लिए उनके रजिस्टर से एक पेज लेकर उसमें उसमें से एक एक इंच चौड़ी दो पट्टियाँ काटी गईं। उन दोनों पट्टियों को दोनों हाथों में पकड़ कर मुँह के पास लाकर दोनों के बीच में से जा फूँक मारी गई तो वे दोनो पट्टियाँ पास-पास आ गईं। बच्चे हैरान थे कि ऐसा कैसे हुआ? दूसरी गतिविधि में, उनमें से एक स्ट्रिप को दोनों उंगलियों से पकड़ कर होठों के पास लेकर उनके ऊपर से फूँक मारने पर स्ट्रिप का नीचे लटका हुआ भाग ऊपर उठ जाता है। बच्चे इसे देख कर भी बहुत हैरान हुए। तब उन्हें बताया गया कि ऐसा वायुमंडलीय दबाव के कारण होता है जब एक तरफ से वायु तेज गति से गुजरती है वहाँ का वायुमंडलीय दबाव कम हो जाता है। उस को संतुलित करने के लिए विपरीत तरफ से वायु उस तरफ आती है। इसीलिये दोनों स्ट्रिप्स पास पास आ जाती हैं। दूसरे प्रयोग में पट्टी के नीचे की तरफ के वायुमंडलीय दबाव के कारण ऊपर उठ जाती है।

अंत में, विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने व सोचने के लिए अवसर प्रदान करना एक अध्यापक के कुशल शिक्षण का प्रतीक होता है। इस प्रकार का अवसर उन्हें आंनदपूर्वक सीखने की अनुभूति प्रदान करता है और वे नवाचार की ओर अग्रसर होते हैं।

विज्ञान अध्यापक सह विज्ञान संचारक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ
माध्यमिक विद्यालय कैम्प
खंड जगाधरी, जिला
यमुनानगर, हरियाणा

शिक्षिका की डायरी का एक पन्ना

आसिया फारूकी

28 अक्टूबर, 2019, सुबह-सुबह राशिद विद्यालय में शोर मचा रहा था। आज हमारी कक्षा में भुट्टे बाँटे जाएँगे। वह क्यों न खुश होता, एक हफ्ते के इंतजार के बाद आज चौथी कक्षा के बच्चों को भुट्टे मिलने का क्रम जो आया था। मारिया चुपचाप सब देखती रही। उसका नया नामांकन हुआ था। बड़ी मासूमियत से पूछती है, क्या इस स्कूल में भुट्टे भी उगते हैं ? दिलकश शान से बताने लगता है- 'उगते नहीं हम उगाते हैं।' सब एक-दूसरे से अपने विद्यालय में उगी सब्जियों जैसे मूली, टमाटर, आलू-बैंगन, भुट्टों के विषय में बताकर खुश हो रहे थे। कोई कहता हम बीज लाये थे। कोई बोल रहा था कि हम रोज पानी, खाद, गुड़ाई करते थे। कैफ उछलता हुआ कहता, 'बकरियों से अगर मैं न बचाता तो क्या आज भुट्टे और आलू मिल पाते? तभी सामने से सबकी चहेती माया दीदी (रसोइया) भुने हुए भुट्टे नमक लगाकर सभी को बाँटती है। सभी बच्चे बड़े चाव से खुश होकर भुट्टे खा रहे थे। मेरी आँखों के सामने अतीत के चित्र एक-एक कर गुजरने लगे।

विद्यालय का वो पहला दिन जब प्रमोशन के बाद यहाँ पहला कदम रखा था। सब कुछ अस्त-व्यस्त था। आज भी आँखों के सामने वहीं मंजर, वीरान जंगल-सा विद्यालय परिसर घूम जाता है। सोचती थी इस बेजान सी धरती को सजीव कैसे बनाऊँ? सभी बच्चों और रसोइयों को बुलाकर अपने इरादे के बारे में बताया तो रसोइयों ने कहा, 'काम तो अच्छा है पर आसान नहीं। सालों से यहाँ एक पौधा भी नही उगा। जमीन ही बंजर है।' मैं बस इतना ही बोली, 'कोशिश करने में क्या हर्ज है, धरती को सजीव बनाना सीखना चाहिये।'

पूरे परिसर में मोहल्ले का कूड़ा वर्षों से डाले जाने के कारण वह जमकर सख्त हो गया था। कूड़ा हटाने के लिए मैंने विभाग को कई बार अर्जी लिखी। फिर कुछ अभिभावकों को श्रमदान के लिये राजी किया। गाँव में कुछ लोग सहयोग हेतु आगे बढ़े। एक हफ्ता परिसर की जुताई का कार्य चला। हमने और बच्चों ने खून-पसीना एक करके सारी गंदगी को साफ किया। बस यही बोलती रही, 'ये परिसर हमारा है, इसे साफ-सुथरा, हरा-भरा बनाना हमारा फर्ज है।' कुछ लोग अभी भी विद्यालय में कूड़ा डालते, ईंट, पत्थर चलाते जिससे हम सभी परेशान थे। तब हमने नन्हे बच्चों की एक 'ग्रीन आर्मी' तैयार की जो आसपास के लोगों को ऐसा न करने और साफ-सफाई के लिये जागरूक करती। कुछ असामाजिक लोगों को हमारा काम अखर रहा था और वे हमें विद्यालय छोड़ने की धमकियाँ भी दे रहे थे। पुलिस प्रशासन की मदद से उन पर भी रोक लगाई गई। इन बदलावों को देख लोग जुड़ने लगे। मैं बस यही समझाती कि विद्यालय हमारे बच्चों का भविष्य है। इसमें आप साथ देंगे तो हम बेहतर कर पायेंगे। मैं स्कूल को सँवारने में जी जान से जुट गई। बच्चे किसी को कुछ करते हुए देखने के बाद अपने हाथों से करके सीखते हैं। तो रोज सुबह मैं बच्चों से कहती, 'चलो बच्चो काम शुरू करें।' बच्चे खुरपी, फावड़े और कुदालें ले आते। अभिभावक शमीम चाचा किसान थे, वो जब भी विद्यालय में आते उन्हें देखकर बच्चे खुश हो जाते, क्योंकि वे बच्चों को खेती बाड़ी के तौर-तरीके बता जाते। बच्चों में उत्साह जाग जाता। उनकी देखादेखी खाद छिड़कते, कतारें बनाते, निराई-गुड़ाई करते। बच्चे पसीनें से तरबतर हो जाते पर रुकते नहीं। मैदान के पीछे का हिस्सा जहाँ गाँव के लोग कई वर्षों से कूड़ा डाला करते थे। डंप होकर पहाड़नुमा प्रतीत होता था। मैंने सोचा ये भी साफ कर लूं तो इतनी जमीन और निकल आएगी। और बच्चों के लिये सब्जियाँ उगाई जा सकेंगी। पर उसे साफ करना काफी कठिन काम था। नगर पालिका में अर्जी पर अर्जी लगाती रही। एक दिन सफाई कर्मी आये और कूड़ा देख कर घबरा गये, बोले मैडम ये तो पंद्रह दिन से कम में नहीं हो पायेगा। काम शुरू करवाया। बच्चे और अभिभावक भी साथ लग गये। धीरे-धीरे जमीन साफ होती रही और उससे निकलने वाले तमाम ईंटों से हम क्यारियाँ बनाने में लग गए। कूड़े वाली जमीन के साफ होते ही आमिर अपने पापा को बुला लाया जो मिट्टी डालने का काम करते थे। उनके सहयोग से बच्चों ने क्यारियों में उपजाऊ मिट्टी डाली। अगली सुबह बच्चे दौड़ते हुए मेरे पास आए और अपने-अपने बैग से बीज वाले आलू निकाले और बोले कि घर वालों ने बोने के लिए दिये हैं। चाँदनी ने सबके बैग से उन आलुओं के बीजों को टोकरी में जमा किया। क्यारियाँ तो पहले से ही तैयार थीं। बच्चों ने कतारों में बीज बो दिए। क्यारियों में समय समय पर खाद पानी डालते रहे। एक दिन तो बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था। जब गाँव के कुछ सहयोगी लोग अमरूद, टमाटर, नींबू, गुलाब, बेला और एलोवेरा के पौधे लेकर स्कूल पहुँचे। उनको भी उचित जगह पर रोपा गया। जल्दी ही पौधे बड़े होने लगे। बच्चे अपने नन्हें हाथों से बोये बीजों को पहली बार धरती की कोख से बाहर झाँकते, पनपते देख रहे थे। यह आनंद अनूठा था। फसल बढ़तीं रही और बच्चों के सपने भी।

आलुओं की फसल जब पक गई तो खुदाई का दिन तय हुआ। बच्चों ने अपनी अपनी क्यारियाँ बाँट लीं। खुरपी से वो उसे खोदते जाते और मुझे दिखा-दिखा कर खुश होते। मजाल जो इस कार्य में कोई कोताही हो जाय। कोई आलुओं को बीन रहा था, कोई धोकर टोकरी में रखता जाता। अरशद, माया दीदी से आलुओं के पराँठे बनाने की फरमाइश करता तो नेहा चिप्स की जिद करती। कितने मासूम लग रहे थे ये सब। और सैफ तो शरारतों में सबसे ही आगे रहता। आलुओं से भरी टोकरी सिर पर रखता और 'आलू ले लो आलू' आवाजें लगाता तो सारे बच्चे खिलखिला कर हँस पड़ते। तभी सलोनी दौड़ती हुई मेरे पास आयी और बोली- मैम! आज की सब्जी बहुत स्वादिष्ट बनी है। पीछे से अयान बोल उठा- 'अरे जानती नहीं हो यह सब्जी विद्यालय में उगे आलू-टमाटर से बनी है।' तभी लंच की घंटी बजी और मैं यादों से बाहर निकली। बच्चे चेहरों पर खुशी ओढ़े लंच रूम की ओर बढ़ रहे थे।

शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय अस्ती
नगर- फ़तेहपुर
उत्तर प्रदेश

नव वर्ष में नव संकल्प

बीते साल ने जो सबसे बड़ा दर्द दिया, उसकी दवा नए साल में मिल गई है। 2021 इस उम्मीद के साथ आ रहा है कि वैक्सीन आने के साथ ही लोगों को कोरोना से निजात मिलेगी और ज़िंदगी न केवल पटरी पर लौटेगी, बल्कि रफ्तार भी पकड़ेगी। अब तक के शगुन भी कुछ ऐसा ही इशारा कर रहे हैं। उम्मीदों के सूरज चारों ओर से निकल रहे हैं। अब इनके चमकने का इंतजार है। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि, खेल और सामाजिक जीवन में कई बदलाव होने वाले हैं। सरकार दो कदम आगे बढ़ा रही है। हमें बस इस दो में अपना एक कदम जोड़कर इसे 21 बनाना है। कोविड-19 के असर से कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा। शिक्षा पर भी इसका खास प्रभाव पड़ा ही हैं स्कूल लंबे समय से बंद हैं। बच्चे घर से ही पढ़ाई कर रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा से भी बच्चे बोर हो गए हैं। वहीं, अभिभावकों को भी बच्चों के भविष्य की चिंता सताने लगी है। 2021 में उम्मीद है कि शिक्षा के मंदिर फिर गुलज़ार होंगे और यहाँ रौनक लौटेगी। बच्चे फिर से पहले की तरह क्लास रूम में जाकर पढ़ाई कर सकेंगे। इसलिए हम नए साल को प्रणाम करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति नए साल में कोई न कोई प्रण लेता है, कि परंतु यह प्रण साल के मध्य तक धीमा पड़ जाता है। कहने का तात्पर्य ये हैं कि आप प्रण की बजाय अपनी आदत ही बना लें कि समय जैसा भी हो, हमें अपनी ज़िंदगी को सरल भाव से जीना है। अपनी सेहत का ध्यान रखना है। जो चीज़ हमें नुक़सान करें उसे कभी नहीं खाना। जो अच्छा लगे वह अपनी मनपसंद हॉबी को समय अनुसार अभ्यास करना है, यानी संगीत पसंद है तो उसका रियाज़ करना है। क्रिएटिव काम पसंद है उसे ज़रूर करना है। लॉकडाउन में हमने महसूस किया है कि बहुत से सामान की हमें ज़रूरत नहीं है। कम से कम सामान में भी काम चलाया जा सकता है।

अपनी मेहनत व कर्म पर विश्वास करें। घर में बड़ों के, समाज में दूसरों के विचार अवश्य सुनें लेकिन वो जानकारी आपके काम की कितनी है केवल वही ग्रहण करें। आजकल प्रत्येक विषय में जानकारी देने के लिए बहुत से चैनल हैं, लेकिन वह जानकारी हमारे लक्ष्य को भटकाव की तरफ़ न ले जाए। इस बात का विशेष ध्यान देना है, अन्यथा हम अपने भविष्य की जड़ों को मज़बूत नहीं कर पाएँगे।

हर दिन कुछ नया सीखें। समय को व्यर्थ कदापि न गंवाएँ। अपनी कमज़ोरी पर पूरी ताक़त से वार करें क्योंकि आज की की हुई मेहनत पर ही हमारा भविष्य तय होता है। अतः अपने ही आसपास हम उन लोगों को दूर करें जो आपका समय बर्बाद करते हैं। अपने कार्यों को पूरी ईमानदारी, निष्ठा व मेहनत से करें। दिन-प्रतिदिन ख़ुद को बेहतर बनाते जाएँ। ईश्वर ने सभी को एक जैसा बनाया है लेकिन उसमें हम कितने प्रयास के साथ क्वालिटी ला पाते हैं, ये केवल हम पर निर्भर करता है। कल से बेहतर आज, आज से बेहतर कल होना चाहिए। प्रत्येक कार्य को करते हुए आनंदमय महसूस करें ताकि कार्य करने की क्षमता और बढ़ जाए। प्रत्येक कार्य को करते हुए अहम का भाव मन में कभी मत रखें क्योंकि हमारे विचार ही हमें ख़ुशी और ग़म देते हैं। अपनी ही आदतों से हम अपनी ज़िंदगी को दिन-प्रतिदिन और बेहतर करते जाते हैं ।

बुरे वक्त को हादसा समझ कर भूलने की कोशिश करें और पूरे प्रयास के साथ, मेहनत के साथ आगे बढ़ते जाएँ। प्रत्येक इंसान की ज़िंदगी में मौक़े आते हैं लेकिन उन मौकों को वही पहचान सकता है, जिसमें निरंतर कुछ करने की ललक होती है। किसी दूसरे को नहीं बल्कि अपने आप को प्रसन्न वह संतुष्ट करने के लिए प्रत्येक दिन को एक मिशन के साथ जीयें। प्रतिस्पर्धा की भावना मन में रखें तब आप देखेंगे कि बीता हुआ साल, आने वाले साल से ज्यादा उमंग देगा। लोग क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे इस बात में, एक क्षण भी बर्बाद न करें। अपना रिमोट अपने हाथ में रखें। सभी दिन एक जैसे होते हैं, उसे अच्छा या बुरा बनाना हमारे हाथ में है। धीरे-धीरे छोटी-छोटी अच्छी आदतों से आप ख़ुशी महसूस करेंगे और ज़िंदगी आपको भरपूर आनंद देगी।

-इंद्रा बेनीवाल, उपनिदेशक
माध्यमिक शिक्षा विभाग हरियाणा, पंचकूला

2021

फरवरी माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1-फरवरी- भारतीय तटरक्षक दिवस
4-फरवरी- विश्व कैंसर दिवस
10-फरवरी- विश्व दलहन दिवस
12-फरवरी- राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस
13 फरवरी- भारत कोकिला सरोजिनी नायडू जयंती
16 फरवरी- रामकृष्ण परमहंस जयंती
19 फरवरी- छत्रपति शिवाजी जयंती
20 फरवरी- विश्व सामाजिक न्याय दिवस
21-फरवरी- अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
22-फरवरी- विश्व चिंतन दिवस
24-फरवरी- केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस
28-फरवरी- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

FOOD WASTAGE IN INDIAN WEDDINGS & THEIR POSSIBLE SOLUTIONS

Rajnesh

Happiness must be celebrated and it is upto us to choose the correct way of the celebration. Marriage is one of the most important days of anyone's life. People come together to be a part of this celebration. Indians are by nature known to spend lavishly on weddings; even the balanced middle class will take out their life's saving and spend generously on their children's wedding.

Indian weddings are very bright events, filled with rituals and celebrations for several days. Winters are the seasons of marriages as we all know that around this time of the year many marriages take place. Marriages are mostly 'arranged'. It is said that it is not only the two persons who get married but also the two families who get married to each other. Therefore, Indian parents still play a big role in finding a bride or groom for their children.

In every Indian wedding, food is the most important part and the most wasted too!

In India, statistics related to food wastage at weddings have been quite shocking, given the fact that it is the same country where countless number of people have to survive without the basic necessity of two meals a day. The wastage of food in social gatherings in India is at an alarming rate and needs to be looked at immediately.

How much noise we all make about

our economic development in India but we can never deny the fact that our country also hosts one of the biggest population of starving people in the world. We need to realise that there are so many people out there who barely manage a single meal a day.

We all have attended Indian wedding parties but how many of us realise how much food goes waste during such functions? And how many have noticed poor kids scanning the garbage bin to get something to eat?

The biggest source of food wasted is in Indian weddings. The way food is eaten and wasted in weddings is an eye opener for everybody because extra food has been prepared to make sure everyone is well fed knowing the fact of their expected wastage. People like to taste everything as much as they can take. Most of us have seen that food get thrown in garbage not because it is stale but it is in excess of what has already been consumed and we don't know what to do with that and this regularly happens at the end of marriage or any functions. Piles of dishes of excess food are thrown into the garbage bin even knowing that ghee, meat, sugar and vegetable are touching new records day by day. And still we see the kind of wastage of food in weddings.

A study by the Food Ministry, Government of India found that about 20% of food at social events such as weddings and parties goes waste. If you are a part of any such function or event, reach out to any of the several Indian organisations that are giving the hungry access to leftover food from restaurants and catered parties.

One should opt for various ways to avoid such exorbitant wastage. There are some initiatives that can be helpful to overcome this problem.

1. In the wedding invitation you can print a note 'Please do not waste food'.

2. On tissue papers you can print some pictures with a message 'Don't waste food'.
3. At the dinner table small paper prints regarding the same can be used.
4. In washrooms some Pamphlets may work better.
5. You can play a video leaving a message not to waste food. This video can be played where people are eating dinner.(As dinner time somehow gets boring, so it will be a good time to play that video)
6. With polite announcements with Orchestra.

Another suggestion is to gather up the left over's and distribute it to families, etc living in slums in your neighbourhood. The dabbawala's in Mumbai, India have come with an amazing plan to stop food wastage. They have started Roti Bank, where they distribute the leftover food to the hungry and needy people.

Media coverage on how to have a no waste wedding has increased in the last few years, with couples who achieved that widely celebrated in the press. But NGOs remain critical in preserving the leftovers and passing them quickly to those in need. Initiatives such as Feeding India, which distributes unused food in 45 cities and runs a Meals with Love campaign, the Robin Hood Army, and No Food Waste (the latter, with its own app) work with the couples and catering companies to manage waste, but also strive to educate Indians to cut consumption & increase awareness about food waste!

Lecturer Biology
CDGGSSS Ateli Mandi
Mahendergarh, Haryana

Improving the Vocational Awareness among Government School Students through Experiential Learning Activities

Dr. Suman Lata,
Dr. Manjeet Kumar and
Jitender Kumar

Introduction:

Vocation is defined in the Oxford dictionary as an "Occupation undertaken for a significant period of a person's life and with opportunities for his progress". Vocational development is a process that is the outcome of a complex interaction between the individual and the environment. Childhood and adolescence are the foundations upon which adulthood is built, and failure to master early tasks may compromise the ability to prepare for and engage in career development. Emerging adulthood is a particularly meaningful age period in which to study career development because of the unique experiences that emerging adults have regarding the world of work. This is an age during which previous socialization combines with current experiences to shape career choices and long-term goals. Emerging adults are more independent than children and adolescents, but their parents and other important people still actively influence their career opportunities. The occupational choices made by emerging adults have their roots in earlier interactions and experiences. In India, the choice of course of study at the Higher Education level, and thereby even a career, is not a student's

exclusive prerogative. For instance, children begin to learn about possible future jobs through seeing adults in their communities and parents' social networks. The Society being largely patriarchal, aptitude or choice of an individual often take a backseat and factors like parental pressure, societal trends, peer influence, etc become more important in such decisions. Despite contrary advice from experts, the trend usually perpetuates, especially among the middle-class. There is a glaring lack of awareness about the job avenues and career choices.

Justification of the Study: Adolescence is the period when a major turning takes place in the life of a student because the career will depend upon the subjects selected at this level. On the recommendation of National Policy on Education 1986, school curriculum after the 10th class has been diversified into academic and vocational streams. The end of high school constitutes a major transition in the lives of adolescents. Whether they plan to move on to work, college or another post-high school alternative, it is beneficial for students to make active, informed decisions about their ultimate career paths. Unfortunately, many youths approach high school graduation poorly prepared for this transition. Selection of career and setting in it is an important task and a source of personal gratification. The choice of a right career is becoming difficult in these days. Any wrong decision of career choice due to pressure of the family or from indecisiveness on the part of adolescent can block his/her growth and development in future. The understanding of vocational world is vital for students as it enables them to review their career decisions in the light of their potentialities. If a person enters an occupation which requires intelligence more than what he has, he will find himself unsuitable for the type of work. The same difficulty will occur with an individual whose intelligence is greater than what his/her work requires. S/he faces dissatisfaction and lack of competitive spirit in her/his job. An insight into the possible factors underlying vocational awareness would suggest the guidelines for planning various activities for the students. It may also help the teachers, parents and guidance workers for developing desirable attitudes in children. Keeping in mind the determinant and predictor variables of vocational maturity, the present study is an endeavour to study the causative factors and their remedy regarding Improvement of vocational awareness among class 11th students in Government schools.

Keeping in mind the time and scope of action research, the investigator delimited the present study to students studying in 11th class of government senior secondary school Makrauli Kalan, Rohtak, Haryana only. The researcher has categorized the Probable Causes and concerns related to the problem into four major heads which are discussed as under:

Individual

- Lack of Vocational Awareness.
- Lack of Curiosity
- Limited Knowledge
- No creative use of IT/Available Resources

Family

- Parental Vocation.
- The Educational Status of Parents.
- Social and Economic Status.

Community:

- Limited Vocations.
- Less Educated people
- Limited Resources
- Limited Exposure to Vocational Awareness
- No active Vocational Committee

School level

- Lack of Proper Attention.
- Lack of Vocational Guidance.
- Focus only on Exam Result.

» No creative use of Library Resources.

Statement of the Problem:

"Improving the Vocational Awareness among Government School Students through Experiential Learning Activities"

Objectives :

1. To study prevalent practices adopted by the administration of the school, Family and Community to develop vocational awareness among students.
2. To analyze prevalent practices adopted by the administration of the school, Family and Community to develop vocational awareness among students.
3. To improve practices adopted by the administration of the school, Family and Community to develop vocational awareness among students.
4. To make aware the Head of the institution, Teachers, Students, Parents and Community about various methods/Strategies to improve vocational awareness among students.

Hypothesis:

1. It is possible to make the students aware vocationally by using various strategies and resources at the individual level.
2. It is possible to make the students aware vocationally by imparting useful and related knowledge to family and community.
3. It is possible to improve the vocational awareness of the students by rendering Guidance and other strategies at school level.

Method

Descriptive survey method is used in the current study.

Sampling

In the present study, 11th class students of Govt. Senior Secondary School Makrauli Kalan Village are selected.

Tool Adopted:

Self-constructed Questionnaire to check Vocational Awareness of the 11th class students. (For Pre and Post-Test)

Action Plan

Test conducted to test Vocational Awareness and Related Factors and Analysis of the test responses given by students.

i. Meeting with Parents, School Management Committee and the Village Panchayat.
ii. Extension Lecture On various Challenges in Rendering Vocational Awareness and Various Opportunities of Vocations Available for Adolescents.
iii. Formation of Educational and Vocational Guidance Committee consisting of Educated People, Employed and Retired Persons.
iv. Conducted a one day workshop on Vocational awareness Programme at GSSS Makrauli Kalan, Rohtak, Haryana.
v. Visit to Different Working Places: Field Trips to Various working places like ITI, Sweet meat seller, Carpenter, Electrician, Mobile repairing.

Extension Lecture On Use of Available/IT resources in Vocational Awareness

Personal talk to students by Educational and Vocational Guidance Cell of D.I.E.T. Madina, Rohtak for Individual Assistance and Individual Guidance.

Retest conducted to test Vocational Awareness and Related Factors and Analysis

Conclusion of the Project and its Presentation.

Analysis and Interpretation of Data:

After collection of the data (Pre and post) for the present study, it was analyzed and inferences were drawn pertaining to the overall evaluation of the present project. The illustration of the inferences is made in accordance with the four major heads selected in the research design which are discussed as under:

It was found that Self-confidence

was developed and the students were boosted with new energy. The students now show curiosity and discuss about different vocations in groups and at their social setup. The inference of the data shows that level of Vocational Awareness is increased. The students after the workshop started using IT Resources and other available resources especially android phones to make themselves aware, peer group and social group about different vacancies in different departments at different places. This shows that a sense of Responsibility is also developed in the students.

The family members who were aware about limited vocations now their Level of Vocational Awareness also increased. They also take keen interest in discussions and show curiosity and discuss about different vocations. Moreover now and then they visit the Village Committee members for Suggestions and Guidance. The village committee participate' actively in EVG Cell and they initiate increasing level of Vocational awareness in Students and Parents as well.

Administration and Teachers started taking initiatives to make students aware about different vocations along with the preparation for exams. Schools also formulated an Educational and Vocational Cell to provide Educational and Vocational Guidance to students. Administrators took steps for proper use of Library Resources.

Findings of the study:

1. Before the implementation of the plan only 12% of the target group was aware of the selection process of various vocations but after the implementation of the plan 89% students responded that they are aware of selection process of different vocations.
2. Before the implementation of the plan only 14% of the target group responded that they use different sources to make themselves aware about the knowledge of different vocations but after the implementation of the plan 94% students started using different sources to make themselves aware about different vocations.
3. Before the implementation of the plan 15% students responded that they get assistance from any agency to become aware about various vocations. After implementation of the action plan 96% students agreed that they get assistance from external agency (EVG cell DIET Madina), to become aware of different vocations.
4. Before the implementation of the plan only 18% of the target group agreed that they have got Vocational Guidance facility at school but after the implementation of the plan 94% students responded that they get Vocational Guidance facility at school level.
5. Before the implementation of the plan 12% students agreed that there is provision (but limited) in the school premises to render individual assistance to increase vocational awareness but after the implementation of the plan 100% students agreed that there is provision in the school premises to render individual assistance to increase vocational awareness.
6. Before the implementation of the plan all the students stated that they never get any opportunity to participate in any workshop/guidance programme in school but after the implementation of the plan 100% students responded that they get any opportunity to participate in any workshop/guidance programme in school.
7. Before the implementation of the plan only 10% students agreed that library is used as a source to increase their vocational awareness, but after the implementation of the plan 88% students stated that that library is used as a source to increase their vocational awareness.

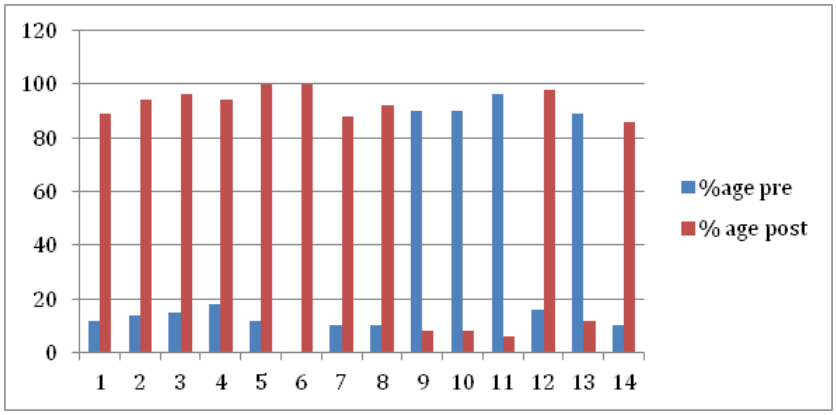

Graphical Comparison before and after the Implementation of the Action Plan

8. Before the implementation of the plan only 10% of the students stated that teachers help them in increasing their vocational awareness as they focus mainly on preparing students for exams but after the implementation of the plan 92% students said that teachers help them in increasing their vocational awareness along with preparation for exams.
9. Before the implementation of the plan 90% of the target group felt that poor vocational background of their parents is a hindrance to their vocational awareness but after the implementation of the plan 8% students consider that poor vocational background of their parents is a hindrance to their vocational awareness.
10. Before the implementation of the plan 90% of the target group felt that poor educational background of their parents is an obstacle to their vocational awareness but after the implementation of the plan 8% students consider that poor educational background of their parents is an obstacle to their vocational awareness.
11. Before the implementation of the plan 96% of the students felt that poor SES background of their parents is an obstacle to their vocational awareness but after the implementation of the plan 6% of the students consider that poor SES background of their parents is an obstacle to their vocational awareness.
12. Before the implementation of the plan 16% of the students felt that availability of limited vocations in our society does not causes an obstacle to their vocational awareness but after the implementation of the plan 98% of the students stated that availability of limited vocations in our society does not cause any obstacle to their vocational awareness.
13. Before the implementation of the plan 89% of the students felt that non availability/ availability of limited resources in our society causes an obstacle to their vocational awareness but after the implementation of the plan only 12% of the students considered limited resources in the society as any obstacle to their vocational awareness.
14. Before the implementation of the plan 10% of the students stated that they get vocational knowledge from society but after the implementation of the plan 86% of the students stated that they get vocational knowledge from society.

Discussion of the findings, Summing up and Recommendations made: The findings of the present study indicated that vocational awareness among the students is possible by using various strategies and resources at individual level, by imparting useful and related knowledge to family and community and by rendering Guidance and other strategies at school level. The educational and Vocational Guidance cell of the school and DIET Madina also proved very helpful in improving Vocational awareness among the students. Use of Mobile phone as taught and practiced in the workshop also helped a lot in this regard. Use of library resources and by making Employment News available in the school library and community library eradicated the SES hindrance to vocational awareness. The Vocational Committee of the community helped to remove the educational backwardness of parents, limited exposure of parents and rural background as obstructions in Vocational awareness.

Summing up we can say that there are several hindrances noticed in the vocational awareness of government senior secondary school students. There is not any single method, strategy and agency that can remove these obstacles. The study revealed that a combination of various strategies and agencies can impart vocational awareness among the government senior secondary school students. The topic of vocational awareness will undoubtedly occupy the national spotlight in coming years, as the complexity and rate of change in the modern workplace continue to accelerate.

Assistant Professor
D.I.E.T. Madina
Rohtak, Haryana

Compendium of Academic Courses After +2

Mathematics & Statistics

STATISTICAL SCIENCES

Introduction

Statistics is the study data and navigating common problems for drawing correct conclusions. This course is related to the filed such as areas as financial markets, sports, engineering, healthcare, marketing & sales, election campaigns, space, natural disasters, population studies, accidents, insurance, and deaths – statistics. Statistics deals with interpretation and aggregation of large complex data into simpler data. It develops from the field of probability in mathematics. Statistics also include the fields like marketing, biology, public health, sports, medicines and many others.

Courses Offered

1. Diploma in Applied Maths.
2. Diploma in Maths with computer programming, etc.
3. Bachelor of Statistics (Hons)
4. Bachelor of Mathematics (Hons)
5. Bachelor's in Statistical Methods.
6. Bachelor's in Applied Mathematics & Statistics, etc.
7. Masters in Statistics
8. Masters in Mathematics.
9. M. Tech. in Quality & Reliability and operations research.
10. Masters of Science (MS) in Quantitative Economics
11. P.G. Dip in Applied Maths (Industrial maths)

12. M. Phil (Mathematics)
13. Ph. D in Mathematics

Eligibility

10+2 pass with Maths & English.

Institutes/Universities

1. Chennai Mathematical Institute, Chennai.
2. College of Engineering, Chennai.
3. Indian Institute of Technology, Kharagpur
4. Indian Statistical Institute, Kolkata (HQ)

5. Osmania University, Hyderabad.
6. Tata Institute of Fundamental Research, Mumbai.
7. The Institute of Mathematical Sciences (IMSC), Chennai.
8. The Mehta Research Institute of Mathematics & Mathematical Physics (MRI), Allahabad.
9. University of Hyderabad, Hyderabad.
10. SavitriBai Phule Pune University

Eligibility

10+2 with biology, chemistry and physics and to qualify the entrance test conducted by Veterinary Council of India.

Institutes/Universities

1. Indian Veterinary Research Institute, Uttar Pradesh
2. College of Veterinary Sciences, CCS Haryana Agricultural University, Hisar, Haryana
3. Bombay Veterinary Science College, Mumbai
4. College of Veterinary Science & Animal Husbandry (Anand Agricultural University), Anand, Gujarat
5. Chandra Shekhar Azad University of Agriculture and Technology, Kanpur, Uttar Pradesh.
6. Jawharlal Nehru Krishi Vishwavidyalaya, Jabalpur
7. Post Graduate Institute of Veterinary & Animal Sciences (PGIVAS), Akola

Wildlife Biology

Introduction

Wildlife Biology involves field work, observing animals in their natural habitats in addition to working in labs and in diverse environments.

Courses

1. B. Sc. in Wild Life Biology
2. M. Sc. in Wild Life Biology

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry and Biology.

Colleges/Institutions

1. Institute of Environment Education and Research, Bharati Vidyapeeth (Deemed to be University), Pune, Maharashtra.
2. National Centre for Biological Sciences, Bengaluru, Karnataka.

VETERINARY SCIENCES

Introduction

Veterinary Science is a subject related to the treatment of different animals from domestic pets to farmyard animals. The course content mixes a group of topics like anatomy, animal behaviour, animal husbandry, cell biology, nutrition, physiology, genetics, epidemiology, pharmacology, infectious diseases, pathology and parasitology.

Courses

1. Bachelor of Veterinary Science & Animal Husbandry
2. Bachelor of Veterinary Science
3. Master of Veterinary Science

Zoology

Introduction

A course in Zoology analyses animals and their interactions with ecosystems. It includes the classification and study of physical characteristics, diets, behaviours of animals' species.

Courses

1. B. Sc. in Zoology
2. M. Sc. in Zoology
3. M. Phil. in Zoology
4. Ph. D. in Zoology
5. Note, the above courses are offered with the other similar subjects also.

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry and Biology.

Institutes/Universities

1. Faculty of Science, Deptt. of Zoology, BHU, Varanasi, Uttar Pradesh.
2. Dr Ambedkar Government Arts College (Autonomous), Chennai, Tamil Nadu.
3. Guru Nanak College (Autonomous) Chennai, Tamil Nadu.
4. Bangalore University, Karnataka.
5. University of Allahabad, Uttar Pradesh.
6. Sikkim University, Gangtok
7. Tezpur University, Assam.

AYURVEDA – BAMS

Introduction

Ayurveda, an ancient system of medicine evolved approximately around 600 BC in India and has many followers across the world today. Ayurveda makes use of natural – plants, herbs and minerals to produce medicines. Also included in course of Ayurveda are body massage, meditation and basic dietary plans which according to many practitioners have no side effects as it is based on non-invasive treatment practices. Ayurveda has been recognized by World Health Organization.

Eligibility

10+ 2 with Physics, Chemistry & Biology

Courses

1. Certificate course in Ayurvedic Cosmetics Duration: 1 year
2. Diploma in Ayurvedic Pharmacy (D.Pharma) Duration: 2 years
3. Bachelor of Ayurvedic Medicine & Surgery or "Ayurvedacharya" (B.A.M.S.)
4. Bachelor in Ayurvedic Pharmacy (B. Pharma) Duration: 4 years
5. Master in Ayurvedic Pharmacy (M. Pharma) Duration: 2 years
6. Master of Science in Medicinal Plants (M.Sc. in Medicinal Plants) Duration: 2 years
7. Masters in Ayurveda (MD)
8. PG Diploma in Ayurvedic Drug Standardisation Duration: 2 years

Institutes/Universities

1. All India Institute of Ayurveda, New Delhi.
2. Ayurvedic & Uunani Tibbia College & Hospital, New Delhi.
3. Faculty of Ayurveda, Institute of Medical Sciences, BHU, Varanasi, Uttar Pradesh.
4. Rajiv Gandhi Govt. Post Graduate Ayurvedic Kangra, Himachal Pradesh.
5. Govt. Akhandanand Ayurvedic College, Ahmedabad, Gujarat.
6. Govt. Ayurvedic College & Hospital, Lucknow, Uttar Pradesh.
7. Govt. Ayurvedic College & Hospital, Jagatganj, Varanasi, Uttar Pradesh.
8. National Institute of Ayurveda, Jaipur, Rajasthan.

9. College of Ayurveda of Rajasthan Ayurvedic University, Jodhpur, Rajasthan
10. Govt. Rishikul Ayurvedic College & Hospital, Hardwar, Uttarkhand.
11. J. B. Roy Govt. Ayurvedic Medical College & Hospital, Kolkata, West Bengal.

DENTAL – BDS

Introduction

Dentistry deals with teeth, gums, hard and soft tissues of the oral cavity. Today, dentistry is not restricted to

treating just tooth decays but also includes cosmetic dental procedures to improve a person's appearance. The introduction of new fields like periodontal (care of gums and the diseases), oral pathology (diagnosis for diseases that affect the mouth) and orthodontics (straightening and aligning teeth and jaws) are also part of the BDS course.

Courses

1. Bachelor of Dental Surgery (BDS)
2. Master in Dental Surgery (MS)

Eligibility

10+2 with PCB

A student needs to appear in NEET to get admission in Bachelor in Dental Surgery Course.

Institutes/Universities

1. Maulana Azad Dental College and Hospital, New Delhi
2. Faculty of Dentistry, Jamia Millia Islamia, New Delhi.
3. Govt. Dental College, Medical Campus, Rohtak
4. Govt. Dental College and Hospital, Afzalganj, Hyderabad.
5. Govt. Dental College and Hospital, Vijayawada.

HOMEOPATHY

Introduction

Homeopathy is practiced worldwide for healing, curation and therapeutic purposes. It is an allinclusive practice of treatment wherein a patient is treated while assessing all aspects of symptoms and health problems for restoration of overall health. In this unique therapeutic system of treatment, certain natural substances are diluted and used in various forms for treatment of many ailments. The courses are designed to give insight about Homeopathy medicine, its foundation, analysis, evaluation, surgery etc. and encompass both clinical and pre-clinical subjects with proper emphasis on theoretical as well as hands on practical sessions.

Courses

1. Bachelor of Homeopathic Medicine & Surgery (BHMS)
2. MD (Homeopathy)

Eligibility

For BHMS - 10+2 or equivalent exam with Physics, Chemistry and Biology.

For MD (Hom.)- B.H.M.S.

Institutes/Universities

1. JSPS Govt. Homoeopathic Medical College, Hyderabad
2. Nehru Homoeopathic Medical College and Hospital (NHMC&H) Delhi (University of Delhi)
3. Dr. Gururaju Government Homoeopathic Medical College and Hospital,, Andhra Pradesh
4. Dr. NTR University of Health Sciences Vijayawada Andhra Pradesh

5. The Tamil Nadu Dr. M.G.R. Medical University, Channai

NATUROPATHY

Introduction

Naturopathy is a science of healing through nature and relies upon the study and balancing the five basic elements of nature known as Water, Air, Earth, Fire and Aether. Yoga is combined with Naturopathy to add value to both these systems. Courses are available in both Naturopathy as well as in combination of both Naturopathy & Yoga.

Courses

1. Foundation Course in Yoga Science for Wellness (FCYScW)
2. Diploma in Yoga Science (D.Y.Sc.) for Graduates
3. B.Sc. (Yoga Science) (for 10+2 Science stream students) in the Biology.
4. Bachelor of Naturopathy & Yogic Sciences (BNYS)
5. M.D.Yoga & Naturopathy

Eligibility

Entry level - 10th

10 + 2 or equivalent with Science stream

Institutes/Universities

1. Morarji Desai National Institute of Yoga, New Delhi
2. Banaras Hindu University, Varanasi
3. Dr. NTR University of Health Sciences Vijayawada Andhra Pradesh
4. National Institute of Naturopathy, Pune
5. Govt. Yoga And Naturopathy Medical College, Chennai
6. The Tamil Nadu Dr. M.G.R. Medical University, Channai

PHARMACY

Introduction

Pharmacy is the study of drugs which includes instructions on use, selection, composition, effects and side effects of drugs. It also includes development of new drugs, ascertaining of quality standards, dispensing of drugs and improvement of existing drugs.

Courses

1. Diploma in Pharmacy
2. Bachelor's in Pharmacy
3. Master's in Pharmacy
4. Eligibility: B. Pharma
5. M. Tech (Pharm.)
6. MBA (Pharm.)
7. MS (Pharm.)
8. Ph. D. in Pharmacy

Eligibility

10+2 with science

Institutes/Universities

1. National Institute of Pharmaceutical Education and Research, Mohali
2. Jamia Hamdard, New Delhi
3. Annamalai University, Chennai
4. Department of Pharmaceutics, IIT BHU, Varanasi
5. Maharshi Dayanand University, Rohtak
6. Andhra University, Vishakhapatnam
7. National institute of Pharmaceutical Education and Research, Hyderabad
8. Delhi Institute of Pharmaceutical Sciences and Research, New Delhi

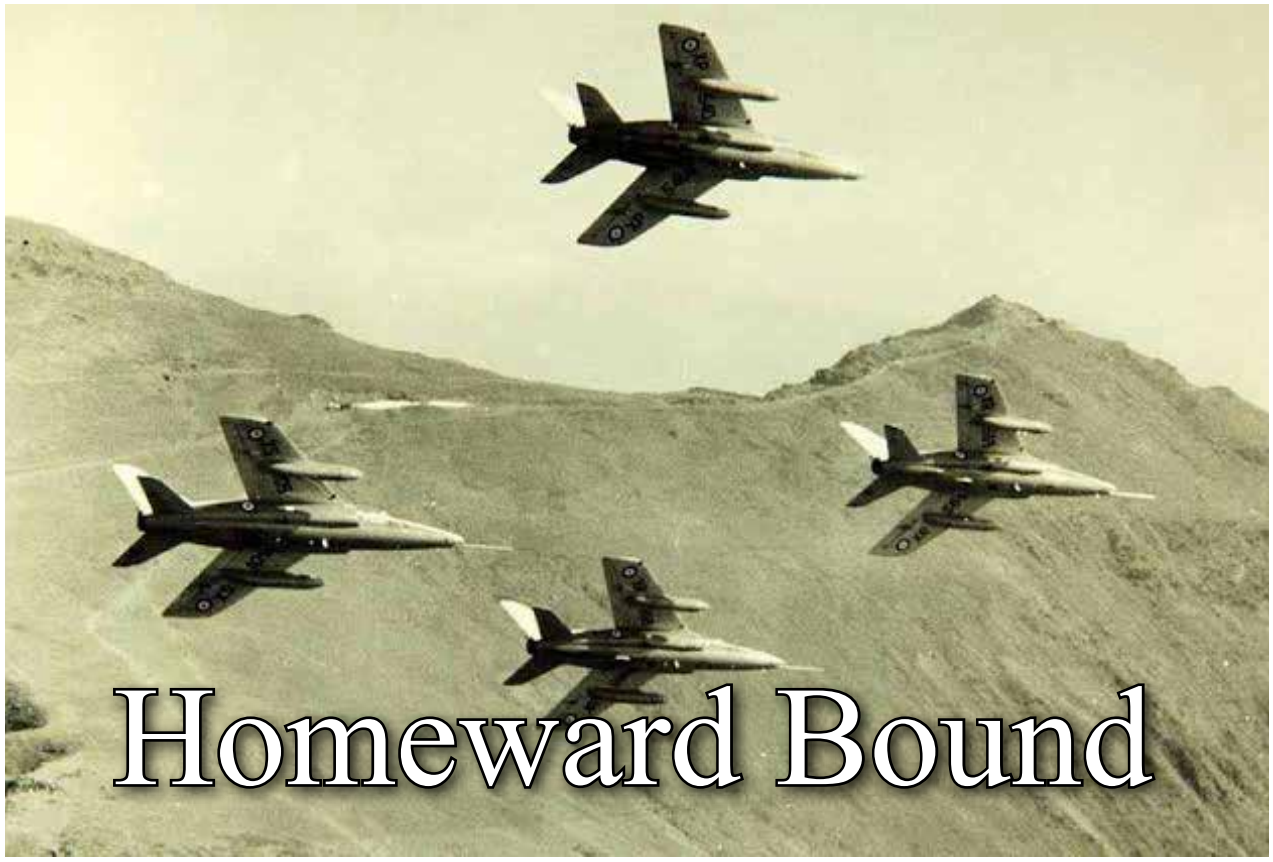

Homeward Bound

Dr. Deviyani Singh

We woke up in the dead of the night to sirens making a deafening noise. People would run helter-skelter looking for shelter with barely enough time to get indoors or into dug up bunkers. All lights had to be switched off so that the jets would not be able to see them. All bright things were camouflaged and white coloured things painted black, - even livestock goats and chickens! And then the air battles – "dog fights" would begin. When the bombs dropped in the neighbouring areas the people's houses and doors would rattle, decorations and utensils would fall off the shelves! People watched these air raids in fear – terrified that one day a bomb might be dropped on them! This was a common occurrence in erstwhile East Pakistan and now Bangladesh during the 1971 Indo-Pak war. Throughout 1970-71, Pakistan faced a civil war, where the country's eastern part was controlled by civil and defence personnel from the western part. These officials had no regard for the Bangla culture, customs, and heritage. In the advent of a civil war in East Pakistan, the civilians were subject to the merciless butchering and the savagery of General Tikka Khan. The militia engaged even in genocidal, mass murder and deportation.

My father was a Bangladeshi businessman and farmer. We had over 100 acres of land. But the bombings and subsequent fires had rendered all the crops and land useless. The civilians, Bengali military and para military had launched a guerilla war through their forces which was called the Mukti Bahini. It was national Liberation army. They blew up railway lines and bridg-

es to stop the forces of Tikka Khan to which the Pakistani army retaliated with even greater brutality. My elder brother who had just entered the last of his teens and was always a rebel had run off to be a part of them and join the fight for freedom.

I was just 12 years old but my memories are still as vivid. My Father had hardly gotten over the loss of his land and business till one day we got the news that my brother had been blown to bits by a grenade attack. They could not even find parts of his body to bring back to us in a box for burial. They had just lit a funeral pyre thereafter piling up all the body parts of the boys in a heap. My father and the rest of our family was shattered by this incident. It was just too much for him to bear that his only son had been sacrificed in such a brutal manner. Overcome with grief he immediately decided and arranged for us to migrate to India. He did not want to live in this country anymore which would always remind him of our terrible loss. He did all the paperwork and legalities required at that time. We were asked to take along only a small bag each of our most precious belongings. I went to my brother's room and took his favourite locket from his drawer and wore it around my neck, packed a few clothes and joined my weeping Mother who was so confused as to what to take and what to leave behind. My father tried reassuring her that we would return when the situation normalised but I somehow knew in my heart he had no intention of ever coming back. I could never forget how white his face had turned when he held the small urn containing my brother's ashes in his trembling hands.

We boarded one of the few local buses left in service and commenced on our journey in the night so that we won't be spotted by enemy planes. We travelled all night over rough terrain and broken roads en-route to the Indian border. On the way, we saw horrific sites of bombed-out shells of buildings. Their jagged edges pointed up as if calling out in vain for help from the grey skies and Gods. In the moonlight, we could see dead people and cattle lying scattered on the roads and the bus had to dodge or where there was no possibility of a detour to our horror the bus driver just drive over them. My father tried to shut my eyes and get me to sleep but I just couldn't stop watching in morbid fascination. It was estimated that in this period, between 300,000 and 500,000 people had died. Later the Bangladesh authorities put the figure at three million.

The air was filled with the stench of the rotting corpses and black smoke. It was as if we had stepped out into Hell itself. Confined in our homes we had not seen the gravity of the situation. I longed to get to the border and see some green land instead of the endless swamps of the Sunderban delta we were driving through. It was a very tense and tiring and we reached a thicket of mangrove forests by dawn. Then suddenly as we came out of the thicket the border became visible. We could see a high barbed wire fence that was already teeming with hordes of refugees lined up. In the lead-up to the war, there were an estimated over 10 million refugees from East Pakistan trying to get across the Indian border. Some were wounded and starving, accompanied by wailing children and frail old people. It seemed an impossible task to get across. We heard the war was coming to an end but the aftermath was the refugee problem which was probably the most horrific thing. The refugees were like dammed souls suspended in limbo with nowhere to go. The innocent orphaned and homeless children of warring parent nations.

We awaited our turn for what seemed ages. We spent the night in the

camp at the border. In the wee hours of the morning, I remember waking up to hear my Father shouting himself hoarse at the authorities - "I'm not a refugee. I am an immigrant". Finally, his pleas were heard and after routine checks, we were allowed across the border. It made it easier as my Mother was a Bengali Indian. My father, however, was a Bangladeshi Muslim. My Father thought it best to move to the bustling city of Calcutta which was my Mother's hometown. He hoped to find some work and put me in school there. My Maternal uncle was living in Calcutta with his family which was an additional reason for him to choose the city.

We boarded an overfull train to Calcutta and got off at the Howrah station. We took a rickshaw across the Howrah Bridge and I was in awe at the sights of this crowded but beautiful city. We crossed Victoria Memorial and I marvelled at its pristine whiteness, a sight for sore eyes after all the blood and gore we had encountered. As we entered the heart of the city the traffic became chaotic. Our rickshaw puller was an expert however in weaving through the murderous traffic. We finally reached our destination, my maternal uncle's house. My Grandfather had long passed away and given all his property to his only son, thinking that his daughter had been happily married off to a successful farmer across the border but she still owned half of the ancestral house.

My uncle looked shocked to see us. There had been no way of communicating our arrival to him as the bombings had cut off all the telephone lines and my father had been in such a terrible hurry to get us to safety. My uncle greeted us warmly with a smile from ear to ear. He hugged my Mother tightly exclaiming. "I'm so glad you came I have been worried sick about you all. Especially since I could not get through to your home line." He too was shaken to hear the terrible news about my brother.

My aunt came running across the courtyard of the sprawling house. She seemed tense to see us. She saw our minimal luggage and assumed we would be only visiting for some days till the war was over. But as soon as my uncle informed her we were here for good a shadow fell across her face. I thought crossing the border and being displaced from our home was the worst part but little did I know what was in store for us.

We were led to the top floor of the house which my mother owned. Since they did not think we would ever be coming back or needing the place it was in a dilapidated state. Full of dust and cobwebs and toxic mould forming on the corners of the walls. My Uncle informed us that his work kept him too busy so he could not find time to look after the place and he used it mostly as a storeroom. We dusted the place and tried to make it habitable. I opened the creaky tap which at first didn't work but then suddenly let forth a shower of rusty brown water all over my t-shirt. There were lime stains on the sink and bathroom floor where the water had dripped and the floor had clearly never been mopped. Still, I was glad to feel the water on my skin after such a long journey and I bathed and dressed quickly reached the dining table with hunger knawing at my stomach. We ate like there was no tomorrow and my aunt stared at me as I gulped down handfuls of rice and fish curry. My Fa-

ther said the first thing he wanted to do was to get me into a good school. My Uncle offered that he could join him in the family business until he found a job.

So the next day itself I was taken for an interview at the local Christian Missionary School. Since I was a bright student I cleared their entrance test with flying colors and was accepted at once. In fact, this dislocation had at least one advantage for me that I was admitted to a higher class due to the 6 months difference in the academic sessions. I was small for my class added to the fact that I was a short girl but athletic. I looked forward to this new academic session especially since it would help me take my mind off the unfortunate incidents of the past but my hopes were short-lived. I found no one was willing to make friends with me. I was constantly bullied and called a refugee. I complained to the nuns who chided the students but it didn't help much as they would follow me chanting - "refugee, refugee" all the way till I reached my home and I just chose to ignore them. When I began excelling in my class I thought they would admire me but their competitiveness and jealousy only increased. They thought they could do better than me in sports and challenged me in the field underestimating my abilities due to my slight build. This move of their backfired and the coach who was watching me immediately decided to take me on the Hockey team even though I had never played before. I took to the game like a duck takes to water and was soon chosen to be the goalie. But during the matches, the girls from behind the goalpost would begin the awful chant again and I got distracted and missed a few goals during matches. I complained to the coach and he changed my position to play - 'left in.' They were mostly Anglo Indians on the team and I was half Muslim and Hindu so I did not 'fit in' anywhere. They called me all sorts of names - half breed, Paki, mongrel, etc. and when the coach objected they took to making fun of my unusual name itself - Biriya which ironically means trust in Bengali; and my surname - Khan. They called me 'Biryani Kha' and the horrid nickname stuck.

All this torment took place and made my life miserable and to top it all my aunt was making things difficult for my Mother at home. With the prospect of our permanently staying with them, her pretences at welcoming us were wearing thin. But my mother was a brave lady; she didn't bother and said as long as her brother had no problem with it we would continue to stay in what was partly her house too. I did not dare tell my parents about my difficulties in school as I didn't want to burden them anymore. We were soon selected to play in the state-level competitions; which due to our excellent coach and team, we won.

Then one fine day when we were taken to play at the nationals in the stadium in Delhi. The opposing team had heard how i was teased by my own team and began chanting the same to demoralise me. One of the players deliberately cracked her hockey on my shin bone making me yelp out in pain and fall to the ground. The match was stopped and the referee rushed to me and tried to help me up. I got up but at that moment something inside me just snapped. I shouted at the top of my voice - "I'm not a refugee. I am an immigrant. I'm as much an Indian as any of you." The cameras focused on me and after a moment of pin-drop silence, the whole stadium began cheering for me. In spite of my injury, I went on to play and score the winning goal. I felt elated as I ran around the stadium with the Tricolor draped on my shoulders with my winning team. After that things got a bit better for me at school and I was finally accepted.

My father too started his own warehouse and since he was a keen businessman in time he made a lot of money. My Aunts behaviour too improved seeing all the new money pouring in. As I took my trophy to show it to my Father he looked into my eyes like he had read my mind and said - "Never give up. If the world doesn't give you a place you have to carve a niche for yourself through your hard work. I'm very proud of you my daughter." My eyes welled up with tears as he hugged me tight and I hugged him back. I kissed my brother's locket that I still wore around my neck. I knew though I still yearned to go back sometimes we had finally managed to make a home away from home.

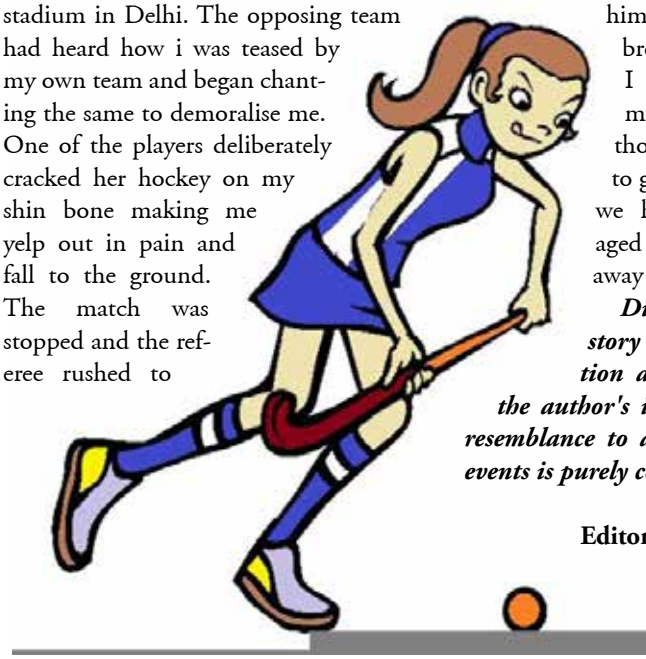

Disclaimer : This story is a work of fiction and a product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons or events is purely coincidental.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

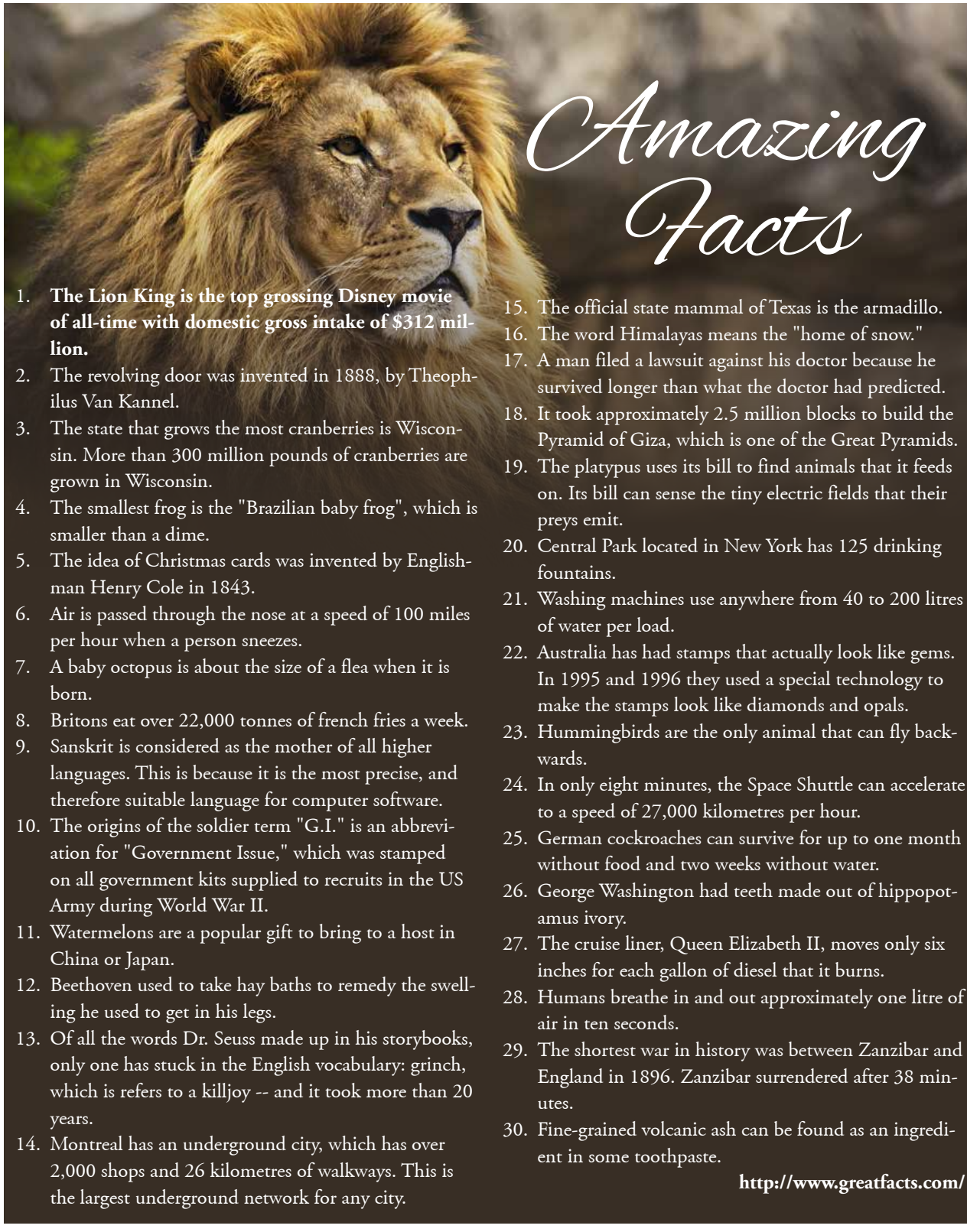

Amazing Facts

1. **The Lion King is the top grossing Disney movie of all-time with domestic gross intake of $312 million.**
2. The revolving door was invented in 1888, by Theophilus Van Kannel.
3. The state that grows the most cranberries is Wisconsin. More than 300 million pounds of cranberries are grown in Wisconsin.
4. The smallest frog is the "Brazilian baby frog", which is smaller than a dime.
5. The idea of Christmas cards was invented by Englishman Henry Cole in 1843.
6. Air is passed through the nose at a speed of 100 miles per hour when a person sneezes.
7. A baby octopus is about the size of a flea when it is born.
8. Britons eat over 22,000 tonnes of french fries a week.
9. Sanskrit is considered as the mother of all higher languages. This is because it is the most precise, and therefore suitable language for computer software.
10. The origins of the soldier term "G.I." is an abbreviation for "Government Issue," which was stamped on all government kits supplied to recruits in the US Army during World War II.
11. Watermelons are a popular gift to bring to a host in China or Japan.
12. Beethoven used to take hay baths to remedy the swelling he used to get in his legs.
13. Of all the words Dr. Seuss made up in his storybooks, only one has stuck in the English vocabulary: grinch, which is refers to a killjoy -- and it took more than 20 years.
14. Montreal has an underground city, which has over 2,000 shops and 26 kilometres of walkways. This is the largest underground network for any city.
15. The official state mammal of Texas is the armadillo.
16. The word Himalayas means the "home of snow."
17. A man filed a lawsuit against his doctor because he survived longer than what the doctor had predicted.
18. It took approximately 2.5 million blocks to build the Pyramid of Giza, which is one of the Great Pyramids.
19. The platypus uses its bill to find animals that it feeds on. Its bill can sense the tiny electric fields that their preys emit.
20. Central Park located in New York has 125 drinking fountains.
21. Washing machines use anywhere from 40 to 200 litres of water per load.
22. Australia has had stamps that actually look like gems. In 1995 and 1996 they used a special technology to make the stamps look like diamonds and opals.
23. Hummingbirds are the only animal that can fly backwards.
24. In only eight minutes, the Space Shuttle can accelerate to a speed of 27,000 kilometres per hour.
25. German cockroaches can survive for up to one month without food and two weeks without water.
26. George Washington had teeth made out of hippopotamus ivory.
27. The cruise liner, Queen Elizabeth II, moves only six inches for each gallon of diesel that it burns.
28. Humans breathe in and out approximately one litre of air in ten seconds.
29. The shortest war in history was between Zanzibar and England in 1896. Zanzibar surrendered after 38 minutes.
30. Fine-grained volcanic ash can be found as an ingredient in some toothpaste.

http://www.greatfacts.com/

General Knowledge

1. The farmer in Beatrix Potter's The Tale of the Flopsy Bunnies is Mr: McDougall; McGregor; Macdonald; or MacHinery? **McGregor**
2. Greek mythology asserts that the first woman on Earth was: Venus; Hera; Eve; or Pandora? **Pandora**
3. Which one of these is the more general name within which the other two are types: Sultana; Raisin; Currant? **Raisin**
4. Launched 2016/17, Apple Homepod, Amazon Echo, and Google Home mainly provide: Music; Gaming; Education; or Robot baby-sitting and parenting? **Music**
5. Donald Trump's May 2017 Twitter typo that became a viral conundrum was: Boobebe; Kwififi; Covfefe; or Impeecci? **Covfefe**
6. The Maris Piper is a popular famous: Light aircraft; Potato; Scottish folk dance; or Plumbing manual? **Potato**
7. Breteche, Machiolation, Murder-holes, Merlons and Hoarding are features of: Golf courses; Medieval castles; Cheese; or Wedding cakes? **Medieval castles**
8. What does the J stand for in the household cleaning 'J-cloth' (now genericized brand? **Johnson**
9. What portmanteau word (for a video diary is a form of publishing, done by millions of children (e.g., on YouTube, often unknown to teachers and parents? **Vlogging**
10. Panettone is a popular Italian: Motorcycle; Lake; Bread; or Martial art? **Bread**
11. What creature is a 'fashion' (style of repeated recitation often used in learning? **Parrot**
12. What Latin for beak is a speaking platform, from Ancient Rome's speaker Forum, decorated with the beaks of captured galleys? **Rostrum**
13. Siddhartha Gautama is simply and eponymously known as what founding religious teacher? **Buddha**
14. The pastry used in eclairs and similar cakes is: Shoo; Shew, Shoe; or Choux? **Choux**
15. What did Willie Walsh reveal as the actual cause of BA's catastrophic IT systems outage, stranding 75,000 passengers and grounding flights at 170 airports over a May holiday weekend 2017: Cyber-attack; Psychic phenomenon; Rats; or Someone pulled the plug out? **Someone pulled the plug out**
16. 'Watergate' - the scandal causing US president Nixon's resignation in 1974 - is actually a: Book; Journalist; Building complex; or Legal term for impeachment? **Building complex**
17. Tabs, Knobs, Whimsies, and Innies and Outies feature in what table-top amusement? **Jigsaw puzzles**
18. Named after its German bacteriologist inventor, what is a flat circular transparent dish used for cultivating micro-organisms? **Petri**
19. What BBC TV children's story show (1965-96 is named from a nursery rhyme, and became Cockney Rhyming slang for 'story', especially alluding to fabrications and lies? **Jackanory**
20. 'Machine Learning' and 'Decision Trees' are terms in: Dr Who; Star Trek; Landscape gardening; or Artificial Intelligence? **Artificial Intelligence**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-265-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।

शिक्षा सारथी का गतांक पढ़ा। हर अंक की तरह यह ज्ञान और सूचना की सामग्री से भरपूर दिखाई दिया। वास्तव में ही कोरोना काल में दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम वरदान बना है। प्रदेश में इस बारे जो प्रयत्न हुए उनकी झलक इस पत्रिका में देखने को मिली। शायद इन्हीं प्रयासों से ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया में हरियाणा को देश भर में तीसरे स्थान पर आने का गौरव प्राप्त हुआ। प्रमोद कुमार के लेख से पता चला कि किस प्रकार सरकारी शिक्षा तंत्र पर जन-विश्वास धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। प्रमोद कुमार दीक्षित 'मलय', नरेंद्र सिंह 'नीहार' और दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' के ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता विषयक लेख बेहद पसंद आए।

रेनू शर्मा
जेबीटी अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय नंगला गुजरान
ज़िला- फरीदाबाद, हरियाणा

आदरणीय संपादक जी,
सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का नव वर्ष का अंक प्राप्त हुआ। कुछ अंतराल के बाद इसकी प्रकाशित प्रति देखने को मिली। इससे पूर्व तो विभाग की वेबसाइट से ही इन्हें डाउनलोड करना पड़ता था। जब से मुझे इस पत्रिका की जानकारी मिली, तब से इसके सभी अंकों को डाउनलोड करके रखा हुआ है। इस अंक में प्रमोद कुमार और मनोज कौशिक के आलेख विशेष रूप से पसंद आए। 'बाल सारथी' बच्चों के लिए काफी ज्ञानवर्धक सामग्री से परिपूर्ण था। 'खेल-खेल में विज्ञान' में अभी तक पत्रिका में सौ से अधिक गतिविधियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। यह जानकर काफी अच्छा लगा। सुनील अरोरा के लेख वैज्ञानिक जानकारी से भरपूर होते हैं। सभी लेखकों को साधुवाद।

सुषमा कुमारी
कम्प्यूटर प्रशिक्षिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय राजगढ़
ज़िला- रेवाड़ी, हरियाणा

बचपन

बच्चों की दुनिया में शामिल हैं
आकाश में
पतंग की तरह उड़ती उमंगें
गर्म लिहाफ़ में दुबकी
परी की कहानियाँ
लट्टू की तरह
फिरकियाँ लेता उत्साह

वह अपनी कल्पना में
कभी होता है
परीलोक का राजकुमार
शेर के दाँत गिनने वाला
नन्हा बालक भरत
या उसे मज़ा चखाने वाला खरगोश

लेकिन कभी भी
वह अपने सपनों में
राक्षस नहीं होता।

शरद कोकास

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

दो गज की दूरी

भीड़-भाड़ से दूर रहें

श्वसन शिष्टाचार रखें

अनावश्यक यात्रा न करें

बार-बार हाथ धोएं तथा सेनिटाइज़ करें

मास्क है जरूरी

www.prharyana.gov.in @Cmohry @DiprHaryana

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114